॥ ओ३म् ॥

नीतिपुष्पावली

जिस में

नीति, सत्यव्यवहार, समाज से शोधन राजनीति के
विषय पर सरल रीति पर विद्यार्थियों के
उपकारार्थ पाठ लिखे हुए हैं॥

जिस को

मुन्शी शंकरदास वर्म्मा हैडमास्टर वरनेक्युलर स्कूल
राम नगर ज़िला गुजरांवाला के परोपकारी उरदू
ग्रन्थ गुलदस्तह तहज़ीब से ग्रन्थकर्त्ता की आज्ञा से
श्रीयुत् लाला काशीनाथ जी खत्री सिरसा
ज़िला इलाहाबाद निवासी ने सरल और
स्वच्छ हिन्दी में अनुवाद किया।

और

ग्रन्थ कर्त्ता की आज्ञानुसार

राय मुन्शी गुलाबसिंह एण्ड सन्ज़ ने छपवाई।

१९०० ई०

राय मुन्शी गुलाबसिंह ऐण्ड सन्ज़, मुफ़ीद-
आम यन्त्रालयाध्यक्ष लाहौर में छपी।

तीसरी वार १००० कापी मूल्य।)

ग्रन्थ कर्ता की भूमिका।

मैंने देश की आवश्यकतानुसार विद्यार्थियों को मज़मून अर्थात् व्याख्यान लिखने की रीति सिखलाने के विचार से यह ग्रन्थ नये ढङ्ग पर लिखा है। इस में जो लेख हैं कहीं से उद्धृत किये हुये नहीं हैं किन्तु मेरी लेखनी से लिखे हुए हैं। अपने ढङ्ग में यह पहला ही ग्रन्थ है इसकारण इसका प्रचार नित्यबढ़ता जाता है। इस में नीति धर्म पर नाना प्रकार के विषय संक्षेप रूप मे लिखे गये हैं। समाज की कुरीतों के संशोधन और रहनसहन औरसत्य व्यवहार के सुधारके विषयमेंभी लिखा गया है इससे आशा है कि विद्यार्थियोंको प्रश्नोंके लिखनेमें पूर्ण सहायता मिलेगी, मैंने इसका नाम नीति पुष्पावली रक्खा है। मैं आशा करता हूं कि इस में विद्याभिलाषी जन इस फूलों के गुच्छे को सदा हाथ में रख कर चित्त को प्रसन्न करते रहेंगे॥

इस ग्रंथ के बहुत से पाठों में ऐसे संकेत कर दिये गयेहैं कि विद्यार्थी को स्वयम् व्याख्यान लिखने की प्रेरणा हो। वह पहले नोट वा सङ्केत बनालें और फिर लिख कर अपनी योग्यता की परीक्षा करें। ग्रन्थ के अंत में ४५ प्रश्न इसी हेतु करके लिखे हैं कि वह इस को अभ्यास करने केउपरान्त उन के उत्तर लिखने की चेष्टा करें। जब प्रथम एक विषय पर मुख्य बातों के नोट न किये जावें

तो वह व्याख्या बे ढङ्गी और गड़ बड़ हो जाती है कहीं श्रेणी के अनुसार व्याख्या लिखी जाती है नम्बर देकर उनमें संक्षेप भी हो सक्ता है, और बहुत सी बातें पृथक् २ एक श्रेणी में लिखी जा सक्ती हैं। कहीं प्रथम भूमिका बांधकर लिखा जाता है कहीं बिना इसके ही लिखा जाता है। इस ग्रन्थ में व्याख्या लिखने के सब ढङ्ग दिखाये गये हैं।

शंकरदास वर्मा, हेडमास्टर वरनेक्यूलर
स्कूल रामनगर ज़िला गुजरांवाला।

॥ ओ३म् ॥

विद्या प्राप्ति

विद्या का विवर्ण--विद्या प्राप्ति की आवश्यकता--उस के लाभ प्राप्ति के द्वारा—परिणाम ॥

(१) विद्या से अभिप्राय जानना, अथवा खोज करना है अर्थात् वास्तव वस्तु पर विचार करने, प्रमाणों से सिद्ध करने शुद्ध हृदय से उचित अवसर पर जानकारी बढ़ानेको विद्या प्राप्ति कहते हैं। विद्या प्राप्ति के लिये रुचि, परिश्रम, और नीति धर्म्म की आवश्यकता है। रुचि के लिये आंतरिक उत्साह चाहिये, नीति आत्मा के रोग के लिये दवा है। इस की कितनी शाखा प्रति शाखाएँ हैं। यह पुस्तक प्रकट करके नीति धर्म्म को सिखाने के लिये है, जिस की हमारे भाइयों को बहुत आवश्यकता है ॥

(२) सुनो! कोई काम चाहे लोक सम्बन्धि हो चाहे परलोक सम्बन्धि बिना पूर्ण बुद्धिमानी के पूरा नहीं हो सक्ता। मनुष्य केवल बुद्धि और ज्ञान रखने के कारण दूसरे जीवों से बढ़ कर गिना जाता है। बुद्धि की केवल विद्या द्वारा उन्नति होती है। जिस जन में बुद्धि नहीं वह पशु के तुल्य है। बुद्धि दर्पण है जिस पर विद्या की जिला होती है। बस बुद्धि और चातुरी की वृद्धि के लिये विद्या सीखना सब मनुष्यों का धर्म्म है। प्यारो! बीते

समय की मूर्खता की दशा अब वर्तमान काल में कम पाई जाती है। इसका कारण यह है कि जबतक सुख पूर्वक रहने की रीतें नहीं जानी गई थीं तब तक मनुष्य शाक पात खाते, वर्षा या नदी का जल पीते, वृक्ष या धरती वा पहाड़ों की गुफा में रहते धरती पर सोते, वृक्षों की छाल वा पत्ते पहिनते ईंट पत्थर तीर कमान भालों से लड़ते, नङ्गे पांव चलते, वा जूतों के बदले खड़ाऊं पहिनते थे। ज्यों २ विद्या का प्रकाश फैलता गया उन्नति होती गई अधिक सुख पूर्वक रहने की रीतें मनुष्य सीखते गये। प्रथम मनुष्य झोंपड़ियों में रहते थे फिर कच्चे मकान बनाने लगे, और २ ईंट पत्थरों की पक्की हवेलियां बनाना सीख गये। सोने के लिये चार पाइयां बनाई गईं उन पर बिछौने के लिये नरम नरम मखमली बिछौने तैयार किये गये। प्रत्येक ऋतु के अनुसार रहने का सामग्री बनाई गई सुस्वादु भोजनों के पदार्थ बनाये गये। जहां जल के देशी स्रोत न थे वहां कुये खोद कर जल निकाला गया। ऊजड़ धरती को सींचने के लिये नदियों में नहरें काट कर जंगल और ऊसर धरती हरी भरी की गई। ऋतु के अनुसार नाना प्रकार के वस्त्र बनाये गये। युद्ध करने के लिये तीर भालों के बदले तोप और बन्दूकें बनाई गईं। जिन के एक बार चलाने में कई जन मारे जा सक्ते हैं, परन्तु अब ऐसी बारूद की आवश्यकता है, कि जो वैरी को कुछ घण्टों तक मूर्छित तो करदे परन्तु जान से न

मारे क्योंकि युद्धका मुख्य प्रयोजन शत्रुको पराजय करना है, न उसको नाश करना, अब नंगे पांव फिरते लाज आती है। प्रथम आप देशी जूतियां पहिनते थे अब मोजे और अङ्गरेज़ी बूट पहिनने लगे हो। धूप और वर्षा से बचने के लिये अब नाना प्रकार के रंग बिरंग के छाते तैयार हुए हैं। अभीप्राय यह कि मनुष्य जाति ने अब अपनी रहन सहनमें बहुत उन्नति की है, नहीं यह कहना चाहते हैं, कि अब समय ही उलट गया। अब पूरब से उन्नति आरम्भ हुई है, किसी काल में भारत वर्षने भी बड़ी उन्नति की थी ; परन्तु अब परदेशियों के लड़ाई, उपद्रव शान्ति भंग और अनबनाव । के झगड़ों के कारण फिर भारत वर्ष अविद्या की नदीमें डूब गया था अङ्गरेजों ने उसको उद्धार किया। उन्हों ने प्रथम देश में शान्ति फैलाई, फिर विद्या गुण सिखाने के लिये पाठशालायें स्थापित कीं, जिस से थोड़े ही काल में देश की दशा बहुत कुछ सुधर गई। परन्तु अभी बहुत कुछ उन्नति होना बाकी है। इसका मैदान अभी बहुत बड़ा लम्बा चौड़ा है, जिस में से केवल थोड़ी ही दूर हम चले है। दूसरे जीवों से हम बढ़ कर इस कारण है कि हमें ईश्वर ने उन्नति करने की शक्ति दी है, उन्हें नहीं। काक जैसे प्रथम काली वरदी पहिने हुए कांव कांव करता था अब भी करता है, पक्षी जैसे पहिले चोच से चुगा करते और घांस २ घांसले बनाते थे अब भी बनाते हैं, सब पशु पक्षियों की यही दशा है वह उन्नति करने में असमर्थ

है. क्योंकि उनको मनुष्य के समान बुद्धि नहीं जिस से वह विद्या प्राप्त कर सकें ईश्वर ने हम को विचार करने और भले बुरे की पहचान करने की शक्ति दी है इस से हम दूसरों को शिक्षा कर सक्ते हैं, किसी विषय पर विचार कर उत्तम फल निकाल सक्ते है। बुद्धि की वृद्धि करना उस से लाभ उठाना, मूर्खता के अंधेरे को विद्या के प्रकाश में मिटाना हमारा कर्तव्य है, हमको उचित कि परिश्रम करके विद्या सीखें, इससे ही मनुष्य की शोभा है। हमें ऐसी मेहनत करना योग्य है कि विद्या का सूर्य्य जो अभी उदय हुआ है ठीक स्थान पर आकर धीरे २ ऊंचे चढ़े। जिस प्रकार दो ठोस वस्तुओं के रगड़ने से शब्द और अग्नि पैदा होती है उसी प्रकार विद्या और बुद्धि के मेल से ज्ञान का प्रकाश होता है। उससे मनुष्य के हृदय का अंधकार मिटता है। एक बुद्धिमान का वचन है कि ईश्वर बिना विद्या के नहीं जाना जाता। विद्या विहीन जन बिना दीपक के मंदिर, बिना पत्तों के वृक्ष वा बिना जल के कूप के समान है॥

(३) विद्या बड़ा बल है जो लोक परलोक दोनों में सहायक होती है। वह एक ऐसा सदा का धन है जो हृदय और सिर में रक्षित रहता है जिसको न चोर चुरा सक्ता है, न लुटेरा लूट सक्ता है। वह अमृत के तुल्य उपकारी है। वह सब युगों के प्रवीण पुरुषों के नाम और सुयश को चिरस्थायी बना देता है। भारतवर्ष में मनु, व्यास, कालिदास आदि। ईरान में फरदोसी

अफलातूनी, मार्टी, आदि, यूरप में सुकरात, बकरात, न्यूटन, बेकन शेक्सपियर आदि ऐसे पुरुष हुऐ हैं, जिनके नाम की बड़ी प्रतिष्ठा होती है। यदि कोई जन रुपये में किरोड़ पति भी हो जावे। तोभी वह बिना कोई श्रेष्ट गुण के ऐसा सुयश नहीं प्राप्त कर सक्ता! माना कि जिस नगर और देशमें वह धनिक उत्पन्न हुआ होगा मृत्यु होने के कुछ समय उपरांत स्मरण किया जावेगा परन्तु फिर किसी को क्या ज़रूर है कि उसका नाम ले वा स्मरण करे, जिन के पास विद्या का कोष है उन का नाम सब की ज़बान पर रहता है, यद्यपि उन का जीवन दुःख और कठिनाई में भरा रहा हो। यदि अपने नाम के लिये कोई स्मारक चिन्ह भी बना जावे तो भी वह थोड़े काल में मिट जाता है। परन्तु इन विद्वान् पुरुषों के स्मारक चिन्ह ऐसे दृढ़ बने हुए,हैं कि उन को कोई बराबरी नहीं कर सक्ता। जब तक सूर्य चन्द्रमा है उन के नाम संसार में बने रहेंगे जब तक वह सजीव रहे लोग उनके दर्शन, को आते रहे। विचारने से सिद्ध होता है कि जहां धनिक को अपने धन के बल से सफलता नहीं होती वहां विद्वान् अपनी विद्या से प्राप्त कर लेता है। विद्वान् जहां कहीं जाता है अपनी विद्या के बल से आदर सत्कार करा लेता है। विद्वानों को बहुधा अपनी विद्या से ऐसी दृढता प्राप्त हो जाती है कि बहुधा ऐसी महा कठिन से कठिन कामों को पूरा करके दिखा देते हैं। विद्या के बल से मनुष्य ने समुद्र छान डाले जिन सिरजन बनो

में किसी की पहुंच न थी सो पहुंच गये, बर्फ से ढके पर्वतों की चोटियों पर जा डंका बजाया, भूगोल के नकशे उतार लिये, आकाश के तारा गण और सूर्य के भेद जान लिये, वृक्ष बेलो पशु, पक्षी, कीड़े, मकोड़े धरती की धातों के विषय जानकारी को बढ़ाया, अग्नि, वायु, जल भाफ को अपने आधीन करके उन को अपने सुखभोग के कामों में लगाया, । अग्नि-बोट रेल, तार, प्रेस, दूरदर्शक, सूक्ष्म दर्शक यंत्र आदि निकाले जिस से उनके सुख धन बल की वृद्धि हुई, सभ्यता के गुण फैले, शत्रुओं को भय हुए, मेल और परस्पर व्यवहार प्रीति बढ़ी, व्यर्थ रोक टूटी, विद्या एक ऐसा बड़ा उपकारी यंत्र है कि जिधर उसको लेकर जावो वहां भाग्यमानी और सुफलता अनायास आकर विद्यमान होती हैं। विद्या के बल से धन सामर्थ, प्रतिष्ठा सब मिलती है, वही मनुष्य को दृढ़ सर्व प्रिय और साहसी बनाता है। इस के प्राप्ति के लिये जितना अधिक प्रयत्न करो उतना ही लाभ है। यद्यपि इसमें बहुत कठिनाइयां और विघ्न होते हैं, परन्तु जिस को उसका स्वाद पड जाता है वह उन से कभी नहीं डरता और अंत में सुफलता प्राप्त करता है। कठिनाइयां सहन करने पर उसको फिर सरलता प्राप्त होजाती है।

(४) विद्या प्राप्ति के द्वारा जो इस काल में सब अमीर गरीब और सब जाति के लोग बिना रोक टोक मिले हुए हैं, कभी पहिले नहीं थे। छाप से सब उत्तम अक्षरों मे लिखी

हुई बहुत मूल्य पर पुस्तकें मिल सक्ती हैं। सरकार की कृपा से अब सब प्रकार की विद्या गुण सीखने के लिये पाठशालायें खुली हुई हैं, जिसकी इच्छा हो उनसे लाभ उठावे। योग्यतानुसार छात्र वृत्ति भी दी जाती है। पहिले समय में विद्या प्राप्ति के लिये कोई जन देश विदेश जाते, भिक्षा मांग कर निर्वाह करते और बहुत काल तक गुरुओं की सेवा करते, तब कुछ लिखना पढ़ना आता था, परन्तु ईश्वर का धन्यवाद है कि वह सब कठिनाइयां मिट गईं व उनका बहुत बड़ा भार दूर कर दिया गया। अब विद्या के चरचे केवल बड़े नगर और कसबों में ही नहीं है, किन्तु ग्रामों तक में है। जो जन अभाग से इस समय में विद्या न सीखेगा पछतावेगा। परन्तु समय निकल जाने पर फिर पछताने से क्या होगा। देखो, जिस समय को बालक खेल कूद में व्यर्थ गंवाते हैं वही मन लगा कर पढ़ने का है। जो बालक होनहार होते हैं वह विद्यार्थी होकर विद्या गुण सीखते हैं॥

(५) हे प्रिय बालको, विद्योपार्जन करने में पूरी रुचि करो, विद्वानों का सत्कार पूजन करना तुम्हारा कर्तव्य है। जो महाशय यूरप से विद्या कला कौशलता में प्रवीण होकर आते हैं, इसके बदले कि उनको बिरादरी से निकाल वा ग्लानि करो उनका आदर करो और हिम्मत बढ़ावो, उनको अपने देश का गौरव समझो। जाति के बखेड़े से तुम्हें कुछ प्रयोजन नहीं, वह

न केवल समाज की उन्नति में बाधक हैं, किन्तु अलग अलगों में भी। तुम्हें उचित नहीं, कि मत मतान्तरों के झगड़े में फंस कर स्वजातीय उन्नति को न करो, किन्तु तन मन से लगकर इस में प्रयत्न करो! अपने जीवन के पुरुषार्थ को पूरा करो, उच्च शिक्षा प्राप्त करके देशोन्नति करो। यह कुछ आवश्यक नहीं कि सरकार के केवल आश्रित होकर नौकरीके भरोसे रहो, नहीं अपने पुरुषों के उद्यम से उन्नति करो, दूसरे प्रकार की कला कौशलता सीखो। यह मूर्खों का काम है कि थोड़ा सा पढ़ कर अपने को सर्वज्ञ समझने लगो, किन्तु ऐसा प्रयत्न करो कि तुम्हारे प्रताप से देश में मूर्खता की अपकीर्ति मिटे और वह सभ्यता में इङ्गलैंड के समान हो जावे। यदि हमारा उपदेश मानो तो उच्च शिक्षा प्राप्त करो, देशी कारीगरी और गुणों की उन्नति दो, यदि विलायत जा सको वहां गुण सीखने को जाके वहां की नई २ विद्या और कला कौशलता सीख कर अपने देश में उनका प्रचार बढ़ाओ, हमारा आशीर्वाद है कि यदि तुम्हारे ऐसे उत्तम विचार हैं तो पूरे होवें, ईश्वर तुम्हारे साहस को बढ़ावे। ओं स्वस्तिः स्वस्तिः स्वस्तिः

लड़कियों की शिक्षा।

(१) कन्याओं को शिक्षा देना अवश्य है, (२) इसके विरोधियों के अपवाद, (३) उनके प्रत्युत्तर, (४) एक योग्य देवी जी के व्याख्यान का संक्षेप।

पठन पाठन के बड़े २ लाभ सब पर विदित हैं, उन के वर्णन की आवश्यकता नहीं। जैसा वह लड़कों के लिये गुणकारी है वैसेही लड़कियों के लिये भी है, किन्तु उससे भी अधिक क्योंकि पुरुष तो स्वतंत्र हैं, सब स्थानोंमें जाते आते हैं। एक दूसरे से व्यवहार करते हैं, उनको सब प्रकार के लोगों से बर्ताव करना पड़ता है, परन्तु यह विचारी घर की चार दीवारों के अंदर रहती है. यदि उनको किसी का संग है तो अपने ही समान मूर्ख स्त्रियों का है. पुरुष उनको अज्ञानी समझ कर किसी बातमें उनसे सम्मति नहीं करते केवल भोजन बनाने आदि के और कोई चरचा उनसे नहीं करते, सेवकों से अधिक उनका आदर नहीं, कोई कोई पुरुष तो उनको पांव की जूती से बढ़कर नहीं मानते कि जब चाहा उसको उतार कर फेंक दिया। दूसरे उनको अपनी अर्धांङ्गी कहते हैं, परन्तु उन से ऐसा बर्ताव नहीं करते जहां तनिक वह सामने बोली कि लगे उससे अनीत करने. जब हमने जान बूझ कर उनको मूर्ख रक्खा है तो उन से आदर सतकार की आशा करना व्यर्थ है। यूरपियन लोगों ने इस विषय में हमारी कम समझ को हम पर यथावत प्रगट कर दिया है। और यह भली भांति दिखा दिया है कि सभ्यता के गुणों का प्रचार होना इन्हीं स्त्रियों पर निर्भर है। उन लोगों की स्त्रियां विद्या के प्रताप से कैसी उच्च श्रेणी को पहुंची हुई हैं। तुम भी लड़कियों को शिक्षा दो और यूरप

वालों के समान बनो । जब यह माता पाती हैं तो बात २ में अपनी सन्तानों को ज्ञान समझ सिखाती हैं, खेलों तक में बुद्धि का उपदेश करती हैं । यही कारण है कि यूरप विद्या और बल में बराबर उन्नति करता जाता है जिससे वह नाना प्रकार के गुण कारीगरी, हुनरों का एक बड़ा भारी कोष हो गया । जिससे धनसे भरगया । एक हम हैं जो अपने मुखसे अपने को अर्ध पशु कहते हैं और यह भी अब कुछ पढ़ हीं नहीं तो पूरे ही पशु है। हमारे देश का धन दूसरे देशों को बहा चला जाता है, हम उसके रोकने को कोई यत्न नहीं करते । मानो हम अब तक दूर दर्शिता, लज्जा का अभिप्राय ही नहीं समझते विदेशियों से पिटते २ ढीठ हो गये हैं, दरिद्र ने हमको भली भांति आधीन कर दिया है, आलसी इतने होगये हैं कि कुछ नहीं करते बनता, गिरे पड़े हैं कि कोई आवे और मुखमें ग्रास डाल जाये । भाग्य के भरोसे हाथपर हाथ रक्खे बैठ रहते हैं कि आकाश से खजाना आ जावे हमें हाथ पांव न हिलाना पड़े । निकम्मे बैठे हुए कहानियां गढ़ा करते हैं । यों तो कहने को हम नाम और प्रतिष्ठा के लिये मरे जाते हैं, अपनी लड़कियों के दहेज में चांदी मानिक आभूषण देते हैं कि देख कर लोग वाह २ करें परन्तु सच्चा दृढ़ आभूषण विद्या और गुण जो है उसको नहीं देते । इस ऊपरी बनावट ने हमारे देश का सत्यानाश कर रक्खा है । हममें सच्ची लाज और दूर दर्शिता नाम मात्र को भी नहीं,

रहो। यदि कोई सत पुरुष सच्चा उपदेश करता है तो मूर्ख उसको नास्तिक और म्लेछ कहने लगते हैं। परन्तु करने वाले को चाहिये कि उनकी बक बक पर तनिक ध्यान न दे और तुरन्त काम पूरा होने पर न घबरावे वह किसी पर अपना अह-सान जताने को यह न करे किन्तु देश भलाई के अभिप्राय से करे। हे महाशयो तनिक विचार करो यह कौन न्याय है कि तुम तो पढ़ो और लड़कियों को जो तुम्हारे समान हैं न पढ़ावो यह स्वार्थ परता पन नहीं है तो और क्या है॥

लड़कों की शिक्षा का भी अभी यथावत प्रचार नहीं हुआ लड़कियों के पढ़ाने का तो कहीं नाम नहीं है, यद्यपि यही सब सुधार की मूल है। बालक उत्पन्न होने से छः सात वर्ष तक केवल माता के पास रहता है, बस जैसी मूर्ख और अज्ञानी वह आप स्वयम् होती है, वैसा ही वह बालक भी उस को देखा देखी हो जाता है। ऐसी स्त्रियां भी हैं,जो बालकों को गालियां देती हैं झूठ बोलती हैं व्यर्थ बकवाद लगाये रहती हैं, बात २ पर रोती वा हंसती है, आप सौगन्ध खाती रहती है और दूसरों को खिलाती रहती हैं, बालकों को बे कारण झिड़कती मारती रहती हैं लड़ती हैं झगड़ती है, किसी की वस्तु उससे बिना पूछे उठा लेती हैं। लड़के माता के ऐसे व्यवहार देख कर आप भी वैसाही करने लगते हैं, वह उन का स्वभाव पड़ जाता है फिर वह उसको अवगुण नहीं समझते। यदि माता सुशिक्षित होती

तो क्या यह सम्भव न था कि बालक में उत्तम प्रकृति और स्वभाव पड़ते । हम नहीं समझते कि स्त्रीशिक्षा की ओर लोगों का कम ध्यान क्यों है। हमारे धर्म में भी स्त्री पुरुष दोनों को विद्योपार्जन के लिये आज्ञा है ।

(२) कोई २ जन कहते हैं कि कन्याओं को पढ़ावेंगे तो वह निर्लज्ज हो जावेंगी, अंगरेज़ों की स्त्रियों के समान व परदे फिरा करेंगी । कोई २ कहते हैं कि उनके स्वभाव ही खोटे होते हैं उनमें बुद्धि नहीं होती, कोई कहते हैं कि हमारे देश में स्त्री शिक्षा योग्य पुस्तकें नहीं हैं, उनको पढ़ाकर कुछ हमें नोकरी नहीं कराना, वह पढ़ेंगी तो सुन्दर वस्त्र के पहनने की अभिलाषी हो जावेंगी, काम अपने हाथ से न करेंगी, गृहस्थ के धर्मों में मन न लगेगा ॥

(३) ऐ प्यारो ! यदि स्त्रियां लिख पढ़ कर सभ्य और समझदार हो जावगी तब उनको घर के अंदर बंदी रखना अवश्य न रहेगा । जब वह अपने धर्मों को भली भांति समझ लेंगी तो उनसे कोई अधर्म होने का भय रखना उचित नहीं । क्या यूरोपियन स्त्रियों का स्वतन्त्रता के साथ चलना फिरना प्रतिष्ठा के विरुद्ध है । एक देशी पवित्र स्त्री का वचन है कि हम सिवाय अपने पति के सब पुरुषको पिता वा भाईके समान मानती हैं । इस पतिव्रत का व्यवाहार अब तक वह जैसे ऐसा ही रहा । वह बराबर पुरुषों के साथ ईश्वर उपासना में शामिल होती और उचित

अवसरों पर सभा में बोलती थी। भला क्या इसमें लज्जा नहीं है कि जबकोई मरे तो स्त्रियां खुला खुली रोवें चिल्लावें, नङ्गे बदन पीटें, जब कहीं विवाह हो तो पहिले बड़े को अनुचित सिठनियां और गालियां दें, कोई २ ऐसी हुई हैं जो पति से लड़ कर बाज़ार में बैठगई हैं। वा किसीने सास,ननन्द देवरानी, जिठानी से झगड़ा करके पुरुषों का मुंह काला किया वा कोई लाजवंती हुई तो डूब कर मर गई। यदि कहो कि स्त्रियों की समझ मोटी होती है,तो यह भी ठीक नहीं अब तक ऐसी योग्य चतुर हैं जो राज प्रबंध तक कर लेती हैं,। भूपाल की बेगम और राज राजेश्वरी कौन हैं। बङ्गाल और महाराष्ट्र में कई विख्यात स्त्रियां हैं। परन्तु अभी उनकी संख्या बहुत ही कम है। योरप की ओर देखो जहां बहुधा सबही स्त्रियां लिखी पढ़ी होती हैं और सब कामों में पुरुषोंको सहायता देती है,कोई काम ऐसा नहीं है जिसको स्त्रियां न कर सकें जो उन को सिखावो सीख लेती हैं। जैसी बुद्धि पुरुषों में होती है वैसी स्त्रियों में भी होती है। हम व्यर्थ सन्देह करके उनकी बुद्धि को भ्रष्ट कहते हैं॥ हमने कभी उनको पढ़ाने तक का यत्न नहीं किया, इस कारण जो पुस्तकें लिखीं उनकी निन्दा में लिखीं, समझ से उलटी कहानियां जो घड़ी उनकी हजो में ही कीं। उनपर व्यर्थ विश्वास घात और कपट की तोहमत लगाई। यदि स्त्रियों को सामर्थ होती तो यह पुरुषों की कलई खोला करतीं। सिंह के समान

भलीभांति उत्तर देतीं, कि जिस चित्र में सिंह मनुष्य के नीचे दबा हुआ बनाया गया है, उसका बनाने वाला मनुष्य है न सिंह और अपने अधिकार पूरे २ चाहतीं, जिससे अब तक खाली रक्खी गई हैं। अब देश हितैषी सुजनों ने उनकी शिक्षा के लिये बीसों पुस्तकें लिख ली हैं, और लिखते जाते हैं। निस्सन्देह यह भय अवश्य है कि वह शिक्षित हो जावेंगी तो तुम्हारी बुद्धि भले जान लेंगी। पढ़ कर नौकरी करना ज़रूर नहीं है, घर का काम सम्भालेंगी आमदनी और खरच का लेखा रक्खेंगी, जब अवकाश पावेंगी तो गाने खाने, सोने रोने हंसने, व्यर्थ बकने के बदले पुस्तक पढ़ कर अपना मन प्रसन्न करती रहेंगी सन्तान को शिक्षा करेंगी। यदि पसन्द योग्य नौकरी भी प्रतिष्ठा सहित होगी तो उसका भी कोई डर नहीं। देखो अमरीका में बहुधा स्त्रियां लिखक, वकील डाकटर का न्याय कर्ता का काम करने लगी हैं। इसी प्रकार योरप में भी होने लगा है, इसमें सन्देह नहीं जहां सुशिक्षित स्त्रियां काम करेंगी वहां सब ढङ्ग से मकान वस्त्र पात्रादि की पवित्रता पर पूरा ध्यान रहेगा। यद्यपि यह कहने सुनने में छोटी बात जान पड़ती है परन्तु आरोग्यता रखने में यह परम सहायक है, कोई २ जन कहते हैं, कि सुन्दर वस्त्र पहनने के व्यसन से स्त्रियां आलसी हो जाती हैं, परन्तु इस का कोई प्रमाण नहीं, यदि ऐसा होता तो योरप में सब काम बन्द हो जाते और धन धान्य से पूरित होने के बदले सब दरिद्र ग्रसित होते, हां बुद्धिमानी से ऐसी सु-

स्त्रियां निकाली गई हैं कि व्यर्थ परिश्रम करने का बोझ घट जावे। यह नहीं है कि मेहनत से जी चुराया जावे। इनको क्या पढ़ाना न चाहिये, अपनी देशी भाषा का लिखना पढ़ना, लेखा नीति और स्वधर्म, कोई कारीगरी। चिट्ठी लिखने पढ़ने में दूसरे की सहायता की ज़रूरत न रहे, जिससे अपने गृहस्थ का भेद दूसरे पर विदित न हो और वह अपनी देशी पुस्तकें और समाचार पत्र पढ़ सकें, अपना धर्म कर्म समझलें। सुशिक्षित कन्या का कभी मूर्ख पुरुष के साथ विवाह न होना चाहिये।

(४) अन्त में हम कुछ बातें एक उत्तम व्याख्यान से जिस को एक सुशिक्षिता स्त्री ने दिसम्बर १८-६ को बम्बई में स्त्री शिक्षा के विषय दिया था, यहां उद्धृत करते हैं। वह यह है यदि आप दृष्टि उठाकर अपने चारों ओर देखें तो आप को प्रत्येक के व्यवहार में कुछ दोष दिखाई पड़ेंगे, परन्तु यदि आप अपने ही गरहस्थान में मुंह डाल कर देखें तो आप जानेंगे कि हमारे ही घर में बहुत काम ऐसे हैं जिनमें सुधार होना अत्यन्तावश्यक है। पुरुषों में शिक्षा के प्रचार होने से उन में और स्त्रियों के बीच अनमेल का गढ़ा बहुत अधिक बढ़ गया है, जिस को पाटना उन्हीं का काम है जो गृहस्थी के सुख और शान्ती के अभिलाषी हैं। हे पुरुषो उठो कमर बांधो, और स्त्रियों को पढ़ावो फिर देखो बात की बातमें घरेलू लड़ाई झगड़े फूट वैर कहां उड़ जाते हैं। प्राचीन ग्रन्थों को देखो लीलावती, मैत्री, गारगी, सीता,

द्रौपदी के जीवन चरित्र पढ़ो और मन को प्रबोध कराओ, कि जो मैं निवेदन करता हूं व्यर्थ और असत्य ही नहीं है। यदि पुराने ढङ्ग के आदमी इस में बाधक हों तो क्या तुम्हें उचित है कि काल चक्र की गति को ध्यान से न देखो, संसार में चमत्कार हो रहे हैं उनसे आंख मींच लो। ए प्यारो, तुम इस धर्मवती के उपदेश पर कान दो स्त्रियों को शिक्षा देने की तन मन से प्रयत्न करो फिर देश से मूर्खता आप मिट जावेगी।

जब मूर्खता मिट जावेगी तो सब ईश्वरी कृपा देश पर अनायास होने लगेगी। फिर हम भी नई २ युक्तियां निकालने लगेंगे, देश के धन को नष्ट होने से रोक लेंगे वह जो अब हमको अर्ध जङ्गली कहते हैं स्वयम् सभ्य और ज्ञानवान् कहने लगेंगे, धन्यवाद है कि सरकार की भी स्त्री शिक्षा की ओर ध्यान हुआ है,। परन्तु उसमें यथावत सफलता होने में अभी बहुत समय चाहिये। कारण यह है कि अभी न अच्छी पढ़ाने वाली मिलती हैं और न हमारे भाइयों को इस ओर पूरा ध्यान है, हम बड़ी नम्रता से उन महाशयों से निवेदन करते हैं कि आप इस शुभ कार्य्य में अपनी दयालु सरकार को पूरी २ सहायता करें, यह सब आप के ही लाभ के अर्थ है॥

———

पुस्तकों और समाचार पत्रों का पढ़ना

(१) मनुष्य का वर्णन । (२) योरप में प्रकाश का फैलना । (३) बुद्धिमान कैसी पुस्तकें पढ़ते हैं। (४) विद्या अनन्त है। (५) समाचार पत्र के पढ़ने के लाभ ॥

--

(१) जहां तक हमारी समझ है, जहां तक हमारी दृष्टि पहुंचती है, हम मनुष्य जीवन को एक ऐसा अमूल्यरत्न पाते हैं जिसके समान समस्त सृष्टि में दूसरी वस्तु नहीं है। जिस प्रकार मोती का बहुमूल्य होने उसकी चमक और आब पर निर्भर रहता है ऐसेही मनुष्य भी उतना ही आदर सत्कार के योग्य होता है जितना उसमें गुण और विद्या होती है। सब से अधिक वह वस्तु सुधार और परिश्रम चाहती है, जो अधिक योग्यता रखती है. मनुष्य अनन्त बुद्धि प्रवीणता की योग्यता रखता है, इस कारण सृष्टि में और कोई ऐसा नहीं जो उसके समान शिक्षा की आवश्यकता रखता, किन्तु मनुष्य कभी ऐसी दशा को प्राप्त नहीं होसक्ता कि उसमें वह आगे न बढ सके ॥

(२) यह तो हम भी जानते हैं कि पश्चिमी महाद्वीप (योरप) के निवासियों ने विद्या और ज्ञान कौसलता

कितनी अधिक उन्नति की है। उन्नति का सूर्य ऐसा चमक रहा है कि चकाचौंध लगती है, दिन प्रति दिन उसका प्रकाश बढ़ता जाता है। यद्यपि हमारे देश पर उसकी किरणें आने लगी हैं तौ भी अज्ञान का बादल उसपर से अभी नहीं हटा, हमें उस समय तक इस प्रकाश से लाभ होने की आशा नहीं जब तक कि हम योरप वालों के पद पर पद न रक्खें। योरप में ऐसी सभ्यता कहां से आई और क्योंकर आ रही है. वहां वालों के बल और वैभव का डङ्का संसार में क्यों बज रहा है। बड़े २ बलवान और समर्थवान बादशाहों ने क्यों उनके सामने आंखें नीची कर लीं। ठहरो हम तुम्हें बताते हैं॥

(३) सुना कभी तुम ने किसी अङ्गरेज के नित्य व्यवहार को देखा है कि वह किस रीति करके अपना समय लगाता है, उन्हों ने सब कामों के लिये समय बांट रक्खा है। जहां जीवन के दूसरे काम करते हैं वहां पुस्तक और समाचार पत्रों के पढ़नेका समय भी नियत है। जिससे उन की विज्ञता नित्य बढ़ती जाती है। वहां तुम्हारे समान व्यर्थ कहानियों को नहीं पढ़ते क्योंकि वह जानते हैं कि उनका बुरा प्रभाव चित्त पर होता है. समय व्यर्थ जाता है। वह सदा लाभकारी पुस्तकों को पढ़ते हैं। यह बतलाना कि कौन २ पुस्तकें लाभकारी हैं कठिन है। मेरी समझ में वह सब पुस्तकें जो गणित, ज्ञान समझ नीति सिखाती हैं पढ़ने योग्य हैं॥

(४) और यह भी याद रक्खो, विद्या अथाह और अगम्य है। उसको थाह लेना मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर है। तुम तो कदाचित् समझते होगे कि चिट्ठी लिख पढ़ लेना, लेखा लगा लेना, साधारण साहित्य, रेखा गणित, बीज गणित, भूगोल, इतिहास, पदार्थ विद्या आदि का ज्ञान लेना बस जो तुमने गुरु से पढ़ा है यही विद्या है नहीं नहीं, यह तो उस अगम्य समुद्र की एक बूंद के बराबर भी नहीं है। और यह भी नहीं है कि जो तुमने पढ़ा है बस वही तुम्हारे जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने को बहुत है। देखो न्यूटन ने जो अङ्कों में बहुत विस्तार निकाले और खोजने वाला हुआ है, ऐसा बड़ा विद्वान् होने पर भी कहा कि मेरी सब जानकारी उस अगम्य विद्या के सामने ऐसी है जैसा कोई बालक समुद्र के किनारे पर खड़ा हुआ दो एक चमकीली सिपियां बीन ले और उस अथाह जल के अन्दर न जानता हो कि क्या क्या चमत्कार है। जहां इतने बड़े विद्वान् के यह वचन हैं वहां तुम किस गिनती में हो परन्तु तो भी वह भी तुम्हारे समान कभी विद्यार्थी रहा होगा और इसी प्रकार सब होते हैं, जितने बड़े लोग विद्या में प्रसिद्ध हुए हैं उन्होंने मामूली गुरु से वह प्राप्त नहीं की, किन्तु ऐसे गुरु से प्राप्त की जो बिना कुछ वेतन लिये यावज्जीवन तुम्हारे साथ रहता है, वह पठन की बान है। बेकन ने कहा है जहां सुन्दर हस्ताक्षर और उत्तम

रीति में पढ़ने से सुयश और गणित से मन की शुद्धि और इति-हास में दूसरों का अनुभव हाथ लगते हैं और भूगोल से संसार का वर्णन जाना जाता है वहां पुस्तकावलोकन से सब प्राप्त हो जाता है। आरनाट साहब ने कहा मैं पुस्तकों के द्वारा से मध्य धरती के ध्रुव तक और आदि से अन्त तक का वर्णन जानता हूं बड़े २ फिलासोफर मुझे उन्नति की बातें बताते हैं, और अपनी कविता सुनाते हैं उत्तम बोलने वाले मेरे सामने अपने व्याख्यान कर रहे हैं अभिप्राय यह कि यदि पुस्तकावलोकन का व्यसन लग जावे तो फिर यह सब कुछ सुलभ है। जरमनों के महाराज विलियम ने एक बार कहा था मैं सब से अधिक एक पाठशाला के विद्यार्थी पर भरोसा कर सका हूं मैं उसको आदर का पात्र मानता हूं क्योंकि मैं यह नहीं समझता कि यह बड़े होने पर कौन २ सी विद्या और गुण सीख कर प्रवीण हो जावेगा उसमें योग्यता मौजूद है जो तुरन्त काम में लाई जा सकी है॥

(५) समाचार पत्रों का पढ़ना सब से अधिक गुणकारी है, बस जिस को नाना प्रकार की विद्या और गुण और उनकी नई २ बातों से जानकारी प्राप्त करना अभीष्ट हो वह समाचार पढ़े उससे देशों में प्रकाश फैलता है और अज्ञान ऐसा दूर होता है जैसा मिथ्या सत्य से, चूहा बिल्ली से। उन में कोई यथोर और कोई ठंडाल है। यह पत्र विषय को गवर्मेन्ट वा

समाज से गम्भीरता में दूसरा हास्य में कहता है अथवा हंसाने वाले चित्र बनाकर दिखाता है॥ हास्य के पत्र बालकों के पढ़ने योग्य नहीं होते। उनके यथार्थ अभिप्राय को पहचानना उनकी योग्यता से बाहर है। किन्तु वह उनके ऊपर बुरा प्रभाव उत्पन्न करते हैं, इन सब से प्रयोजन यह है कि यदि मनुष्य चाहे कि मैं अपनी विद्या, बुद्धि और मन की वृद्धि करूं, तो उचित है कि अपनी प्रसन्नतानुसार पुस्तकें और समाचार पत्र पढ़ने के लिये समय नियत करे और सदा उस के अनुसार वर्ताव रक्खें. पढ़ने का तात्पर्य्य यही है कि मनुष्य अपनी सहायता आपकरें। यह सदा कहा जाता है कि जो अपनी सहायता आप करता है, ईश्वर भी उस की सहायता करता है. नहीं तो यदि किञ्चित् पढ़ कर पढ़ा हुआ कह लेना और फिर विद्याभ्यास से मन चुराना पढ़े लिखे का नाम खोना है, और मूर्खता के जंगल में आप भटकना है, बस यदि हम विद्यार्थी पन को एक शरीर मानें तो विद्याभ्यास उसमें जीव है, जो इसको चलाता फिरता है, यदि इस अवस्था में अपनी सहायता आप न करने की बान न पड़ी तो वह एक मुरदे के समान है, जिस से कोई लाभ नहीं इस दशा में माता, पिता और गुरु का प्रयत्न भी कुछ काम नहीं करसका। जिस को भूख न लगी हो, उस को जबरदस्ती आप खिला नहीं सकते। यदि उस को भूख लागी तो वह बिना कहे भोजन खोजने का प्रयत्न करेगा और

जो वह भोजन करेगा वह आरोग्यता को गुण कारी भी होगी, मेरी समझ में भागवान वह विद्यार्थी है जिस को पठन में रुचि हो जावे जिस से वह जीवन पर्य्यन्त विद्याभ्यास करे और अपने समय में बुद्धिमान समझा जावे ॥

चिट्ठीपत्री किस प्रकार लिखना चाहिये।

१ चिट्ठी लिखने की पुरानी रीति २ नई रीति। ३ अंगरेजी। ४ दसी। ५ सरकारी। ६ चिट्ठी लिखने में थोड़ी लाभकारी बातें ॥

---

१ प्रथम यह रीति थी कि जब लेखक पत्र लिखता तो अपनी योग्यता दिखाने के लिये बड़े २ शब्द ढूंढ २ कर लिखता, सुन्दर पद बनाने का विचार करता कठिन पेचदार इबारत लिखता, इस प्रकार पत्र लिखने में बहुत समय व्यतीत करता, यद्यपि केवल यही कहना अभीष्ट हो कि यहां कुशल है आप अपनी कुशल के समाचार लिखें, तो भी उसके लिये पन्ने के पन्ने काले कर दिये जाते हैं मित्र पत्र पाते ही चिन्ता में डूब जाता है, यदि वह उस के अभिप्राय को समझले तो मानो बड़ा काम किया। फिर वह भी पत्रोत्तर लिखने को

तैयारी करता है और अपनी योग्यतानुसार पत्र को छेड़ता है। पत्रों में यथा क्रम पानेवाले के पद को लिख कर कुशल क्षेम लिखी जाती है फिर अभिप्राय लिखा जाता है जिसमें कहावतें वा कविता लिखी जाती हैं। जो पत्र इन बातों से खाली हैं उस का कुछ आदर नहीं किया जाता, इबारतकी सादगी अयोग्यता का चिन्ह माना जाता। पाने वाले के लिये शब्दों का प्रयोग किया जाता कि यदि वह आज लिखे जावें तो हंसी ही उस को सिकन्दर फरीदु लिखना अवगुण नहीं समझा जाता था। जिस के पास रहने को एक झोपड़ी भी न हो, वह हातिम समय का लिखा जाता, जिसने कभी एक पैसा भी पुण्यार्थ न दिया हो। यह तो उसके विशेषणों का वर्णन हुआ। बड़े २ चुनेहुए शब्द उनको बढ़ाने और अपना नम्र भाव दिखाने के लिये लिखे जाते। उस समय में ऐसा लिखना अवगुण नहीं माना जाता था। लेख रीति सिखाने के लिये बड़े २ पत्र लिखना सिखाने के लिये पुस्तकें लिखी गईं जिनके पढ़ने में बहुत समय व्यतीत होता। सिवाय इसके बहुत पत्र नाना प्रकार की लिखावट के जमा किये जाते और पढ़े जाते। इस प्रकार वर्षों की मेहनत में पत्र लिखना आता। अन्त को उर्दू का प्रचार हुआ, सरकार अंगरेजी का जब राज हुआ तो उसने उरदू को दफतरों में जारी किया। डाक का प्रबंध करदिया जिससे पत्र व्यवहार की बहुत उन्नति हुई। प्रथम जब बहुतही

ज़रूरी काम होता तब पत्र लिखा जाता, क्योंकि उसको ले जाने के लिये एक अलग मनुष्य चाहिये था जिसको पूरी मेहनत दी जाती। अब वह सब कठिनाई जाती रही, केवल पैसे दो पैसे में अब भली भांति काम निकलता है। प्रथम जैसे राजा महाराजों के नाम पत्र आते एक साधारण दूकान दार के नाम आते हैं। अब सब प्रकार की सरलता प्राप्त है, अब जरूर नहीं कि पुराने ढंगों पर चलाजाय थोड़ी रीतें लिखी जाती हैं जिन पर वर्ताव करना चाहिये॥

(२) अब वर्तमान काल के अनुसार पत्रों में सरल शब्द लिखना योग्यता मानी जाती है। अधिक योग्य जन अधिक सरलता पसन्द करने वाले हैं॥

(३) अंगरेजी पढ़े केवल डीयर (प्यारा) मित्र के नाम के आगे लिखते हैं जैसे मेरे प्यारे पिता, माता, भाई बहन, व मित्र आदि। इसमे आगे अभिप्राय लिखना आरम्भ करदेते हैं। यदि कोई रोग वा हानि हुई तो साफ लिख दिया यदि सब कुशल है तो कुछ लिखना अवश्य नहीं। इस के उपरान्त लेखक अपने को आपका भाई मित्र वा बेटा जो हो लिख कर अपना नाम लिख देता है, पत्र के सिरे पर जहां से लिखाजाता है उसका नाम और नीचे मिती लिखी जाती है॥

(४) यदि अंगरेजी रीति की नकल करना स्वीकार न हो क्योंकि उस में बत सादापन है तो अपना देशी ढंग प

रहने देना चाहिये --वह यह है—यदि पिता को लिखना हो तो मान्यवर श्री पिता जी लिखो आगे दण्डवत वा प्रणाम लिखो फिर अपना अभिप्राय लिखो। परन्तु शब्द साधारण छोटे २ बोल चाल के समान हों। लिखने में बड़ों का यथोचित आदर और मान का विचार रहे, अंतमें अपना नाम ठाम और मिती लिखो। इसी प्रकार माता को भी लिखना उचित है। गुरु को लिखो तो श्री गुरुवर सकल गुण भूषित आदि आदर सूचक शब्द लिखो फिर अन्त में आप का चरण सेवक लिख कर अपना नाम ठाम और मिती लिखो। छोटा भाई, बेटा वा शिष्य को लिखना हो तो केवल (प्रियवर) लिखो फिर आशीर्वाद लिख कर अभिप्राय लिखो! अन्त में अपना नाम लिखो जो भेद करना स्वीकार हो तो (प्रिय) पुत्र (प्रिय शिष्य) लिखो॥

जो बराबर वाला हो तो उस को (सनेही मित्र) (प्रिय-मित्र) लिखो, फिर मिलने की अभिलाषा प्रगट करके मतलब लिखो, अन्त में (आप का परम स्नेही) वा (आप का सच्चा मित्र) लिख कर नाम लिखो॥

(५) सरकारी पत्र और निवेदन पत्रों में एक ओर उन के नाम के आगे (श्रीमान्) वा श्रीयुत लिख कर उनका पद लिखो। फिर स्थान बीच में छोड़ कर एक ओर (ग़रीब परवर सलामत) लिख कर बड़े आदर सहित अभिप्राय लिखो। अन्त में यह लिख कर (श्रीमान् का आज्ञा कारी सेवक) नीचे

अपना नाम पद और तारीख लिख दो। यदि बराबरका हो तो उन का नाम और उहदा और अपना नाम और उहदा और बीचमें स्थान का नाम और नंबर आदि लिखकर मतलब लिखो॥

और मातहत अर्थात् आधीन छोटा उहदेदार हो तो सिर पर मह्कमें वा अदालत का नाम हो कुछ स्थान छोड़ कर उहदेदार का नाम लिखा, यदि वह आज्ञा उस के लिये हो, यदि अपने महकमें का न हो तो स्थानादि भी लिखना ज़रूर है। दूसरी पंक्ति में हुकम का मतलब और अन्त में तारीख लिखो, ऊपर खाली जगह में मोहर और हस्ताक्षर होने चाहियें, सर्कारी हुकम बहुधा आधा कागज़ छोड़ कर लिखे जाते हैं। और आधे में आधीन कर्मचारी की रीपोर्ट लिखी जाती है। शेषपत्र व्यवहार में जिसका जो मन चाहे करे॥

(६) और थोड़ी गुणकारी बातें पत्र व्यवहार के विषय में सुन लो। जो अपने से बड़े हों सदा उनको आदर से लिखो छोटे और बराबर वालों को भी कभी कोई असभ्य शब्द मत लिखो। ऐसी कोई बात मत लिखो जिसका प्रमाण न दे सको, लिखते समय सदा अङ्गरेज़ी कानून का विचार रक्खो, कोई शब्द नियम विरुद्ध न हो, द्व्यर्थी शब्द लिखना भी उचित नहीं, चिट्ठी में कभी शपथ मत खाओ और न दूसरे से कुछ बहुत गिड़ गिड़ा कर मांगो, यदि सरकारी पत्र न हो तो (तुम) शब्द मत लिखो (आप) लिखने में सुजनता जान पड़ती है॥ पत्रों में ठट्ठा,

मसखरापन लिखना उचित नहीं, क्योंकि फिर वह भी लिखेगा, और बात बढ़ जावेगी और बड़ी हानि यह है कि हंसी करने वाले की बात का आदर नहीं होता, वह तुच्छ माना जाता है। वह अपनी प्रतिष्ठा आप खोता है। गम्भीरता बड़ा भारी गुण है। पत्र लिखने में तुकबन्दी न करो इसमें मतलब जाता रहता है, बहुत विस्तार के साथ लिखना उचित नहीं संक्षेप लिखने की रीति उत्तम है, अभिप्राय साफ २ लिखो, पद छोटे २ हों जिस से पढ़ने वाले को कष्ट न हो सहज से पढ़ ले, मतलब समझले। पोस्टकार्ड में न स न लिखो क्योंकि दूसरी ओर नाम आदि सब लिखा होता है। किसी को कड़ा मत लिखो तुम्हें कोई लिखे भी तो बड़ी नम्रता से उत्तर दो। नीतिज्ञ सज्जन की यही पहचान है कि वह न ज़बान से गन्दे शब्द निकालता है न लेखनी से लिखता है। मैं आशा करता हूं तुम आर्य सज्जन बनने की चेष्टा करोगे॥

बालकों को सोने चांदी के आभूषण पहनाना उचित नहीं।,

१ बालकों को आभूषण पहनाने की रीति। २ आभूषण किस अभिप्राय से पहनाये जाते हैं। ३ आभूषण पहनाने की बुराइयां। ४ आभूषण न पहनावो तो क्या करो॥

(१) जहां हमारे देश में और बहुत बुरी रीतें प्रचलित हैं वहां बालकों को आभूषण पहनाने की एक रीति है। यद्यपि इसका चलाने वाला कौन है यह नहीं मालूम तो भी यह कहा जाता है कि यह बहुत पुरानी रीति है। आश्चर्य नहीं कि मूर्खता के समय के साथ २ यह भी निकली हो। हमारे भाइयों में भेड़ चाल बहुत है इसको भी उसमें सम्बन्ध है। विशेष कर स्त्रियां जो आगम सोचा नहीं होतीं, पुरानी रस्मों को बड़ा मानने वाली होती हैं और अज्ञानता से हठ करके अपने पुरुषों को उनके मानने पर लाचार करती है। परन्तु इस से यह न समझना चाहिये कि पुरुषों का इसमें दोष नहीं क्योंकि या तो उनके विचार स्त्रियों के समान ही हैं बस वह लाचार हो कर उनका कहना मानते हैं। प्रथम दशा में स्त्रियों का क्या दोष हुआ दूसरी में वह स्त्री के अधीन ठहरे हमारे बहुधा देशी भाई ऐसे हैं जो बुरी रीतों पर चलना अपना धर्म मानते हैं। उनका हठ स्त्रियों को हठ से भी बढ़ी हुई ठहरी ॥

(२) क्या आभूषण पहनाने से यह अभिप्राय है कि हमारी सन्तान अधिक सुन्दर दीख पड़े वा लोग हमें धनवान समझें, वा प्रगट दशा देखकर किसी अच्छे कुटम्ब में सगाई हो हमारी समझ में यदि यही विचार है तो सब व्यर्थ है क्योंकि बिना आभूषण पहराये भी अपनी सन्तान सब को सुन्दर और प्यारी लगती है। एक बुद्धिमान का वचन है कि अपनी बुद्धि और

सम्मान सब को भली लगती है, चाहे उनसे अधिक उत्तम दूसरे सामने मौजूद हों। जैसे एक कंगाल को अपना बच्चा प्यारा लगता है वैसा ही एक महाराजा और धनवान को लगता है॥ यदि राजकुमार विस्मार्क और मिस्टर ग्लैडस्टन अपने को सब संसार में बुद्धिमान मानें तो अन्यथा नहीं (इनमें से एक जरमन का और दूसरा इङ्गलैण्ड का वज़ीर है, क्योंकि वह ऐसे ही योग्य हैं, परन्तु आश्चर्य यह कि एक अनपढ़ गंवार भी अपने को सबसे अधिक बुद्धिमान समझता है। यह देखा जाता है कि कुरूपवान को आभूषण पहना दो तो वह कभी कुरूपवान नहीं होजाता। और जो सुन्दर हैं उसकी सुन्दरताई ही उसको शोभा है। एक कवि कहता है कि चन्द्रमा बिना गहने भी शोभायमान होता है। एक का धनपात्र होना किसी से छिपा नहीं रहता, भला यह क्या ज़रूर है कि बालकों को गहना पहनाने से ही धनवान होना प्रगट हो। और भी बहुत द्वार धनवान होना दिखलाने के हैं। गरीबों के लड़कों को पुस्तकें ले दो, उनकी फीस दो, गरीब रोगियों को भोजन और औषधि दो, नङ्गों को वस्त्र पहनाओ, युनीवर्सिटी में अपने से छात्र वृत जारी करो, जिन लोगों ने समाज के उपकार का बीड़ा उठाया है उनकी सहायता करो। जब तुम ऋण लेकर बालकों को गहना पहिनावोगे तो क्या धनवान कहलावोगे, कदापि नहीं। एक ठठोल कहता है कि यदि धन दिखाने का विज्ञापन बालकों के द्वारा कराना स्वीकार है

तो गहना पहिनानेके बदले अपने माल असबाब धन की नामा-वली उनके गले में लटका दिया करें इससे तुम्हारा धन द्रव्य भी बच जायगा और बालक अकाल मृत्यु से भी बचेगा हनाय वह जन जो धोखे की टट्टी में फसता है अर्थात् बाहरी भड़क को पसन्द करता है और उस को देख कर अपनी प्यारी सन्तान को हो सगाड़ करता है और शुभाचरण योग्यता सुजनता, सूरत वा बराबरी देखने के बदले चांदी सोने के आभूषण देखता है सर्वथा मूर्ख और अज्ञानी है॥

(३) ए निर्दय भाइयो. तुम नहीं देखते कि यह रोग कैसा महा कठिन है साल भरमें कितने बच्चे इसके कारण बलिदान होते हैं। कोई नगर वा कसबा ऐसा नहीं है जहां गहने के कारण कोई न कोई दुर्घटना न हो जाती हो। बच्चा अनसमझ हुआ तो बदमाश केवल गहना उतार कर सन्तोष करलेते हैं॥ नहीं तो मार कर कूवे में फेंक देते हैं वा धरती में गाड़ देते हैं, वा गला घूट कर किसी गढ़े वा नाले वा खंडहर में डाल देते हैं। चलो फिर यावज्जीवन उस प्यारी संतान का नाम लेकर रोया करो। निस्सन्देह तुम अपनी ओर से प्यार करते हो परन्तु तुम्हारा ऐसा प्यार पूरा वैर करना है। शोक है कि ऐसी दुर्घटना तुम नित्य आंखों से देखते हो और कानों से सुनते हो, फिर भी शिक्षा प्राप्त नहीं करते। माना कि तुम अपने बालकों को पूरी रक्षा करते हो परन्तु फिर भी मनुष्य हो कभी न कभी असाव-

धान हो हो जावेंगे जहां तनिक नज़र चूकी कि बदमाशों ने जो अवसर ढूंढ़ते रहते हैं और जिनके मुख में लालच का पानी भरा रहता है तुम्हारी कमाई का खाक में मिलाया। इस पर और दुख यह कि ऐसे अपराधियों का भी बहुत कम पता लगता है। हे मित्रो अपनी औलाद पर दया करो.इनको आभूषण न पहना कर अकाल मृत्यु के पंजे से बचावो माना कि बालक को हानि न पहुंचेगी तौ भी गहना बनवाने में जो रुपये की हानि होगी उसको क्यों सहते हो यह प्रगट है कि अगर आभूषण बनवाकर तुरन्त बेचो तौभी दो आना रुपये में नुकसान जायगा, बनवाई के दाम व्यर्थ जावेंगे। जो वह नित्य पहनाजावेगा घिसेगा. रुपया बरबाद जावेगा। बच्चे के हाथ पाव जेवर से मेले रहेंगे. तनिक विचार तो करो, और आगे को इस रीति को परम हानि कारक समझ कर दूर करो, नहीं तो घर का नुकसान और देश की बदनामी होगी। यह रीति आतशबाजी के समान है जो विवाह में छुड़ाई जाती है और जिस को घर फूक तमाशा देखना कहते हैं।

(४) मेरी सम्मति है कि यदि अपने बालकों को प्यार करते हो तो उनकी स्वास्थ्य रक्षा के लिये प्रयत्न करो ; यदि वह छोटे हों तो उनके युवा होने तक दो तीन बार टीका लगाओ, गर्मियों में धूप से और जाड़ों में सरदीसे बचावो, यथोचित वस्त्र पहनाओ, सिवाय हाथ के किसी अंग को नङ्गा न रहने दो और

न बेकाम फिरने दो भोजन नियम के अनुसार दो उनको विद्या सिखाने में यत्न करो बच्चे को गहनेसे लाद दो और नङ्गा फिरा-ना और सच्चे आभूषण विद्या और गुण है उनमें उन को खाली रक्खा यह कौन समझ है। सोने चांदी के जेवर उसके शत्रु हैं। जो पुरुष औरतों के कहने से बालकों को गहना पहनाते हैं वह बुद्धि हीन अंधे हैं। अपनी मूर्खता का फल भोगेंगे फिर पछताये से क्या होगा। हे लडको मुझे तुम से आशा है कि तुम जब गृहस्थी बनोगे तो ज़रूर इस दुःखदाई रीति को छोड़ दोगे यह प्रत्यक्ष हानि कारक है बुद्धिमान वही है जो हानि लाभ को पहिचान सके॥

नाता और विवाह।

१ विवाहकी आवश्यकता और व्यर्थ व्यय। २ छोटी अवस्था में विवाह न करो। ३ विवाह में दूलह दुलहिनकी प्रसन्नता भी चाहिये। ४ एक स्त्री के मौजूद होते दूसरी से व्याह मत करो। ५ उपदेश॥

(१) संसार के उत्तम प्रबन्ध के लिये अवश्य है, कि कोई जन दूसरे के पद और अधिकार में हस्ताक्षेप न करे और अपने पदकी रक्षा आप करे इस कारण नाते और व्याहका होना और नियमानुसार होना उचित है। स्त्री पुरुषके होने और उन

की जाति के अलग रहने से प्रगट है कि ईश्वर ने यह स्वभाविक रक्खा है कि वह मिल कर रहें। यदि इस विषय में समाज के किसी प्रबन्ध सिद्धान्त पर विचार न किया जावगा और उनके अनुसार बर्ताव न करोगे तो अवश्य गड़ बड़ उत्पन्न होगी और फिर बुरे फल निकलेंगे अब आपत्य है तो कुछ सिद्धान्त नहीं है किन्तु व्यर्थ खर्च पर है। वा नाते के विषय में जो असावधानी की जाती है उस पर है। यह कुछ ज़रूर नहीं है कि विवाह में बहुत अन्धाधुन्द खर्च ही किया जाय, उचित यही है उत्तम रीति से अपने विचारानुसार थोड़े में काम करलो। उससे भी यही लाभ प्राप्त होगा जो बहुत खरचे में होते हैं। कम समझ लोग झूठी प्रशन्सा के उत्साह में आकर बड़ा खरच कर बैठते हैं। मुफ्त खाने वाला वाह २ में क्या शामिल होता है। इससे न भूख दूर होती है, न प्यास बुझती है, न आरोग्यता बढ़ती है न सच्ची प्रतिष्ठा मिलती है। हां जो माल तुम ने बड़ी महनतों से कमाया है वा पुरुषों की कमाई का तुम्हें मिला है अथवा ऋण ले लिया वह दूसरों के हाथ में चला जाता है। इस हानि से बहुतों का जीवन कड़वा हो जाता है। बहुत बेइज्जती से मरते हैं, स्त्रियों को शोक और दुःख बना रहता है। देखो व्यर्थ व्यय के फल कैसे शोक जनक है। तुम को यह भय बना है कि यदि हम विवाह में नाच न करावें, महफिलें न सजावें, मुफ़त खोरों को न लुटावें, ज्योनारें न करें, बहुमूल्य वस्त्राभूष

न बनावें तो बिरादरी वाले ताने मारेंगे और मुफ़तख़ोर अपयश करेंगे। परन्तु विचारो इस में तुम्हारा कुछ नहीं बिगड़ता, रुपया पास है, जब चाहो किसी पुरुषार्थ के काम में जो पक्का और सदैव का हो खर्च करके सच्ची प्रशंसा प्राप्त कर सकते हो। वह काम मनुष्य जाति का उपकार करना, शिक्षा में उत्साह दिखलाना वा नित्य व्यवहार में कोई आराम निकालना है॥

(२) यह विदित है कि बालकों को पालना, पढ़ाना, विवाह कर देना पिता का कर्तव्य है। मुझे केवल इतना कहना है कि विवाह करने के कर्तव्य से पिता को मुक्त कर देना चाहिये, इस कारण कि वह छोटी अवस्था में ही विवाह कर दिया करते हैं। संबंधी इच्छा करें वा न करें परन्तु हम आप ही लड़के वा लड़की के विवाह करने के लिये मैदान में उतर आते हैं परन्तु इस से बहुत हानि होने का भय है। यह सम्भव है कि लड़का युवा होने पर बेकाम और बुरा उठे, गृहस्थाश्रम के निबाहने योग्य न हो फिर उस समय पछताने से क्या होगा? फिर उस समय पश्चाताप करने से क्या लाभ होगा। वैद्यक के नियमों से भी छोटी अवस्था में विवाह करना हानि कारक है। बहुधा मुख की आकृति मलीन हो जाती है, शरीर निर्बल पड़ जाता है युवा होने पर भी वृद्ध सा जान पड़ता है, अवस्था घट जाती है, कोई २ अङ्ग शिथिल पड़ जाते हैं, मग़ज़ निर्बल हो जाता है। दृष्टि घट जाती है। हिम्मत बहादुरी के काम नहीं

हो सकी, कुछ हौसला नहीं रहता, इस कारण संसार की क-ठिनाइयां वह सहन नहीं कर सका, विद्योपार्जन होना बंद हो जाता सन्तान कम होती है, कहीं सर्वथा होना ही बंद हो जाता है। बस एक बालक के लिये विवाह कर देना मानो उस की उन्नति रोकने के लिये बीच में बड़ा भारी काला पहाड़ खड़ा कर देना है। जिस को फलांग कर जाना उस को सामर्थ्य के बाहर है। उसका क्या फल निकलेगा, पूरा युवावस्था को पहुंचने के पहिले ही वह दो तीन लड़कों के मा बाप होचुकते हैं। अब विचारिये ऐसी दशा में वह क्या विद्या गुण सीखेंगे क्या उन्नति करेंगे। उन पर चिन्ता आकर सवार होती है, स्त्री के ज़ेवर की फरमाइश को पूरा करें वा सन्तान के पालने के लिये चिन्ता करें, भोजन वस्त्र की चाहिये। बस वह ऐसी चिन्ता में फस जाते हैं कि उनके मुख कुम्हलाये हुए हो जाते हैं। कोई२ इन कठिनाइयों का सहन न करके घर से भाग निकलते हैं फ़-कीर बन जाते हैं। यदि कुछ साहसी परन्तु पूरे अज्ञानी हुए तो दूसरे के धन पर ताक लगाई। चोरी और डकैती को अपनी जीवका बनाई। यहां तक कि जेलखाने भेजे गये जहां अपने कर्तव्य के दण्ड भोग अब इस पर भी सीधे हुए तो सारा जीवन गया ऐसे ही रहे। यदि बहुत अधिक कष्ट पड़ा तो अपनी जान पर खेल बैठे। अब विचारिये यदि युवा होने पर विवाह हो तो इन सब कष्टों से बचने की सम्भावना है। बहुधा माता पिता

काम समझी से उस को अपना कर्तव्य समझ कर करते हैं और भय करते हैं कि यदि सन्तान का विवाह कर देने से पहिले वह मर जावेंगे तो उन का कर्तव्य पूरा होने में रह जायगा। अथवा आज विवाह व्यय करने की योग्यता है कदाचित् फिर न रहे, लड़का कहीं बदचलन न हो जावे। एक वेअवसर काम करने की अपेक्षा न करना उत्तमतर है, विशेष कर ऐसा हानि कारक हो। यदि विवाह का खरच कम कर दिया जावे तो माता पिता भी उस में हलके होने के लिये शीघ्रता न करें. जब चाहे कर लिया करें। चाल चलन का शुद्ध रखना माता पिता के वा गुरु के आधीन है। सर्व साधारण लोग इस का उलझाव का काम समझ कर छोड़ दिया करते हैं, और फिर यावज्जीवन उप पर पछताते हैं। कोई २ अपनी सन्तान में प्रेम इतना हो जाते हैं, कि जाने से मरना उत्तमतर समझते हैं। सच यह है कि जब माता पिता की असावधानी से सन्तान बिगड़ जाती है तो उन को उस के हाथ पूरा दण्ड भुगतना पड़ता है॥

३) विवाह युवा अवस्था में होना उचित है और उचित है कि करने वालों की प्रसन्नता से हो। देखते नहीं हो कि सरकारी नौकर जब किसी मज़दूरी करने वालों को बिना उस की प्रसन्नता के पकड़ कर काम कराते हैं यद्यपि वह मज़दूरी देते हैं तो भी उनको असह्य जान पड़ता है। उसका नाम बेगार रक्खा है। जब हम बिना उनकी मरज़ी विवाह करदेंगे वा दूसरे

शब्दों में कहा जाय तो उनकी स्वतंत्रता में बाधक होंगे। जब वह आपस में लड़ेंगे तो सम्भव है कि हम को बुरा कहें। चाहे रूबरू चाहे पीछे कि ऐसी असावधानी के साथ हमारा क्यों ब्याह कर दिया। बस यह बहुत कठिनाई और जान जोखिम का काम है। युवाओं को इस विषय में स्वतंत्रता दो और इस देश को पुरानी रीति को सजीव करो कि लड़की पुरुष की बुद्धि, बल विद्या, गुण, स्वरूप, पद, धन, वीरता आदि की परीक्षा करके पति बनाती थी। यह रीति एक सभा के बीच होती थी जिस को स्वयंवर कहते हैं। अब वर्तमान रीति से अदालतों की बन आती है क्योंकि स्त्री पुरुषों के बीच में बहुत मुकदमें होते रहते हैं जिस में हमारे घरों के प्रबन्ध की दशा भली भांति प्रगट होती है। औरतें बाहरी पुरुषों के सामने अपने पतियों का सामना करती हैं और पति उन को घरों में लड़ाई झगड़े मार पीट गाली गलौच नित्य बना रहता है। कोई घर ऐसा होगा जिस में यह असभ्यता न फैली हो। तात्पर्य यह कि विवाह युवाओं की प्रसन्नता पर होना चाहिये। परन्तु यह बहुत कठिन है प्रथम जाति के भेद को उठाना चाहिये यह हमारी उन्नति में बड़ी बाधक है। यद्यपि इस के लिये अभी बहुत समय चाहिये। तो भी छोटी अवस्था के विवाह की रीति तो उठ सकती है इस के विरुद्ध बहुत प्रयत्न हो रहे हैं। उस की हानि सर्वसाधारण को दि-

चलाई जारही है यहां तक कि बहुत समाजों ने प्रतिज्ञा करली है कि हम उसको दूर करने में प्रयत्न करेंगे * ॥

४ जो एक से अधिक स्त्रियों से विवाह कर लेते हैं बड़ी भूल करते हैं । जिस विचार पर वह ऐसा करते हैं वह धोखा है । अर्थात् पहिली स्त्री कुरूप, खोटे स्वभाव वा बांझ होगी यदि विचार पूर्वक देखा जावे तो उसने अपनी सूरत आप न बनाई होगी, अथवा बांझ होने में उसका कुछ सामर्थ्य नहीं, स्वभाव का सुधार तुम आप कर सक्ते हो यदि नरमी से काम लो । वह तो सर्वथा तुम्हारे आधीन है । सुकरात हकीम के चरित्र को सुना होगा कि उसकी स्त्री कैसे खोटे स्वभाव की थी परन्तु तौभी उसने प्रसन्नता पूर्वक जीवन किया । यदि उस के केवल लड़कियां ही उत्पन्न होती हैं तौभी उस में विचारी का दोष नहीं । यदि कोई विषय भोग की इच्छा से अधिक विचार करे तो उसको याद रखना चाहिये कि यदि उसकी स्त्री उसके जीवते दूसरा पति करे तो उसको कैसा दारुण दुःख होगा । वैसाही तुम विचार कर इस अयोग्य काम का छोड़

---

* मैंने एक पुस्तक (बाल विवाह कर देने की कुरीति की शारीरिक धार्मिक और समाजिक हानि, दोनों उर्दू हिन्दी में लिखी है जिसमें विस्तार पूर्वक इस कुरीति की हानि दिखाई गई है मूल्य ≡)॥ काशीनाथ, सिरसा जिला इलाहाबाद॥

दो। प्रथम तो चाहे संसर्ग की अधिकाई में वह कुछ सुख भी पाले परन्तु पीछे से दहो स्त्रियां उसके दुखदाई हो जाती हैं। जिनको अधिक विवाह करने का विचार हो वह पहिले यह देख ले कि ऐसे जनोंके दिन किस दुःख और आपदमें कटते है॥ उनके लिये जीते जी नरक भोगवाना है। इससे अधिक और क्या अज्ञान और मूढ़ता होगी कि आंखों के सामने एक खोटे काम के बुरे फल देख पड़ें तो भी उस को न छोड़े, और अपना जीना भारी बना ले। यदि मरजावे तो उस वृद्ध के समान जिसने बुढ़ापे में विवाह करके अपनी तृष्णा पूरी की अपनी प्यारी स्त्री को दूसरे के लिये छोड़ जावेगा क्योंकि अभी देश में विधवा विवाह की रीति भी नहीं है। उसका होना ईश्वरी नियमानुसार आवश्यक है। विशेष कर उनके लिये और भी अधिक जरूरी है जो बिना भेद और पहचान योग्यता और अवस्था के अधार्मिक लोभ में फसकर अपनी प्यारी बेटियों का विवाह कर देते हैं। अर्थात् वह बुद्धिहीन पिता जो अपनी लड़की को नालास पर चढ़ाता है, सम्भव है कि उस पर कोई ऐसा बूढ़ा दाम चढ़ावेगा जो चिता में जाने योग्य हो गया हो। चलो थोड़े दिन बाद लाला जी चल बसे इधर स्त्री युवा हुई अब यदि उसका दूसरा विवाह न कीजे तो कैसा बड़ा भय है। यह विधवा होने पर धर्म सहित न रह सके तो तुम कहोगे कि उस ने हमारी नाक कटवाई कुटुम्ब को कलंक लगाया,

तनिक विचारिये, इस पर अप्रसन्न न होना तुम्हारी स्त्री मर जावे तो तुम दूसरा विवाह कर लो परन्तु स्त्री का पति मर जावे तो वह दूसरा पति न करने पावे। यह परम अन्याय और स्वार्थ परता नहीं है तो क्या है। मैं यदि अपने देश की स्त्रियों की लज्जा और धर्म परायणता की प्रशंसा न करूंगा तो अपने कर्तव्य को पूरा न करूंगा। यह गुण हमारे देश की स्त्रियों में है कि वह, ऐसा सन्तोष और धैर्य करती है। वह विचारी बोल नहीं सकतीं। हमें उन का न्याय करना चाहिये ।

(५ अब हम थोड़े उपदेश इस विषय में करते हैं॥

१ स्त्रियों को नीति की शिक्षा देनी अवश्य है। २ जब तक साधारण रीति पर स्त्रियों की मूर्खता दूर न हो उन को स्वतंत्रता देनी उचित नहीं नहीं तो यह उनके लिये ऐसी ही हानि कारक होगी जैसी पागलके हाथ में छूरी। ३ विधवाओं का पुनर्विवाह उचित है। ४ छोटी अवस्था में विवाह करना उचित नहीं। ५ विवाह में स्त्रीपुरुष की सम्मति लेनी उचित है। ६ बड़ीलड़की का छोटे लड़के के साथ विवाह करना उचित नहीं है। बड़ी लड़की की अवस्था लड़के से एक तिहाई कम होनी

---

*मेरा ग्रन्थ (विधवा विवाह शास्त्र विहित कर्तव्य धर्म है और बाल विधवा सन्ताप नाटक देखिये मूल्य ।≶)॥ मेरे पास मिलता है। काशीनाथ सिरसा जि० इलाहाबाद॥

चाहिये, क्योंकि भारत वर्ष में लड़कों की अपेक्षा लड़कियां बहुत शीघ्र युवा हो जाती है। उन को न लिखने पढ़ने की चिन्ता है न जीविका की इस कारण शीघ्रयुवा हो जाती है। परन्तु ऐसी दशा में कम समझ लड़को का विवाह वृद्ध के साथ कर देना कैसा घोर अत्याचार उन निरपराधिन पर है। कोई स्थान ऐसे हैं जहां युवा होने पर भी लड़कियां व्याही नहीं जातीं। यदि यह माता पिता का कर्तव्य न माना जाता तो क्यों उनकी अवस्था का एक बड़ा भाग क्वारपन में बीतता। कोई २ यावज्जीवन बिनां व्याहे रक्खी जाती हैं और बहुधा व्यभिचार करती हैं जिससे प्रगट है कि जबरदस्ती वह ऐसी दशा में रक्खी जाती हैं उन का मन नहीं है कि वह ऐसी दशा में रहतीं। ८ सम्बन्ध स्वार्थी कमीनी स्त्रियों के द्वारा किया जाता है यह महा अनुचित कि उनको ऐसा बड़ा काम सौंपा जावे। ९ सम्बन्ध कहीं २ साल डेढ़ साल की अवस्था में कर लिया जाता है कहीं गर्भिणी होने पर बात चीत ठहर जाती है फिर दोनों में से किसी के अयोग्य समझे जाने पर भी नाता तोड़ना अनुचित माना जाता है। यह रीति सर्वथा तोड़ डालना उचित है। १० नातदारी करने में बहुधा धन और पद का विचार किया जाता, योग्यता सुजनता आचरण का कुछ विचार नहीं किया जाता यद्यपि धन का कुछ ठिकाना नहीं। ११ विवाह में व्यर्थ शोभा दिखाने के लिये व्यर्थ खरच करना उचित नहीं। १२ जब तक लड़का

पढ़ कर योग्य न होचुके उसका विवाह न करना चाहिये नहीं तो उसको विद्या न आवेगी। १३ लड़कों की बुद्धि परपक्क नहीं होती इस कारण उनकी सावधानी रखना चाहिये जिस में अपने आचरण न बिगाड़ लें। १४ एक पुरुष के लिये एक स्त्री बहुत है। १५ बूढ़ों को नयी स्त्री करना उचित नहीं। १६ कंगाल जो अपना पेट नहीं भर सकते उन्हें उचित है कि अकेले ही रहें। १७ वह गरीब जो रुपया देकर ब्याह करते हैं वह स्त्री को यावज्जीवन विपत्ति में रखते हैं बिचारी को चक्की पीस कर पेट भरना पड़ता है अथवा निर्दय माता पिता लालच के मारे अपनी लड़की को विपत्ति में फंसाते हैं। १८ विवाहित पुरुष का बिना विवाह वाले को अपेक्षा अधिक विश्राम रहता है १९ विवाहित पुरुषको अपेक्षा बिना स्त्री वाला अधिक वीर और दाता होता है। २० विवाहित होकर गृहस्थ को चिन्ता में घबराना कायरपन है। २१ वह पुरुष बड़ा भाग्यवान और सुखी है जिस की पत्नी आज्ञाकारणी शुभचारणी हो। २२ वह पति अभागा है जिस की स्त्री रूपवती हो परन्तु खोटे स्वभाव की हो। २३ कुलवधू की सुन्दरताई लज्जा और गृह कार्य की सावधानी है यद्यपि उस वंश की स्त्रियां धर्म करती हैं परन्तु लज्जावति को सदा प्रतिष्ठा का विचार रहता है, पति यदि कष्ट भी दे तो भी सहन करती हैं। २५ वह स्त्री धर्मवती है जो विपत्ति में भी अपने पतिको सच्ची संगी बनी रहती हैं, अपने पति से दूसरे

को उत्तम तर नहीं मानतीं किन्तु उसकी प्रसन्नता में ईश्वर की प्रसन्नता मानती हैं २६ स्त्रियां की शिक्षा पुरुषों से कम हो होना उचित है। २७ वही स्त्रियां लिखी पढ़ी होनी चाहियें जिनके पति पढ़े लिखे हों। २८ स्त्रियों को सुख। प्रसन्न वदन और लज्जावती होना चाहिये। २९ बुद्धिमती स्त्रियां अपने घर वालोंको उत्तम सम्मति देने वाली होती है। ३० सुजन अपनी स्त्रियों को कष्ट नहीं देते। ३१ कोई स्त्री वा पुरुष की ज़ात कमोनी और बड़ं पन की नहीं होती किन्तु उनके चलन व्यवहार जैसेहों उसी अनुसार वह भले व बुरे होते हैं। ३२ स्त्रियों के जो अधिकार हैं उनका सदा विचार रक्खो। ३३ सभ्य सुजन स्त्रियों का पूरा आदर करते हैं और कभी अधार्मिक संदेह नहीं करते॥

देशाटन अर्थात् यात्रा।

१ देशाटन में सरलता २ देशाटन के लाभ। ३ उस से नाना प्रकार की उन्नति हो सकती है॥

(१) हमें अपनी गवर्नमेंट को धन्यवाद करना चाहिये जिस में सफर करने में प्रजा के लिये सब प्रकार की सरलता करदी है। राज प्रबन्ध ऐसे किये हैं कि चोरों का भय कम हो गया है। पुरुष, स्त्री, बालक, युवा, वृद्ध, बिना भय अकेले सफर कर सकता है। जहां रेल है वहां पैसे दिये टिकट लिया रेल पर चढ़ा

और वह पहुंचा। सड़क ऐसी सीधी है कि अन्धा भी लाठी लिये सहज में चला जाता है। रक्षा के लिये पुलिस मौजूद है चाहे वह अपने कर्तव्य को भली भांति पूरा न करे। रास्तों पर सरायें मुसाफिरखाने बने हैं, गांव बसे हैं, दुकानें खुली हैं, कुवे चलते हैं, खेत लहलहाते हैं। भारतवर्ष देखा है कि फला फूला दीखता है, हमारा सफर मानो अब मन प्रसन्न करने के लिये सैर है। हमारी कुशल क्षेम के समाचार देने के लिये तार और डाक मौजूद है॥

२) सफर से क्या फायदे हैं. मनुष्य गिरगट के समान सदा रंग बदला करता है। प्राचीन समय में सफर की मिसाल सफर ही थे। कभी कभी २ वह विजय का द्वारा कहा जाता था सब प्रकार वह मनुष्य की विज्ञता बढ़ाता है। यह कुछ आवश्यक नहीं है कि सफर केवल हिन्दुस्तान का ही हो धरती का हो वा समुद्र का। सफर में ऊंच नीच, कठिनाई वा सरलता देख कर बहुत कुछ अनुभव बढ़ता है। बहुधा ऐसा होता है कि घर के समान सफर में आराम नहीं मिलता तो भी नई २ बात देख कर मनुष्य की बुद्धि की उन्नति होती है उत्साह बढ़ता है। जो वस्तु पहिले नहीं देखी है, देखने में आती है। सब प्रकार के धर्म्म विद्या गुण के लोगों के दर्शन होते हैं। यह कुछ जरूर नहीं है कि सफर से केवल धनी, विद्वान और शिल्पकार को ही लाभ हो। यह सम्भव है कि ऐसे लोगों को अधिक आराम प्राप्त हो

परन्तु सफर किसी प्रकार के मनुष्य के लिये बिना लाभ नहीं, सब को अपनी योग्यतानुसार गुण होता है। आज कल इस का उत्तम द्वारा धन है। धन पात्र को सफर में कोई कष्ट नहीं सफर की विपत्ति अब तक किसी २ एशिया के देशों में मौजूद है। परन्तु जिन देशों में योरप वालों का राज हो गया है उन में शांति स्थापित है। व्योपारी हो वा यात्री जहां चाहता है फिरता है इस में किञ्चित् सन्देह नहीं कि जन्म भूमि सब को प्यारी लगती है कि चाहे कोई विदेश में कैसे ही उच्च पद और धनकी प्राप्ति क्यों न हो जावे तो भी घर जाने की इच्छा करेगा यह अपने अनुभव में जाना गया है कि बहुधा लोग दरिद्रता में फंसे हैं ऐसे रहते हैं कि उन को कोई नहीं जानता था सफर के कष्ट उठा कर बाहर निकल गये कोई व्योपार किया व नौकरी की जीविका का कोई दूसरा द्वार जो उनको घर में मोयस्सर न था कर लिया, कुछ समय उपरान्त बहुत धन कमा लिया, बड़े सामर्थवान होगये तो भी ऐसी दशा में अपने घर आये॥

२ अङ्गरेज़ लोग यदि सफर न करते तो क्यों कर संसार के सातवें भाग के स्वामी हो जाते। धर्म की पुस्तकों में जो तीर्थ यात्रा कर्तव्य ठहराई गई है, उसमें भी यही तात्पर्य्य है कि मनुष्य पुण्य ही समझ कर यात्रा करेगा और अपने ज्ञान बुद्धि को बढ़ावेगा। क्योंकि यदि यात्राके गुण और पुण्य न बताये जाते तो वह

जो धन पास है, वा जिन के काम घर में बहुत उत्तम चलते हैं वह कभी बाहर पग न धरते, और सदा घर की आधी को बाहर की सारी से बढ़ कर मानते। बस वह लोग जो घर में रहकर जीवन व्यतीत करना चाहते हैं वह कच्चे और बिना अनुभव के हैं। वह कभी अपने से बड़ा योग्य जन देखकर नम्रभाव दिखाता है और कभी दीन दुखी को देख कर और अपनी दशा से मिलान करके ईश्वर का धन्यवाद करता है कि मैं उनसे बहुत उत्तमतर हूं। सफर में ईश्वरी सृष्टि देखकर उस को सर्व शक्तिमान के रूप का ज्ञान होता है। कोई २ जन बनस्पति, धातु, जीवधारी और आकाश और धरती के भेदों को जान कर यात्रा में लिख जाते हैं, और भूगोल, इतिहास, आदि के स्थानीय घटना से लिख कर प्रकाश करते हैं जिस से उनके भाई बन्धों को लाभ पहुंचता है। परन्तु हमारे देशी भाई को न पूछो यह तो मकड़ी के जाले के समान अपने घरों में ही लिपटे रहना पसन्द करते हैं, अपने देश को सब से उत्तम मानते हैं, संसार के और देशों के लोगों को वह सदा से म्लेच्छ करते आये हैं। बलवान वा विजयी को वह राक्षस वा दैत्य कहते रहे। और अपने को देवता। इसी कारण अपनी कायरता से बाहर जाने में धर्म भ्रष्ट होना मान लिया और धरती के चारों ओर अगम्य समुद्र मान कर जहाज़ चलाने की हिम्मत ही हार दी। दूसरे देश को विजय करने की अभिलाषा ही उनको कभी नहीं हुई। या तो उष्ण देश होने के

कारण वह आलसी बन गये, वा धरती के अधिक उपजाव होने के कारण उनको कुछ दूसरे की परवाह नहीं रही, क्योंकि सब प्रकार के भोजनों की सामग्री यहीं मिल जाती थी। इसी कारण बाहर के चढ़ाव करने वाले इन पर विजयी होते रहे। जिन्होंने विजय प्राप्त करके यहां बसना स्वीकार किया वह भी उन के समान निकम्मे आलसी हो गये। और बाहरके शत्रुओं से हारते रहे। हम नहीं जानते कि यह विदेश यात्रा से क्यों बेपरवाही करते हैं और क्यों उन को अपनी दशा पर सन्तोष है। इस का भी वही कारण है जो यहां के प्राचीन निवासियों को आलसी बनाये हुए हैं. वह भी इस देश में कुछ समय तक रह कर कायर साहस हीन होगये। ईश्वर न करे कि हमारे स्वभाव और बान प्रभाव अङ्गरेजों पर पड़े और कोई दूसरी मनुष्य जाति इन पर चढ़ कर विजयी हो नहीं तो फिर इस देश में वही सत्यानाशी समय आजायगा जिस में बीते अभी बहुत काल नहीं बीता।

रेलवे।

१ रेलवे का वर्णन। २ तार से रेलवे का प्रबन्ध। ३ रेलवे से बणिज की उन्नति। ४ रेलवे से मुलकी और जंगी काम निकलते हैं। ५ रेलवे में दोष। ६ उनके उत्तर॥

---

१) गवर्नमेंट की कृपा से जहां और बहुत सुख हमें मिले हैं उनमें एक रेलवे भी है, प्रथम ही लार्ड डिलहौजी के समय में यह परम सुखदाई सवारी इस देश में लाई गई, यह लोहे की सड़क पर गाड़ियों को लिये हुए हजारों मन बोझ और सवारियों को खींचे हुए चली जाती है, गामिनी ऐसी है कि एक घंटे में २५ मील चली जाती है, मुसाफिरों के बैठने के लिये सब ऋतुओं के अनुसार सुंदर गाड़ियां बनी हुई हैं. रेल से समय बहुत बचने का बहुत फायदा है, और सब सवारियों की अपेक्षा इस में कुछ दुःख नहीं, किराया ऐसा सस्ता है कि यदि कोई पैदल चले तो भोजन में ही इतना खरच लग जावेगा और चलते २ थकेगा ऊपर से, इस से महीनों का सफर दिनों में पूरा होता है. रेल इंजन का भोजन क्या है आग पानी। तुम ने पदार्थ विद्या की पुस्तक में पढ़ा होगा एक इञ्च पानी १७०० इंच में जगह भाप की सूरत में रोक सकता है इससे ही इसके बल और ज़ोर का अन्दाज़ कर लीजे कि वह किस तरह इतना बोझ लेकर आसानी से उड़ी चली आती है। और बात की बात में कहीं की कहीं पहुंच जाती है। उसकी दौड़ ऐसी है कि हवा भी उस की बराबरी नहीं कर सकी॥

(२) रेल के साथ यदि तार न होता तो उस से बहुत लाभ न होता, मानो तार उसका सच्चा मित्र है या यह कहो कि रेलवे राजा है और तार उसका मंत्री है, उस के आने और जाने को

खबर आगे और पीछे देता रहता है, जिस से इस की अगवानी का सब प्रबन्ध हो जावे सब सेवक अपने २ काम पर सावधान हो जावें, कैसे वह इधर उधर दौड़ते फिरते है, यदि वह अनजान मुसाफिरों से यदि चिड़चिड़ेपन से बर्ताव न करें तो वह सब प्रकार प्रशंसा के पात्र है ॥

(१)जिस प्रकार पानी बराबर होने की चेष्टा करता है इसी रीति से रेलवे सब स्थानों पर अन्नादि का भाव एक सा करने का प्रयत्न करती है, यद्यपि व्योपारियों को पहिले समय के समान लाभ नहीं होता,परन्तु यदि उस समय की लदाई बुभाई के कष्ट,और रक्षा और समय लगने का विचार करोगे तो कभी उस समय के लाभ को वर्तमान काल के व्यापार को निकासी से बढ़ कर न समझोगे । देखते हो इधर माल चढ़ता है उधर उतरता है जहां कम कष्ट है वहां लाभ भी कम है,परन्तु जितने समय में एक बार लिया बेची होती थी वहां अब कई बार होती है, सम्भव है कि इस लेखे से इतने समय में अधिक लाभ हो, रेल के होने से वाणिज में नये प्राण आजाते है, देखो माल गाड़ियां कैसी लदी जाती है और फिर भी स्टेशनों में माल भरा पड़ा है, आज कल व्यापारियों को इसी सिद्धांत पर ध्यान देना चाहिये कि थोड़े थोड़े नफा हो तुरन्त बेचा और खरीदा माल को बंद रखना, हमारे देश की पुरानी रीति है, पहिले हाकिम जो स्वतंत्रता के सिद्धान्तों को नहीं समझते थे ऊपर द-

खो आप भाव नियत करके बिकवाते थे, रेलवे होने से, अब व्योपारियों को लोभ हो रहा है कि जहां माल नहीं है वहां भेजें, अभाग से यदि कहीं अकाल पड़ जावे तो रेल देखते ही देखते लाखों मन अन्न वहां दूसरे देश में से लाकर डाल देती है जिससे सहस्रों के प्राण बच जाते है ॥

(४) यदि देश की सीमा पर तनिक युद्ध हो वा देश के अन्दर ही कहीं उपद्रव दीख पड़े तो रेल कैसी शीघ्रता से वहां सब सामग्री और सेना को पहुंचादेती है, यह देश में शान्ति स्थापन करने वाली है, यह सरकार के प्रताप को बढ़ाने वाली है और शत्रुओं को डराने वाली है, रसद पहुंचाने में यह कमसरियट और बोझा लादने में बड़े २ के फलों से अधिक काम देने वाली है ॥

यह सब समय जंगी और मुलकी काम पूरे करने में हाथ जोड़े खड़ी रहती है, काली रातें हों आंधी चल रही हो, वर्षा होती है, रेल कुछ परवाह नहीं करती बेठिकाने दौड़ी चली जाती है ॥

(५) रेल रुपया देश से खींचने में मकनातीसी की सामर्थ्य रखती है, बहुधा आदमी इसके भेंट होते हैं, बहुत बिचारे इस में कुचल कर मर जाते हैं। कभी सड़क से अंजन उतर आवे वा उस में आग लग जावे तो फिर कैसी महा विपत्ति हो, लाखों के सिर पानी फिर जावे सहस्रों के प्राण चले जावें, कुछ तो इ-

अरे देशी भाई पहिले से ही मालमो हैं कुछ रेल ने इनको और कर दिया आठ कोस दर भी एक को जाना हो तो रेल की प्रतीक्षा में स्टेशन पर डेरा डाल देते हैं कब आवे और वह पैसे देकर टिकट लें और सवार हों, एक मील फी घंटे चलते तो कभी के पहुंच जाते, वाह रे तुम्हारी हिम्मत ?॥

(६) सुनो सदा रेल में दुर्घटना नहीं होती, दैवात् जो दुर्घटना हो जाती है उस को रोकने के लिये प्रयत्न हो रहे हैं, जो हानि स्टेशन मास्टर गार्ड ड्रैवर की असावधानी वा मत होने के कारण वा कांटन वाले की मूर्खता से हो जावे उन को दण्ड होता है परन्तु मनुष्य में ऐसी सामर्थ कहां है जो दैवी कोप को रोक सके, कभी आग लोगों के घरों में हो लग जाया करती है वह अकस्मात् मृत्यु हो जाती है और कभी २ नगर का नगर जल कर राख हो जाता है ॥

हम तो जानते हैं जहां रेलवे के चरण पधारते हैं वहां सभ्यता के गुण फैलते जाते हैं, एकजन नाना प्रकार के मत देखकर अपने धर्म में सुधार करने लगता है, नाना प्रकार के मनुष्यों से मेल होता है, नाना प्रकार की कारीगरी की वस्तुओं और यंत्र देखने से मनुष्य की विज्ञता बढ़ती है इस के कारण विद्या की सीमा नित्य बढ़ती जाती है और सभ्यता का दौरा हो जाता है, भोजन की वस्तु, वस्त्र और निवास की रहन और बान चीत में इतने अदलाव होते जाते हैं जितने मनुष्य

के जीवन में होते हैं, दूर न जाइये अपनी आंखों से देखे हुए कामों को देख कर इसकी जांच करलो, सिवाय इसके रेलवे में देशी गाड़ी को चैंचं और एक्के के धक्कों से बचाया और समय में जो बचत हुई वह तो बहुत ही धन्यवाद के योग्य है॥

आराम और स्वाद जो इस सवारी में मिलता है वह टम टम और फ़िटन में भी नहीं मिलता, इस कारण थोड़ी दूर भी जाना होता है तो यही मन करता है कि रेल पर सवार होकर जावें। जिस ने कभी इस की सवारी नहीं की वह तो अच्छा करके इस पर सवार होता है, स्टेशन पर मेला सा लगा रहता है नाना प्रकार के मनुष्यों से मिलने और बात चीत करने का अवसर मिलता है। नये २ रंग ढंग की वस्तु पशु आदि देखे जाते हैं, सब आवश्यकता की वस्तु मौजूद हैं पैसा दो और लेलो, भला यह आराम पाकर कौन जूतियां फट फट करे और उनकी धूल सिर पर कौन डाले यदि पैसा गांठ में हो, अभिप्राय कि यह सवारी सब प्रकार पसन्द योग्य है, लोग बड़े चाव और प्रसन्नता से इस पर सवार होते हैं, जो समय रेल की सवारी में बचता है उसको लोग बड़ी खुशी से अपने व्यापार और काम में लगाते हैं जिस से दरिद्रता और मोहताजी दूर होती है, मोटी समझ वाले इस को क्या समझें? यथार्थ में रेल का होना हमारे देश के लिये भाग्य मानो और सुदशा का पूरा चिन्ह है॥

छापा।

(१) मनुष्य अपने शरीर के सब कर्तव्य में दूसरे जीवों के समान है। परन्तु उसमें बुद्धि और पहचान ऐसी है जिससे वह सब से उत्कृष्ठ है। क्या उसने यह पद अपने लिये आप तजवीज़ करलिया है। और अपने मुंह आप मियां मिट्ठू बना है। नहीं नहीं। यह उच्च पद उसको ईश्वर ने दिया है। सभा और बुद्धि के हेतु उसको यह बड़ापन प्राप्त है, तुम दूसरे जीव धारियों को देखते हो कि उन्होंने आज तक कोई उन्नति नहीं की है जैसे पहिले थे वैसे अब हैं, अर्थात् पशु पक्षी, बनैलें, कीड़े मकोड़े अपने रहने खाने पीने सोने में वही ढङ्ग रखते हैं जो आरम्भ में था, परन्तु मनुष्य सदा उन्नति करता रहता है उसमें उन्नति करने की योग्यता मौजूद है।

(२) परन्तु बुद्धि जब तक उन्नति और सच्चाई के पंथमें लाई जावे तब तक वह व्यर्थ है, वह किसी सुधार और बढ़ाव के काम पर ध्यान नहीं देती जब तक कि उसको उत्तेजना न हो और वह अपने से योग्यतर जन द्वारा होती है, जो शिक्षा द्वारा प्राप्त होती है, अथवा उसके जीवन चरित्र पर ध्यान देना या दूसरों से सुनने से सुयश प्राप्त की इच्छा उत्पन्न होती है। फिर वह ऐसे काम करते हैं जिसके कारण वह सब में आदर सत्कार किये जाते हैं, मैं कह आया हूं कि बुद्धि के लिये कई

उत्तेजना और उत्तेजनाके लिये शिक्षा वा उत्तमजनों के आचरण का उदाहरण बनाना उचित है,किसीके चरित्र पढ़ने वा सुननेसे सुयश प्राप्त की लालसा उत्पन्न होती है,और वह यहांतक पहुंच जाता है तो सब के आदर सत्कार से उस की हिम्मत बढ़ जाती है जो जन अपने अकेले को नामवरी चाहता है और दूसरों की कीर्ति पर डाह करता है वह आदर योग्य नहीं, आदर जिह्वा वन वा लेखनी द्वारा किया जाता है, यथार्थ बात यह है कि आदर सत्कार करनेमें भी बुद्धि चाहिये,मूर्खों की झूठी चापलूसी से हमारे विद्वान् सिवाय घमंड और अपनी प्रशंसा आप करने के और कुछ न सीखे जिसे वह फिर किसी काम योग्य न रहे वह सिवाय पुस्तकें पढ़ने और बातोंके झगड़े करने के और कुछ करने योग्य नहीं रह जाते,मानो यही विद्या सीखनेका पुरुषार्थ है,ऐसे लोगपूरे विद्वान् नहीं कहेजासक्ते यद्यपिवह मूर्खोंसेअच्छे ही हैं॥

(२) मनुष्य जीवन बहुत उत्तम है परन्तु जब एक जन नितान्त मूर्खही बाता है तो निष्फल है, उस मूर्खता को दूर करने के लिये उत्तम लोगों ने सदा प्रयत्न और उद्योग किये हैं, परन्तु वेह जानते थे कि हम अमर नहीं इस कारण उन्होंने अपने विचारों को जिनको लोगों के लिये उपयोगी समझा लिखा और समझा, कि दिया सलाई की समान जहां यह रगड़ें जावेंगी मूर्खता के अंधकार को दूर करदेंगी, वह विचार क्या है? वह विद्या और गुणों की पुस्तकें हैं, यदि मनुष्य की बुद्धि काई

नरी दर्पण के समान है तो बहुधा विद्या की पुस्तकें उसको मांज कर साफ करने वाली हैं। यदि विद्या केवल मनुष्य के हृदय में ही रहती तो अब तक सर्व नाश हो जाती (धन्यवाद है कि वह लिख ली जाती है संसार उन्नति करता जाता है) और भले लोगों के परिश्रम का कोष न रहता। अर्थात् बिना सत्कार या परस्पर द्वेष वा मत मतान्तर की ईर्षा और कुछ और कारणों से पुस्तक मिट जाती है॥

४। परन्तु बड़े आनन्द का विषय है कि ईसवी सम्बत् के पन्द्रवें शतक में छाप का काम जान कटन वर्ग जरमनी निवासी ने निकाला। जिससे पुरानी पुस्तकों के मुर्दे शरीर में फिर के से जान आगई। और नई के लिखे जाने तथा अनुवाद करने के लिये उत्तम अवसर दिया। और हमें बड़े घमंडसे यह धन्यवाद करना उचित है कि यह ईसवी सम्बत् का उन्नीसवां शतक है जिसमें हम उत्पन्न हुए हैं छापे में बड़ी उन्नति करने वाली है इसमें नयी २ युक्तियां और सुधार छापे में हुई हैं। छापा निकलने से पहिले पुस्तकें बहुत कम थीं और बड़ी महंगी मिलती थीं, लेखक से पुस्तक लिखाने में अब भी चालीस गुण अधिक खर्च पड़ता है और फिर भी हस्ताक्षर ऐसे उत्तम और शुद्ध नहीं होते हैं जैसे छापे में होते हैं, बहुधा ग्रंथकारों की पुस्तकें नाम न होने वा खोय जाने से मिट जाती थीं, अब जो पुस्तक एक बार छप जाय तो फिर भय नहीं कि वह नाश को

प्राप्त हो, हां लाभ कारी होने की दशा में वह कम मिलने लगती, प्रेस पुस्तकों के लिये यथार्थ में अमृत है जिसने एकबार पी लिया कि अमर हुई॥

(५) गरीबी के कारण बहुधा बालक विद्या प्राप्ति से खाली रह जाते थे मानो विद्या धन पात्रों के लिये थी, परन्तु अब छापे के कारण विद्या सब के लिये एकसा सहज है, इसके द्वारा समस्त संसार के नये २ समाचार पत्रों के द्वारा विदित होते रहते हैं, और दूसरों के अनुभव से हमें लाभ प्राप्त होता है घर बैठे संसार का सब हाल देख रहे हैं, प्रत्येक जन को स्वतन्त्रता प्राप्त है कि अपने विचारों को बिना रोक टोक प्रगट कर दे. एक छोटे से छोटे २ को अधिकार है कि अपनी जाति अपनी गवर्नमेंट के लिये स्वतंत्रता से सम्मति दे। निस्सन्देह सभ्यता और विद्या गुण फैलाने के लिये प्रेस सूर्य है, जिधर वह गया उधर उस ने मूर्खता के अंधेरे को दूर कर दिया, जिस प्रकार जुल्लाब लेने से कोठे को मल सब शुद्ध होजाता है इसी प्रकार प्रेस का प्रकाश सब कोनों से अज्ञान अंधकार को ढूंढ़ २ कर निकाल देता है, थोड़ा ही सा समय हुआ है कि ब्रिटिश गवर्नमेंट के यहां स्थापित होने से प्रेस का सूर्य यहां उदय हुआ है और अभी कुछ चढ़ा है, आशा है, हमारी ओर आकर वह समस्त देश को प्रकाशित करे, देश को उचित है कि उस का पूरा आदर करे॥

रहन सहन।

मनुष्य जीवन अधिक तर जल, वायु, अग्नि, पर निर्भर है जिनको ईश्वर ने उन के लिये सिरजा है जिसमें मनुष्य का पैसा खरच नहीं होता, भोजन, वस्त्र, स्थान, और थोडी दूसरी जरूरतें ऐसी हैं जिनके बिना देह कुछ समय तक कभी जी भी सकता है परन्तु जिन के पूरा करने में वह बहुत श्रम भी करता, यदि प्राचीन काल को पूछो तो मनुष्य प्रथम बनमानसों के समान जंगल पहाड़ पहाड़ों की गुफा निरजन बनों में रहा करते, बनसपतियों को खाते नङ्गे शरीर रहते और वृक्षों की छाल से अपने शरीर को ढकते थे, यदि कोई आज की दशा को उस समय की दशा से मिलाये तो उसको कदापि विश्वास न आवेगा कि मनुष्य जाति कभी ऐसी जंगली दशा में थी, जिन्हों ने अब भी हिन्दुस्तान के जंगलियों को देखा होगा वह तो मान लेंगे क्योंकि दूसरे जीवों के समान वह भी वन में माने जाते हैं, बोलने की जगह चीं २ करते हैं, छोड़ दो तो हाथपांव के बल ऐसा भागते हैं कि शीघ्र हाथ नहीं लगते और आदमियों के साथ रहना पसन्द नहीं करते, हमारी गवर्नमेन्ट ने बहुत से जंगलियों को जबरदस्ती आदमी बनाया है, इन जंगलियों की दशा देख कर वा पढ़ कर हमें दूर की सूझती है कि मनुष्य भी दूसरे पशुओं के समान उत्पन्न किया गया होगा, क्योंकि अभी

तक जहां मनुष्य कठिनाई से आते हैं वहां जंगली पाये जाते हैं, फिनलैण्ड और ग्रीनलैण्ड में आदमी बसते हैं जहां सिवाय मछलियों और बारह सिंहों के और कुछ नहीं मिलते बर्फ में गढ़े से घर बनाकर रहते हैं, एक जन शिकार करता है सब मिलकर खाते हैं. जीवन की जरूरतें जो इसे पास आती हैं वह उनसे अलग हैं, जो बोरता वह शिकार खेलने में दिखाते हैं वह हमारी सामर्थ से बाहर है कुछ आश्चर्य नहीं है कि और टापू भी मनुष्य जाति से बसे हों, गो मनुष्य इसमें सभ्यता सीखकर यहां बसे हों. परन्तु अभी उनको बहुत कुछ सभ्यता सीखना शेष है जितनी सभ्यता में उन्नति होती है जीवन की आवश्यकताएं भी साथ ही साथ बढ़ती जाती हैं, उनको पूरा करने को मनुष्य खेती. वणिज, वा शिल्पकारी कारीगरी मजदूरी, आदि काम करना है इन सब के पूरा होने के लिये मनुष्य को एक दूसरे का आश्रा कारी होना अवश्य है जिससे एक दूसरे के सहायक बने. इसके साथ एक मध्यस्थ का होना जरूरी है जो एक दूसरे के मेहनत के बदले दिया जावे और लेने वाला उससे जो वस्तु चाहता ले ले. किसी २ देश में चाम कपड़े के टुकड़े वा तांबे वा चांदी के ढेले चलते थे और अब भी चलते हैं. परन्तु हिन्दुस्थान में रुपया बहुत दिनों से चलता है विशेष कर अंगरेजों ने उसको और भी उत्तम सूरत का बनाया है और उसके भाग भी बना दिये हैं यदि यह न होता तो जो प्रबंध और मनुष्य की कारीगरियां बीरता और

मुख देखते हो एक भी न होती. अब सब उद्यमों के वर्णन का अवसर आ गया है संक्षेप रूप में सब के विषय थोड़ा २ लिखने का विचार है॥

॥ खेती करना ॥

खेतीका उद्यम हमारे देशमें सदा उत्तम माना गया है, ईश्वर ने भारत वर्षकी भूमि को खालो पड़ा रहनेके लिये नहीं बनाया यहां राज जो आमदनी मुख्य करके खेती के काम से निकाली जाती हैं, जितनी उस में उन्नति की जायगी देश में धन और राज में बल, अधिक बढ़ता जायगा. इसी हेतु सरकारने किरोड़ो रुपयों के खरच से खेत सींचने के लिये नहरें खुदवाई हैं और अभी खोदी जायेंगी। एक हम हैं जो अपनी प्राचीन खेती करने की रीति में कुछ भी उन्नति नहीं करते और पूर्वजों की केवल नकलही करते हैं, परन्तु वह समय शीघ्र आने वाला है कि हमारा देश कृषी कर्म में बड़ा चमत्कार दिखादेगा क्योंकि पश्चिमोत्तर देश और बंगाल में बहुत विद्यार्थी कृषी विद्या सीखने के लिये योरप भेजे गये हैं * सरकार ने प्रजा का सुख

---

* मैने लण्डन के कृषी विद्या के कालेजके मुख्य अध्यापक टेनर

विचार कर ज़मीन का कर ऐसे अन्दाज़ से नियत किया है कि जिसमें सरलता से दे दिया जावे ।

यह बात बंगाल और दूसरे सूबों में है जहां इस्तिमरारी बंदोबस्त है और पश्चिमोत्तर देश में तो विचारे जिमींदार पीस डाले गये हैं ऐसी कड़ी जमा नियत है, बराबर तीसवें साल बन्दोबस्त होना सरकार के अत्यन्त लोभ का चिन्ह है—अनुवादक ॥

यदि ज़मीनदार व्यर्थ व्यय करने वाले न हों और उनके खेत दैवी आपतों से बचे रहें तो सरकार का कर देकर उनको बहुत कुछ बच सक्ता है ॥

यदि धरती का कर कड़ा होता तो हम अब तक धरती छोड़ कर भाग गये होते, मेरे एक मित्र की सम्मति है (जिसको मैं ठीक नहीं मानता) कि यदि ज़मीनदारों की दशा सुधरनी हो तो लगान कड़ा कर लेना चाहिये परन्तु साथही हम यह कहते हैं कि यह बड़ी मेहनत का काम है, जाड़े की ऋतु में जब लोग कोठों में तो शक लिहाफ ओढ़े हुए रात को सोते हैं

साहब के ग्रन्थ " कृषी विद्या के मुख्य सिद्धान्त" का हिन्दी में उल्था किया है, उसमें वह सब विधि लिखी है जिसे धरती की उपज में उन्नति हो मूल्य ।/)॥ काशी नाथ, सरसा ज़िला इलाहाबाद॥

वह बिचारे हाथ में कुदार लेकर खेतों में पानी देते हैं, ग्रीष्म में जब लोग ठंडे कमरों में वा वृक्ष की छाया में बैठे रहते हैं तो यह धूपमें हल चलाते रहते हैं वा खरयान बनाते रहते हैं, वर्षा में जब मूसलाधार पानी पड़ता है लोग अपने २ घरों में दबके बैठे रहते हैं तो यह हाथ में खुरपी लिये खेतों की कियारियां सम्भालते फिरते हैं वा अधिक पानी निकालने में लगे हैं। वा इरातों में बैलों का चारा काटते रहते हैं, अब फसल पकी अन्न निकला कि साहूकार यमराज के समान आगे दृष्टि पड़ा वर्ष भर की कमाई वह ले जाता है वा सरकार का सिपाही यमदूत के समान मालगुजारी पटाने को आ मौजूद होता है, जो बड़ी कठिनाई से दीजाती है, जो ऐसी मेहनत से कमाया जाता है उसको गवैयें मुल्लाओं आदि को बांट दे डालते हैं. विवाह पर वा बूढ़े की मृत्यु पर वह रुपयों को कौड़ियों के समान लुटा देते हैं, हजारों के ऋणी होजाते हैं यहां तक कि साहूकार का ब्याज दरब्याज उनकी धरती बिकवा लेता है, वह लाचार हो कर ऐसे काम करते हैं जो मूर्ख ही करते हैं जिनके कारण जेलखाने जाते हैं और अपने दुष्ट कर्मों का दण्ड पाते हैं. इस कारण सरकार प्रयत्न कर रही है कि वह पढ़ें और भलेबुरे कामको पहचानकरें, इनको अपनी सहायता आप करने के सिद्धान्त सिखाये जाते हैं, कोई२ कहते हैं, कि सरकारने इस उद्यम पर इतना टैक्स क्यों लगा रक्खा है। और किस

लिये आमदनी कर था, इस से बढ़ी हुई है, वह भी स्थावर धन है परन्तु याद रखना चाहिये जैसा यह उद्यम बोझा उठाने योग्य है ऐसा दूसरा नहीं है। इस में एक से अनेक हो सक्ते हैं। हां कुछ पूंजी और मेहनत चाहिये, यदि दैवी आपत्ति से बचे रहें, और वर्षा आवश्यकतानुसार होती रहे। धर्म और राजनीति के नियमानुसार राजा को उचित है कि राज प्रबन्ध के लिये ज़मीनदारों से यथोचित करले। दूसरे जंगम धन से पक्की आमदनी नहीं की जायभी और खरच के सामने उस की आमदनी इतनी नहीं हो सक्ती है कि उस पर सरकार का भी कर रहे, ऐसी दशा में उस पर टैक्स लगाना प्रजा पीड़न है। ज़मीनदारों पर ही टैक्स लगाना इस कारण न्याय समझा गया है। इसी कारण ज़मीनदार सच्ची प्रजा हैं और दूसरे नहीं हैं। यदि ध्यान से देखिये तो कोई वस्तु हमारी आवश्यकता की ऐसी नहीं है जिस पर सरकार का टैक्स नहीं है। क्योंकि वह टैक्स सरकारी ही काम में लगाया जाता है। परन्तु देना तो हमें पड़ताही है इसी पर राजबल निर्भर है यदि ज़मीनदार बुद्धिमान और वारि में खरच करने वाला हो तो हल चलाने, अन्न दबाने, सींचने, पशुओं, का चारा उत्पन्न करने में नाना प्रकार की युक्तियां कर सक्ता है जिस से वह शीघ्र ही धनप्राप्त हो जायेगा। जैसे खेती के उद्यम का शत्रु अकाल है वैसेही सस्ती भी है। जो दूरदर्शी होते हैं वह दोनों अवस्थाओं

को विचार करके चलते हैं, साहूकार और पटवारियों के बोझ से बचे रहें। और प्रयत्न करें कि अदालत में जाने का अवसर न पड़े। परन्तु यह कहां हो सकता है। जब तक इन लोगों को पूरी शिक्षा न हो जिस में नीति और धर्म की शिक्षा भी हो तब तक उनकी दशा सुधरने की आशा नहीं। गवर्नमेन्ट का कर्तव्य है कि उनके सुधार और भलाई के लिये सदा चेष्टा करती रहे। यदि सरकार इन पर पूरी दया करे तो इनको ज़बरदस्ती शिक्षा का प्रचार दे क्यों कि यह मूर्ख नहीं जानते कि हमारा किस बात में लाभ है और किस में हानि। जिस प्रकार यह कानून जारी है कि जबरदस्ती टीका लगाया जावे इसी प्रकार उन को शिक्षा देने के लिये कानून जारी होना चाहिये। और पचास सैकड़ा पीछे जब पढ़ जावें तब उस कानून को मिटा देना उचित है। यह ज़रूर नहीं कि समस्त देश के लिये यह हो। वहां केवल वहां हो जहां म्यूनिसिपल या लोकल वा डिसट्रिक्ट बोरड ऐसी इच्छा प्रगट करें। और जब ठीक काम होने पर वह सभा उस कानून को ज़रूरी न समझे तो उस को हटवा दे। ज़मीनदारों को साहूकारों के पंजे से बचाने के लिये प्रत्येक तहसील में एक सरकारी बैंक खोल देना चाहिए जहां उन को बड़े ज़रूरी कामों को पूरा करने के लिये हलके ब्याज पर रुपया ऋण मिला करे। यदि यह सम्मति न होवे तो सरकार अपनी ज़मानत पर दूसरे लोगों को

उत्साह दिखावे कि वह ऐसो बैंक खोलें। अदालत की खराबी से बचने के लिये प्रतिष्ठित और योग्य लोगों का दिहात में दीवानी मामले फैसले करने के लिये अधिकार देने चाहियें। पंचायतें नियत करदें, हमें शोक है कि लोग अपने निज के कामों में भी सरकार की सहायता चाहते हैं इस को उनको मुद्दतों से आदत पड़ गई है। अब गवर्नमेन्ट को भी उचित है कि वह सदा हमारी उचित और अनुचित प्रार्थनाओं पर यथा योग्य विचार किया करे यद्यपि यहां यह प्रार्थना करना बेअवसर है तो भी सचित यह चाहते हैं कि सुशिक्षित देशियों का पूरा विश्वास किया जावे। और वह अधिक मुल्की और जंगी कामों पर नियत किये जावें और उन पर अधिकार प्रतिष्ठा और आदर की दृष्टि से देखा जावे, और उन के कर्तव्य पर पूरा भरोसा किया जावे। हमारे लाभ के लिये हिन्दुस्तान में भी पारलीमेन्ट नियत हो यदि यहां अभी पारलीमेन्ट स्थापित न हो सके तो उचित है कि योग्य हिन्दुस्तानी इङ्गलैण्ड की पारलीमेन्ट में दाखिल किये जावें। हमें वालन्टीयर में दाखिल होने की अनुमति हो। हथियार के कानून को बहुत कुछ नरम कर देना चाहिये। शिल्पकारी और नाना प्रकार के गुण और हुनरों के स्कूल स्थापित कर दिये जावें। अदालतों में फीस काम कर दी जावे। काले और गोरे का भेद उठा दिया जावे। अभिप्राय यह कि हमें भी सच्ची स्वतंत्रता और न्याय का स्वाद

चलाया जावे और हमारे अधिकार भी ब्रिटिश प्रजा से किसी बात में कम न रक्खे जावें ॥

वणिज।

मनुष्य के व्यवहार में वणिज भी एक उत्तम उद्यम है। उस की सूरतें और दशा अलग २ हैं। उस की हानि और लाभ ऐसे विदित हैं कि वर्णन करने की आवश्यकता नहीं। दूकानदारी साहूकारी, सराफी, भी वणिज है। एक स्थान से दूसरे को ले जाकर वा एक से दूसरे का मंगवा कर माल लेने बेचने का नाम वणिज है। इसी प्रकार के व्यवहार को जो चाहे रेल के रास्ते हो चाहे धरती वा समुद्र के हो वणिज कहते हैं। आर्य्य लोग इस उद्यम को इस कारण मध्यम कहते हैं कि वह स्वयम् इस में बड़ा उत्साह नहीं रखते वह कहीं जाते आते नहीं। घर बैठे बातें बनाते हैं। परन्तु जब हम उन उद्यम पर विचार करते हैं जो हमारी दृष्टि के सामने है तो हम इस को सब से उत्तम उद्यम मानते हैं। हमारे हाकिम केवल धन में इसी के द्वारा बढ़े हैं किन्तु ऐश्वर्य्य और बल में भी। यदि मनुष्य आपस में लिया दिया न करते और एक जन अपनी वस्तु को दूसरे से

न बदलता तो संसार की यह उत्तम दशा जो अब देखते हो कदापि न होती। हमारे जीवन की सब ज़रूरतें इसी उद्यम के द्वारा पूरी होती हैं। इस में जितनी स्वतंत्रता सरकार देगी और व्योपारियों की रक्षा करेगी उतना ही देश में धन की वृद्धि होगी। पहिले राजों में जितना धन बल माल की रक्षा में खर्च होता था अब उतना शांति और अमन रहने के कारण (जो अंगरेज़ों के राज में प्राप्त है) विचार में भी नहीं आता। वणिज के समाचार पत्र हमें सम्मति देने को तैयार हैं। वह अपने देश वा नगर की वस्तुओं का भाव बताते हैं गांव २ के जाने आने के लिये रास्ते बनाये गये हैं भय के स्थानों पर पुलीस की चौकियां स्थापित हैं कि वणिक और दूसरे यात्री बिना भय यात्रा कर सकें। देश में बहुत डाकखाने खोल दिये हैं कि प्रत्येक जन पैसे खरच करने पर देश में जहां चाहे जिसे चाहे जिस मतलब की चाहे चिठी भेज दे। रुपया चाहे मनीआर्डर करके भेज दे वा टिकट वा हुन्डी रजिसट्री करा कर रवाने करदे। जमा करना हो तो डाकखानों के सेविङ्ग बंक में जमा करदे एक तो धन सु-रक्षित रहेगा दूसरे कुछ व्याज़ भी मिलेगा। खबर या रुपये की बहुत जलदी भेजने की ज़रूरत हो तो तार मौजूद है। कहीं टेलीफून यंत्र लगाये गये हैं कि दूर रहने पर एक दूसरे से बात चीत करलें। जल्दी ज़रूरतों के लिये सरकार ने हिलोग्राफ (छापा डालने वाला शीशा) बनाया है कि उसको झलक में

अपनी फोज को भेद की बातें बता दो जावें वह चाहे कई कोस पर हो। सिवाय इस के कबूतरों से भी चिट्ठी ले आने का काम लिया जाता है। माल उठाने को रेलवे जहाज़ अग्निबोट हैं। देखो बहुधा व्योपारी आप आधीन होने के बदले दूसरों पर आज्ञा करने वाले हो जाते हैं। बढ़ती दौलत में नौकर चाकर गुमाश्ते, मुनीब, सेवक हाथ जोड़े सामने खड़े रहते हैं आज्ञा पूरी करने में उद्यत रहते हैं। बहुधा गरीब उत्तम प्रबन्ध से देखते २ धनवान् हो जाते हैं, और रुपये वाले ठीक न चलने से दिवालिये बन जाते हैं। परन्तु इस में सन्देह नहीं है कि यदि सावधानी और ऊंचनीच के विचार से वणिज किया जावे और बहुत नफे की आशा में माल बंद करके न रक्खा जाव तो इस से बढ़ कर दूसरा द्वारा धन कमाने का नहीं है। कभी २ जो सौदागरों को आग पानीसे हानि पहुंचती है वह आदमियों को असावधानी से वा दैवी समझ लो। अब हम वर्णन करते हैं कि व्योपारी कैसा होना चाहिये ठीक लेखा लगाने वाला हो, प्यार से बर्ताव करने कराने वाला हो, किफायत से खरच करने वाला हो और भाषा ठीक लिखना पढ़ना जानता हो, जो कहे सच कहे बात २ पर जबान न बदले। कभी धोखे बाजी न करे। असभ्य लोग बहुत कम इन सिद्धान्तों के अनुसार चलते हैं। परन्तु अनुभव युक्त बुद्धिमान मानते हैं कि हमारे देश में ऐसे लोगों की कितनी ज़रूरत है। मैं सच्चे मन से चाहता हूं कि हमारे

देश में सब काम भलाई के साथ हो और हमारी कोई काम का बचन उसके विरुद्ध न हो—ईश्वर ऐसा ही करे ॥

नौकरी का उद्यम

नौकरी का उद्यम भी यथार्थमें बुरा नहीं परन्तु जब देखा जाता है कि इस में मनुष्य को अपनी स्वतंत्रता त्याग करनी पड़ती है और स्वामी के पूछे बिना कोई काम करने का अधिकार नहीं रहता और आज्ञा पालन का पूरा सावधानी करना पड़ता है तो इससे निकृष्ट कोई उद्यम नहीं समझा जाता। इस कारण आर्य्य सुजन इस को सब से नीच कर्म मानते हैं। परन्तु अंगरेजी राज्य में नौकरी का आदर पहिले राजों की अपेक्षा बहुत अधिक है। नियमानुसार चलने और कर्तव्य को पूरा करने में अब बहुत आग्रह होता है, परन्तु यदि कोई कर्मचारी अपनी सीधी राह चला जावे और अपने कर्तव्य को यथोचित पूरा करे तो कोई उसको दुःख नहीं दे सकता किन्तु बहुत शीघ्र उस का पद बढ़ाया जाता है। यदि कोई नौकर बेचारा नौकरी से छुटाय दिया जावे वा मुअत्तिल कर दिया जावे तो वह हाकिमके सामने फिरयाद कर सकता है और अपना पद पाता है। वाह यह भी

क्या अच्छी राज्य है कि हाकिम के ऊपर भी नालिश हो सकती है, सब का अपना दुःख कहने का अवसर मिलता है। देखो नौकरों की वेतन नियत है, समय बांधा हुआ है कि इतने दिन तक नौकरी करके अलग हो जावे शेष जीवन आराम में व्यतीत करने के लिये पेंशन दी जाती है कि प्रतिष्ठा से रहैं। बहुधा नौकर वस्त्र उत्तम भोजन पवित्रताके अभिलाषी रहतेहैं। हमारे देश में जितना अब नौकरी करन की इच्छा हुई है पहिले कभी नहीं हुई थी परन्तु यह अभिलाषा उत्तम नहीं। यद्यपि जितनी संख्या अब नौकरों की है पहिले कभी नहीं हुईथी परन्तु यह कब सम्भव है कि सारे देशकी इच्छा पूरी होसके। जितना परिश्रम लोग नौकरी के खोज में करते है उतना दूसरे उद्यम में करते तो बहुत सरलता से जीविका कर लेते। सुनो नौकरी के उम्मेद करने वालो तुमने यह पुरानी कहावत सुनी होगी " चाकरी यारी चाकरी बिना वसीले नाहिं "अब भी प्रायः यही दशा है। यदि और कोई द्वारा नहीं शुभाचरण और योग्यता का पात्र ही होना चाहिये ना जो नौकरी मिले कर लो फिर तुम्हारी योग्यता का परिश्रम धर्मिष्टता ही उन्नति को आय द्वारा बन जावेगी। परन्तु "यदि इस आशामें बैठे रहैं कि हमें पहिले ही अपने पूरी योग्यताके अनुसार नौकरी मिले तो यह उस व्योपारी के समान होगा जो अपने माल को इस आशामें बंद करके रख दे, कि जब महिंगा होगा तब बेचूंगा, लाभ का होना उत्तम अवसर वा उत्तम बुद्धि पर रह

ता है, सम्भव है कि तुम्हें इस रीति पर सुफलता न हो और फिर तुम्हें उसको प्रत्याशा में भूखे मरना पड़े, कोई २ युवा तनिक लिखना पढ़ना सीख कर बगल में कलम दान दवात और कान में कलम खोंस मुन्शियों की श्रेणी में दाखिल हुआ चाहते हैं, जब सुफलता प्राप्त नहीं होती तो विद्याभ्यास से ग्लानि करते हैं, हम इस बेढङ्गी इच्छा को पसन्द नहीं करते हैं, सर्कारी नौकरी को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखना चाहिये, परन्तु सब नौकरी का ही उद्यम करने लगें तो संसार के और सब कामों को कौन करे ॥

बस पढ़ना अपनी समझ को सुधारने के लिये चाहिये केवल सरकारी नौकरी का प्राप्त करना इसका पुरुषार्थ न समझना चाहिये, और यह भी न चाहिये कि पढ़ो तुम और अहसान करो सरकार पर कि पढ़ते हो हाकिमों की गरदन पर सवार हो जावो, नहीं तुम्हें उचित है कि पढ़ कर अपनी गवर्नमेन्ट के सदा कृतज्ञ बने रहो कि उस की कृपा द्वारा तुम्हें यह योग्यता मिली तुम पढ़ कर निस्सन्देह अपने घर के काम में लग जावो, अपने बाप दादे के उद्यम को सम्भालो और अच्छी रीति से करो यदि कोई इस पर तुम्हें घर में निकाल दे या बिरादरी वाले तुम्हें शामिल न रक्खें तो हमारा जिम्मा, आशा है कि तुम औरों से अच्छा काम करोगे और अपनी जाति में सामर्थवान और अच्छे कहलाओगे, नौकरी की आमदनी बंधी होती है और खरच अधिक

हो जाता है., बहुधा लोग जो केवल ऊपर भड़क देखते हैं तो मन में समझ लेते हैं कि वह कोई बड़े धन पात्र हैं यद्यपि यह अनुमान मिथ्या होता है क्योंकि नौकर को कोई २ सूरत में बाहरी भड़क रखना ज़रूर होता है, प्रथम हम कह आये हैं कि नौकरी यदि चाहो तो बिना सहारे के नहीं होती चाहे कोई नातेदार कर्मचारी हो, वा हाकिम सहायक हो वा कोई अपना संबंधी सिफारश करने वाला हो, फिर चाहे कितने ही ऊंचे पद को पहुंच जावे परन्तु तौ भी नौकरी पराधीनी ही है, जब अपने से बड़े हाकिम की आज्ञा पालन न करो खुशामद न करो तो फिर रहोगे किस प्रकार, यदि अभाग से किसी अपराध में नौकरी से मौकूफ कर दिये जावो वा अपराध की खोज होने तक नौकरी से अलग रक्खे जावो तो बड़ा दुःख होता है क्योंकि नौकरी जब जाती रही और आदत हमारी अधिक खरच करने की पड़ी हुई है और पास कुछ है नहीं कि ऐसे समय में काम आवे, कोई हुनर जानते नहीं घरके उद्यम को जानते नहीं तब तो बड़े बिपत्ति में पड़ोगे, ईश्वर शत्रु को भी यह दशा न करे, परन्तु यदि किसी दूसरे उद्योग में प्रथम से ही लग जावोगे तो स्वतंत्र रहोगे जब चाहो उसको करो जब चाहो बंद करदो, इस के विरुद्ध नौकरी होने में सब स्वतंत्रता जाती रहती है, यहां तक कि वह अपने भाई बच्चों के दुःख सुख में भी शामिल नहीं हो सक्ता, बस हम तो यही सम्मति देते हैं कि पढ़ो

तो आदमीयत और योग्यता प्राप्त करनेके लिये और उसके उप-रान्त अपने पुरुषा के उद्यम वा किसी और काम में जो तुम्हें पसन्द हो लग जाओ और यदि कोई गुण वैद्यक, कानून वा इन जीनरो के समान जानते हो तो इन उद्यमों में नाम पैदा करो, अपने देश अपनी जाति के हितेच्छु बने रहो, उनकी भलाई के लिये सदा चेष्टा करते रहो, अपनी आमदनी और खरच का अंदाज़ रक्खो। कभी आमदनी से खरच मत बढ़ने दो, किन्तु ऐसी किफायत से रहो कि बिपत्ति के समय कुछ बचा रहे। यदि हमारे उपदेश पर कान न दोगे तो फिर बिगड़े कामपर बिपत्ति में पड़ोगे। गवर्नमेंट ने डाकखानों में सेविङ्ग बङ्क खोल दिये हैं उनसे फ़ायदा उठाना तुम्हारे आधीन है॥

दस्तकारी

दस्तकारी भी जीविका का उत्तम उद्योग है। लुहार बढ़ई दरज़ी, सुनार, रङ्गरेज़, धुनियां, रङ्गसाज़, राज, मोची, धोबी, आदि अपने २ काम में लगे रहते हैं। और जितना काम मनमें आता है करते हैं। इन में उन मज़दूरों को मत शामिल करो जो रोजीने पर काम करते हैं। और उन की देख भाल लगाने

वाले के ज़िम्मे होतो है। ऐसे मजदूरों को स्वतन्त्रता एक नियत समय तक दूसरेक हाथ में हो जाती है। यह नौकरीकी किस्म में दाखिल हैं॥

हमारे देशी भाईयों ने दस्तकारी में भी कोई उन्नति आज कल नहीं दिखाई। पूर्वजों के पद पर पद रखने में मिटे मरते हैं लकीर के फकीर बने हुए हैं। मानो यह समझे हुए हैं, कि जो कुछ वह जानते हैं बस उस के आगे और कुछ नहीं है। यह उनकी भूल है क्योंकि जितने मनुष्य के काम हैं वह कोई दोष से खाली नहीं हैं। जो वस्तु आज से ३० वर्ष पहिले हमारे पसन्द थी अब उनकी ओर देखने को मन तक नहीं करता, किन्तु जब हम देखते हैं कि विलायत की बनी चीजें सफाई, दृढ़ता, चमक, हलके पन में बहुत उत्तम होतीहैं और मूल्यमें भी सस्ती होती है इसी कारण हमारी बनाई चीजें पीछे पड़ती हुई चली जाती हैं अब तो फाकेमस्ती में हमारे दिन कटते हैं, फिर नहीं मालूम हम किस घुमण्ड में अफलातून बने बैठे हैं। इस का मुख्य कारण यही है कि हमने अभी विद्या की सामर्थ से काम लेना प्रारम्भ नहीं किया। वा अब तक विद्याकी सामर्थ्यसे काम लेना प्रारम्भ नहीं किया। वा अबतक विद्याकी शिक्षासे खाली हैं। इसी कारण नई युक्तियां हम नहीं निकाल सके। गवर्नमैंट का यह अनुग्रह हमारे ऊपरहै कि यहां के कारीगरोंकी बनाई हुई चीजों का बहुधा दर्शनालयों में दिखाती है और उन पर

पारतोषिक देती है। दस्तकारी के मन्दिर से खोले जाती हैं। कहीं २ मुख्य मेलों में इनकी विक्री होती है। यदि इसी प्रकार नित्य प्रयत्न किये जायेंगे तो एक समय में हम योरपके मुहताज न रहेंगे परन्तु हमारी वर्तमान दशा महा शोचनीय है। इसका कारण यह है कि हमारे देश म रूई दो तीन सेर के भाव से योरप को जाती है उस के वहां से नाना प्रकार के वस्त्र बनकर आते हैं और यहां बहुत महंगे भाव पर बिकते हैं। यदि हम यहां बनाया चाहें तो वैसे बिना कलके न बनेंगे जो बनते हैं वह बुरी सूरतके और अधिक मूल्य क होते हैं यहां तक कि हमारे पहिनने को सूती ऊनी कपड़े सोने को कांच और बिल्लरे, बैठने को मूंढ़ा और कुरसी, आग जलाने को दियासलाई की डिबियां हुक्का पीने को चुरुट, हाथ में रखने को सुन्दर छड़ियां, पांव को बूट, हाथमें लेनेको रूमाल, धूपसे बचाने को हलके उत्तम रङ्गीन छाते, लिखने पढ़ने को सब सामग्री, किताब, छुरी, कैंची आदि नेत्रों पर लगाने को ऐनक, जेबघड़ी, क्लाक, खाने की उत्तम रङ्गों की मिठाइयां बिसकुट, पीने को ब्रांडी, सोडावाटर, रेल चलाने की अञ्जन कील कांटे आदि विलायत से आती हैं, इन को हम मूल्य लेकर अपने नित्य व्यवहार में लाते हैं परन्तु इस से देश का धन सब बाहर खिंचा चला जाता है इसकी किसीको खबर भी नहीं। यदि हम ध्यान पूर्वक देखें तो जान पड़ेगा कि हम इस से निरधन रंक हुए जाते हैं। जब तक हम आपस में मिल

कर कारखाने न खोलेंगे तो देश की जाती हुई दौलत को कैसे थाम सकेंगे जैसे फलालैन के पहननेसे अन्दरकी गर्मी थम जाती है और बाहरकी गर्मी अन्दर नहीं आसकी, इसी रीति से अपने कारखाने बनाने से देश का धन देशमें ही रहेगा और बाहरकी वस्तु आप ही आनेमें बन्दहो जावेगी। जैसा काला रङ्ग अन्दरकी गर्मी को अन्दर ही रख कर बाहर की गर्मी को सोख लेता है इसीप्रकार देशी कारखाने प्रथम अपने घरकी जरूरतें पूरी करके फिर बाहर भी माल भेजने लगेंगे, इसमें उचितहै कि ऐसे कारखाने खोलें। परन्तु यहकाम कठिन है। इसका हेतु यहहै कि हमेंएक दूसरेपर विश्वास नहीं और सृष्टि का सबकाम विश्वासमें चलता है। कोई २ छली अधर्मी, स्वार्थी लोभी, छल कर के अपना मुंह काला करते हैं उन के कारण सच्चे धर्मावान का भी विश्वास नहीं होता है। मच्छ एकमछली सब जलको गन्दाकर देती है योरप के बड़े २ कारखाने आपस के सांझे से चलते हैं। तीन सौ वर्ष से अधिकहुआ इङ्गलेंडसे एक सांझे से बनी हुई एक कम्पनी (समूह)हमारे देशमें वणिज करने आई थी, उसने किरोड़ों रुपये कमाये और अन्त को देश पर अपना अधिकार जमा लिया यह तो सर्व साधारण भी मानते हैं कि जमात करामात होतीहै परन्तु इस के अनुसार वर्ताव नहीं करते। देखो इतने बड़े देश में लखनऊ में एक कारखाना कागज बनानेका स्थापित हुआ है परन्तु अभी तक ऐसा नहीं है कि उस में साफल्यता हो इस

प्रकार कई छोटी २ कम्पनियां और कई कारखाने कपड़े के बने हैं परन्तु उन के प्रबन्ध कर्ता अङ्गरेज़ हैं,इस मे विदित है कि उन के प्रबन्ध की योग्यता अभी हमारे भाइयों में नहीं। बस जब तक पूरे उत्साह के साथ हम आप इन कामों को न सीखेंगे और उनके करनेमें मन न लगावें तबतक इनमें साफल्यता होने की आशा नहीं। मेरी, समझ में जब तक सच्ची शिक्षा का न प्रचार होगा हमें अपनी साफल्यता में कोई भरोसा नहीं करना चाहिये *।

ग्रेट ब्रिटन ने जो कला कौशलता में इतनी उन्नति की है और नित्य करता जाता है और उसके द्वारा धन धान्य मे परि-पूरित होगया है उस का मुख्य कारण यह है कि बस्ती के विचार से उस देश का विस्तार हमारे देशकी अपेक्षा बहुत कम था और उसमें भी कुछ ऊसर धरती हैं, इस कारण रुपया कमाने

---

* आगरे में सेठ मानसिंह ने केवल अपने परिश्रम और उद्योग से छः लाख के खरच से कपड़ा बुनने की कल, नवम्बर १८८८ मे खोली है। काम उत्तम रीति से जारी है। यह सुजन इस काम को इतना समझता है कि इस न बहुधा काम मकान और कल तैयार करने का आपही बिना किसी अङ्गरेज़ की सहायताके किया है। यदि हमारे धनाढ्य इस तौरका नमूना देखकर ऐसेकारखाने खोलें तो देशका दारिद्र मिटे काआशाय॥

के लिये जिससे निर्वाह हो वहां के निवासियों को दूसरे द्वारा खोज करने पड़े केवल यह नहीं कि कारोगरी और गुणों में ही उन्होंने उन्नति की किन्तु धरती को भी ऐसा बहु मूल्य और उपजाऊ बनाया कि वहां जोतकर भूमिका स्वामी भी हमारे देश के एक साधारण राजा व इस की योग्यता रखता है उन के विरुद्ध एक हम हैं कि भारत वर्ष को पृथिवी तल में स्वर्ग और सुवर्ण का स्थान समझ कर हाथ पर हाथ रख कर बैठे हैं। माना कि इस देश में जीवन की आवश्यक वस्तुएं थोड़ी मेहनत से मिल जाती हैं और धरती भी अच्छी है परन्तु हमें समयकी आवश्यकतानुसार नई विद्यामें विश्वास प्राप्त करने खेतीके काम में यथोचित उन्नति करना चाहिये * जो चेष्टा और प्रयत्न हम

* मैंने एग्रीकलचरल, कालिज लंडन के मुख्य अध्यापक प्रोफेसर टेमर के ग्रंथ " खेती की विद्या के मुख्य सिद्धान्त " का देश हित के लिये अनुवाद किया है, इस में योरप की नई विद्याओं के अनुसार धरती को अधिक उपजाऊ बनाने, नाना प्रकार के खाद बनाने, डालने, कौन सी जिन्स और धरती में कौन खाद अधिक लाभ कारी होता है, जोतने बोने, जिन्स बदल कर बोने पशु पुष्ट करनेकी उत्तम विधि लिखी है दो बार इसकी कई सहस्र प्रति छपचुकी हैं। महाराज नाहन ने २००० प्रति एकसाथ इसकी ली है मूल्य ॥=)॥ है जिसको इच्छा हो मुझ से मंगवाय ले—काशीनाथ, सिरसा ज़िला इलाहाबाद ॥

आज कर रहे हैं यदि पहिले से करते तो हम क्यों विदेशियों के आश्रित और आधीन होते। अब भी आपको दशा सुधारने को यह विधि है कि स्थान २ पर दर्शनालय खोलें और अपने भाइयों को देशी कारीगरी और गुणों पर ध्यान दिलावें सम्भव है कि हमारा वह भय जाता रहे जो इस शान्तिमय राज में वस्तों के बढ़ने और आहार के वस्तुओं के कम होने से उत्पन्न हुआ है। आप जानते हैं कि जिस मनुष्य जाति वा देश की दशा विद्या और बुद्धि के अथवा अधिकार वा सामर्थ्य के विचार से अन्त दर्जे तक बिगड़ जाती है तो फिर उस में सुधार करने की चिन्ता होती है। ऐ भाइयो अब वह समय आगया कि हम सब मिल कर अपनी दशा सुधारने की चेष्टा करें और अलग २ दशोन्नति करने में लग पड़ें। जब सब इस रीति करके लगेंगे तो दशा के सुधार होने की आशा हो जावेगी। वही देश भाग्यवान गिना जाता है। जिस में ऐसे लोग बसे रहते हैं। परन्तु बड़ी खराबी तो यह है कि हमारे भाइयों में ईर्षा द्वेष बहुत है। सिवाय थोड़े गिने लोगों के और किसी को दशोन्नति की चिन्ता नहीं सब को ऐसी चिन्ता शीघ्र होनी उचित है*।

---

* मेरा लेकचर "देश का सुधार किस विधि होना सम्भव है,, देखिये मूल्य ≠)॥ अनुवादक॥

भीख मांगना ।

किसी दूसरे की कमाई में बिना किसी विधि का अधिकार के भागी पूर्ण रीति से अन्याय है, लोगों को यह प्रेरणा करना, उपदेश करना कि हम को ईश्वर की राह पर देना पुण्य है शुभ काम है परलोक की भलाई है, यहां एक देोगे तो आगे दस मिलेंगे, अर्थात् भय और आशा का जाल बिछा कर वह जो लोगों को लूटते हैं उस कमीने और निकृष्ट काम को भिक्षा व्रत वा भीख का उद्यम कहते हैं। प्रथम इस बात का जानना उचित है कि दान किस को देना चाहिये जो यथार्थ में पुण्यार्थ हो। अनाथ बालक, विधवा, वृद्ध स्त्री वा पुरुष जिस का कोई पालन करने वाला न हो, पागल, पगु, लूला, अंधा आदि वह सब जो अपनी जीविका आप करने योग्य न हो, विपत्ति का मारा, रोगी, मुसाफिर वा वह जन जिस का घर वा सब माल असबाब नष्ट होगया हो वा आग से जल गया हो पानी में डूब गया हो वा जिन को चोरों ने लूट लिया हो, वा वह जो दुराचरण से ऋणी न हुआ हो यह सब हमारी दया के पात्र है। परन्तु किसी एक मुख्य समूह वा जाति को दान पात्र कह कर देना पुण्य नहीं है युवा वा ऐसे को देना जो अपनी जीविका आप कर सक्ते है देना पुण्यार्थ नहीं किन्तु उलटा पाप है। यदि वह तुम से पाये हुए धन को कुमार्ग में लगावेगा तो तुम भी उस में भागी समझे जावोगे क्योंकि मु-

म्हारे देने से उस ने वह पाप किया, जो जान बूझ कर चोर को चोरी के औज़ार देदे यद्यपि आप चोरी न करे तो भी चोरी करने के समान अपराधी हुआ, माना कि वह तुम्हारे दिये धन को बुरे काम में न लगावे तो भी तुम्हारी उदारता उस को निकम्मा बनाये रहेगी . इस में तुम मनुष्य जाति का बुरा कर रहे हो किन्तु विश्वम्भर का सामना करते हो और उसके नियम के विरुद्ध आचरण करते हो,जब कि उस ने उसको बुद्धि, शारीरिक सामर्थ कमाने को दी है उस को आरोग्य बनाया है. उसके सब अंग ठीक बनाये तो तुमलोग उसकोधन देकर आलसी बनाते हो और जान बूझ कर इस के नियम को तोड़ते हो,बस हमें दोनों प्रकार के लोगों पर शोक है, एक वह जो तनिक समय के उलट फेर होने से भीख मांगना आरम्भ कर देते हैं दूसरे उन पर जो उनको दान देते हैं जो उसके पाने के योग्य नहीं, जैसे हिंसक दुखदाई जीव को इस लिये जीता छोड़ना बुरा है कि वह दूसरे को दुःख देगा उसी प्रकार झूठी दिखावट, मिथ्या प्रशंसा सुनने वा बिरादरी के भय से अनुचित काम करने और व्यर्थ उदार बनने वाला पुरुष वर्तमान पीढ़ी का बुरा करने वाला है और आगे उत्पन्न होने वाले के लिये बुरा दृष्टान्त बनता है,यदि कुछ भी बुद्धि रखते हो तो मन में सोचो तो सही कि आप भिखारी बनोगे वा भिखारियों की सहायता करोगे, वा दूसरों को ऐसे कामों में जो सृष्टि के नियम के विरुद्ध हैं न

रोकोगे, तो तुम से अधिक पापी कौन होगा, हम कहते हैं कि मा, बाप, भाई, बहन, गुरु जो सब प्रकार तुम से संबंध रखते हैं उन पर भी बहुत उदारता न दिखावो कि जिसमें वह सामर्थ रखने पर भी निकम्मे आलसी हो कर न बैठें, और दूसरों पर तो व्यर्थ ऐसी कृपा करना और भी अधिक पाप है, परन्तु जब वह लाचार हों तो सब प्रकार उन पर दया करनी उचित है, स्मरण रक्खो कि प्रथम हमारे भाई बंधु घर वाले सहायता के अधिकारी हैं फिर और, जो अपने से बच रहे तब दूसरे हो सक्ते हैं॥

ज़िमींदारो तनिक ध्यान देकर सुनो।

देखते हो कि समय का रङ्ग सदा बदलता रहता है। समय के साथ २ तुम्हें भी उन्नति करनी उचित है अभी तक तुम दूसरों की नकल करने वाले हो, तनिक विचार तो करो, बराबर खेती करने से और धरती को तनिक भी सांस न लेने देने से वह निर्बल पड़ती जाती है, लोभ बस होकर इतनी धरती बो देते हो जिस की सावधानी वा पूरी सेवा होना तुम्हारी सामर्थ से बाहर होता है, जिस से उपज भी बहुत कम हो जाती है, यदि

अपनी सब धरतीके दो भाग कर डालो। आधे में पशुओं के लिये चारा रख लो और आधे में अन्न बो दो और फिर उस पर पूरी मेहनत और रखवाली करो तो उपज में अवश्य बहुतायत होगी। जिस भाग में घास रहेगी वह दूसरे साल अन्न के लिये अधिक उपजाव हो जावेगी और पशुओं के लिये चारा बहुतायत से मिलेगा। फसल हानि से बचेगी, धरती की उपज बहुत होगी। इस रीति से दोनों भाग एक दूसरे के सहायक बने रहेंगे। खाद डालने में भी तुमने पुरानी रीति को दूर नहीं किया। युरोपियन किसान मुरदे जानवरों की हड्डियोंके चूरे को खाद में मिला लेते हैं और फिर तेजाब से गलाकर काम में लाते हैं। तुम्हारे समान खाद की वस्तुओं को व्यर्थ नहीं फेंकसक्ते। तुम्हारे खेतीके औज़ार भारी और भद्दे हैं। तुम यदि विलायती हल को काम में लाना पसन्द नहीं करते तो अपने मन से ही कोई दूसरा काम में लावो जो थोड़े समयमें अधिक काम दे गहरा खोदे। कभी तुम ने इस बात पर ध्यान भी दिया है कि क्यों तुम्हारे हाथ से बाप दादों के खेत निकल कर साहूकारों के हाथ में चले जाते हैं। सुनो मैं तुम्हें बताता हूं तुम अनपढ़ व्यर्थ व्यय करने वाले और अदूरदर्शी हो इस कारण ऋणी हो जाते हो और साहूकार इस बहाने से कि कोई कानून से अब अधिक व्याद नहीं है व्याज़ दरव्याज़ जोड़ कर एक रकम कर लेते हैं और तुम्हारा रुधिर निचोड़ते हैं। इसी कारण वह धनिक और

तुम दरिद्री नित्य होते जाते हो। करज देने वा हिसाब समझने को कहा जावे तब तुरन्त नालिश दाग दें। फिर अदालत में जाने के कारण घर के काम से गैरहाज़िर रहना पड़े। गवाहों और कमीशन की फीस और अदालत की फीस वकीलों का मेहनताना मूल्य और व्याज़ पर और चढ़ता है। साहूकार से घर में फैसला कर लो तो इतना बोझा न चढ़े परन्तु यह दूरदर्शिता का काम है। मालगुज़ारी भी तुम सीधे नहीं देते यद्यपि तुम जानते हो कि यह छूट नहीं सक्ता। और न तहसील के चपरासी वे लिये टलने वाले हैं। मुट्ठी गरम करो तो तनिक सहारा मिले. यह जानते हो कि पटवारी यदि तुम्हारे आपसमें फूट न डाले और हमें लड़ा कर नाश न करें तो आप कहां से खावे। फिर भी तुम ऐसे अनसमझ हो कि उसके दम में फस जाते हो। तुम्हारी आपस के वैर विरोधसे उसको तो बन पड़ती है। परन्तु तुम्हारा सर्व नाश होताहै। जैसे तुम्हारे खेतोंके लिये चूहा टिड्डी आदि शत्रु हैं वैसे तुम्हारे लिये पुलीस पटवारी, महकमें बन्दोबस्त और हाकिम मालका दौरा है। सुनो२ तुम योग्य न होगे तुम से ऐसा ही बर्ताव होता रहेगा। अब भारतवर्ष की बस्ती नित्य बढ़ती जाती है क्योंकि अब राज्य से सब प्रकार अमनचैन है जो आगमानी की मूल है और जब ऐसा होता है तो मनुष्य की उत्पत्ति में बढ़ती होती है, परन्तु तुम कभी यहविचार नहीं करते कि धरती की उपज वर्षा के सिवा

सियोंके पेट भरने में पूरो न होगो जब कि यहां के गेहूं बेप्रमाण ढोवे हुए योरप को चले जाते हैं। यद्यपि अभो सोलह सतरह किरोड़ रुपये का जाता है। परन्तु यहो मरत रहो तो थोड़े दिनों में विलायतमें गल्ले को मांग और बढ़ जायगो। पैदावार का यहो हाल रहा तो यहांके लोगोंके भूखों मरनेमें क्या सन्देह है शोक है कि वर्षा भो अधिक वा कम वे अवसर पर होतो है वा ज़रूरत पर नहीं होतोहै। सुनो भाई तुमारे अधिक लालच से धरतो अप्रमाण बोई जातो है परन्तु उचित उपाय न करने के कारण पैदावारो नहीं बढतो, बीज डालते हो तो बहुधा खराब सडा हुआ कोडों का खाया हुआ, उचित तो यह है कि प्रति साल अपनो आमद और खरच का अन्दाज़ा करके सब से उत्तम अन्न बोज के लिये रख लो और अत्यन्त आवश्यकता पर भो उस को खरच करने का विचार न करो किन्तु जिस काम के लिये उसको रक्खा है उसो में लगाओ और उत्तम सिद्धान्त पर परिश्रमसे काम करो फिर भो उत्तम उपज न होगो तो बडा अचम्भा होगा यदि धरतो और आकाश कुछ बोच में विघ्न न डाले॥

इसमें कचित् सन्देह नहीं किन्तु तुम्हारो धरतो को उपज सिंचाव पर निर्भर है जो तुम से पूरा २ नहीं होता इसो कारण तुम प्रति ऋतु वर्षा को आशा में लगे रहते हो। ईश्वर करे उचित अवसर पर बरसे। यदि बिना अवसर के

बरसा वा अधिक बरसा तो हानि से बचने के लिये प्रार्थना करनी पड़ी यदि वर्षा न हुई तो अकाल आखें काढ़े सामने आकर खड़ा हो गया। फिर आप भी मरे और बहुत औरों को भी साथ लेकर मरे। यदि अपने खेतों के और ग्राम खाई बना कर वृक्ष लगावो वा दूसरी रीति पर अधिक वृक्ष लगावो जो बादलों से पानी खींचने में मकनातीसी का प्रभाव रखते हैं वा दूसरे शब्दों में कहा जावे तो यह अभिप्राय कि वृक्ष धरती के पेट से जल की भाप को खींच कर आकाश की ओर उसको फेंकने में ऐसा ही काम करते हैं जैसे गुब्बारा जल के ऊपर उछालने में करता है। इससे बादल बनते हैं। वृक्ष जीवों की मरी हुई हवा पीकर फलते फूलते हैं। उनसे सिवाय द्रव्य सम्बन्धी लाभ के दो और बड़े लाभ होते हैं। एक तो वर्षा जरूरत पर होती रहेगी दूसरे रोगों से जो हवा में कारबोनिक एसिड के मिलने से उत्पन्न होते हैं रक्षा रहेगी। हमें शोक है कि तुम्हारी भीतरी दशा भी उत्तम नहीं। विवाह और श्राद्ध के अवसर पर तुम व्यर्थ करने से नहीं मानते. मेहनत से कमाते हो और फिर उसे फेंक देते हो। यह सब दोष न मिटें जब तक तुम विद्या गुण न सीखोगे। और फिर देश और अपने भाइयों के लिये परिश्रम न करोगे. अपने में से किसी को इङ्गलैण्ड भेजो कि वहां जाकर खेती की विद्या सीख आवें और यहां अपने भाइयों को सिखावें, अपने उद्यम में उन्नति

करें परन्तु मैं विचारता हूं कि तुमको अभिलाषा बड़ी कठिनाई होगी, इसका कारण यह है कि तुम में जो चार अक्षर सीख जाते हैं वह फिर अपने खेती के उद्यम को बड़ी ग्लानी से देखने लगते हैं, और यह सब से उत्तम काम उनकी दृष्टि में आदरनीय नहीं रह जाता और ठीक भी है कि तहसील का एक प्यादा भी तुम पर हुकूमत दिखा सका और पुलिस का सिपाही और अपना बनाया हुआ पटवारी वा चौकीदार भी तुम्हारी प्रतिष्टा भङ्ग करसका है परन्तु इस सब का मूल मूर्खता है। इस कारण यह है कि जो जन अपनी प्रतिष्ठा आप नहीं करता उसकी प्रतिष्ठा कोई दूसरा भी नहीं करता। यदि तुम अपनी प्रतिष्ठा का विचार करो तो सब तुम्हारी प्रतिष्ठा करने लगें परन्तु यह बात योग्यता से होती है अब लोकल स्वल्फ गवर्नमेंट (आत्म शासन प्रणाली) के सभासदों के सुपुर्द यह काम सब से ज़रूरी है कि वह सर्व साधारण में शिक्षा को प्रचार दे केवल स्वार्थ के अधीन न होवे नहीं तो हमें यही कहना पड़ेगा कि अब तक हाकिमों के सामने (सत बचन) कहा जाता है कोई अपनी समझ के अनुसार सम्मति नहीं देता, थोड़े मूर्ख गंवार कुर्सियां तोड़ने को जमा हो जाते हैं जो काम उनके सुपुर्द है वह उसके करने योग्य नहीं हैं। नहीं वह यह भी नहीं जानते कि हमारा कर्तव्य क्या है किन्तु उन में कोई २ ऐसे हैं जो गरीबों पर अनुचित दाब दिखाते हैं सब

साधारण के धन को आप खा जानेकी इच्छा रखते हैं। तनिक कोई काम उनके सुपुर्द हो जो योग्यता की कलई खुल जावे, सच है जैसी नाव वैसे उसके चढ़ने वाले जैसे उनके वोटर अर्थात् चुनने वाले से उनके मेम्बर हैं, जिस ने तनिक बिनती की तुरन्त उस के लिये सम्मति दे दी। योग्यता और सुजनता का तनिक भी विचार नहीं। इसी कारण बहुधा अयोग्य मेम्बर भरती हो जाते हैं। परन्तु यह हमारा निज का काम है सरकार का इस में कुछ दोष नहीं। हमें योग्य सभासद चुनने की चेष्टा करनी चाहिये जिस में ठीक रीति से वह उनके प्रतिनिधि हो सकें। प्रथम समझ लेना कि कौन हमारे लाभ के लिये प्रयत्न करेगा कठिन है, यह सब विद्या प्राप्त से सम्बन्ध रखता है, सब प्रकार यही जान पड़ता है कि विद्या सीखना ज़िमीनदार और दूसरे लोगों के लिये आवश्यक है॥

शांति और युद्ध।

जो लोग युद्धके समय की हानियों को समझते हैं वह उसको कभी पसंद नहीं करते क्योंकि युद्ध होने पर देश में सब वस्तुओं का भाव महंगा हो जाता है, वणिज में बाधा पड़

जाती है सब उद्यमों में विघ्न होता है, सहस्र मनुष्य कट मरते हैं, देश में अनाथ और विधवाओं की संख्या बढ़ जाती है, रुपया घट जाता है और सब प्रकार के पशु, घोड़ा ऊंट बैल हाथी, खच्चर, गधे कम हो जाते हैं, बहुधा पशु भूख प्यास से मर जाते हैं, वह एक महा दुःख का समय होता है और फिर यह भी नहीं कोई कह सक्ता कि किस की विजय होगी फिर सिवाय इसके देश के अन्दर का बैर विरोध जो राज के दबाव से दबा रहता है युद्ध के समय भड़क उठता है और स्थान २ पर राज द्रोही खड़े हो जाते हैं, जो लोग युद्ध में गुण समझते हैं वह कहते हैं कि यदि युद्ध कभी २ न हो तो सेना और प्रजा दोनों कायर हो जाती हैं, कभी २ किसी सीमा पर युद्ध का होना उचित है, कोई २ यह कहते हैं कि जब शरीर में रुधिर अपवित्र हो जावे तो उसका निकालना ही श्रेयस्कर है, इसी प्रकार जब देश में गन्दी हवा जमा हो जाती है तो उसके निकालने के लिये युद्ध का होना अवश्य है, युद्ध में यह बड़ा लाभ है कि सब वस्तुओं का मूल्य बढ़ जाता है जब युद्ध का अवसर आवे तो प्रथम यह समझ लेना चाहिये कि मैं अपने शत्रु से बल धन में कम हूं वा अधिक जब देखा जावे कि वह अधिक हैं तो सादर उसकी शर्तों को स्वीकार कर लेना चाहिये जिस में व्यर्थ लोगों के प्राण न जावें और प्रजा के सुख में विघ्न न पड़े शांति के रहने से देश की दशा सुधरती रहती

है और राज प्रबंध धन और सामर्थ में उन्नति होती है। प्रजा प्रसन्न हो कर अपने २ काम में लगी रहती है वणिज,खेती, शिल्पकारी कारीगरी में नित्य उन्नति होती है. इस कारण साधारण प्रजा का भी यह कर्तव्य है कि अपने समय के राजा को सदा शांति रखने की सम्मति दे और आप भी उसके विरुद्ध कोई विचार न रक्खे और जहां तक बने किसी से युद्ध करने की कोई बात न करे यदि प्रजा देखे कि किसीके साथ बिरोध होता है तो अपनी उत्तम पॉलिसी को न त्यागे किन्तु सहन शील और नम्र हो कर सबर करले ॥

अंगरेज़ों के राज होने के पहिले भारत देश की दशा महा शोचनीय थी, स्थान २ पर उपद्रव और दङ्गे होते रहते थे, प्रजा बिना अपराध लूटी मारी जाती थी, हाकिम और विद्रोही दोनों प्रजा को दुःख देने को तैयार रहते थे। सिक्खशाही राज की दशा किसी को न भूली होगी कि जब फौज का कूच होता है तो अपनी ही प्रजा के साथ ऐसा वर्ताव होता है जैसा सरकार अङ्गरेज़ शत्रु की प्रजा से भी नहीं करती प्रजा को सताना मारना मानों एक रीति हो गई थी। भला हाकिम ही थे उनके छोटे २ नौकर ज़मीनदारों का नाश करने में कोई कसर नहीं रखते थे। उन की फरयाद सुनने के लिये न कोई कानून था न कोई कचेहरी। और अन्त में मुगताई राज में तो फौजी आदमियों की यह कहावत थी कि "नोन सरकार से और

रोटी प्रजा से लेनी चाहिये" इस पर विचार कीजे कि भारत देश में कैसी कुछ दशा हो रही थी॥

ऐ युवा पुरुषो, गवर्नमेंट अंगरेजी के राज को जिस की नीति न्याय और शांति पर है मन से प्यार करो और उस के राज भक्त बने रहो। वह तुम्हारी भलाई के लिये सदा प्रयत्न करती रहती है और तुम्हारे अधिकारों की रक्षा करती है। वह जानति है जहां ज़रूरत हुई है तुमने सदा उसकी सहायता की है। चीन, किरीमिया, हबस, काबुल मिस्र, ब्रह्मा आदि के युद्धों में तुमने उसका पूरा साथ दिया और अपनी के गुण उस की शिक्षा से सीख कर दिखलाये। योरप निवासियों ने भी उन की प्रशन्सा की। तुम ऐसे आज्ञाकारी और राज भक्त हो कि इङ्गलैंड के राजा के लिये तुम जीव प्राण अर्पण करने को तैयार हो। और जब तुम अपने धर्म भाइयों के साथ लड़ने को खड़े किये तब भी तुम परीक्षा में पूरे उतरे अपने स्वामी का नियम भली भांति निवाहा। गवर्नमेंट को तुम्हारा धन्यवाद करना चाहिये जिसको सेवा करने में तुमने तन मन धन का भी कुछ ख्याल नहीं किया, तुम को अपनी गवर्नमेंट का धन्यवाद करना चाहिये जिसने तुमको स्वतंत्रता और शान्ति दी और सदा तुम्हारी भलाई चाहती है जब तक कोई उस के अधिकार में हस्ताक्षेप न करे वह युद्ध नहीं करती॥

जब देवी युद्ध की सामर्थ्य जमा हो जाती है तो मनुष्य की सामर्थ्य और बुद्धि से रोके नहीं रुकती। सुनो यदि शान्ति काल का आदर न करोगे और उस से फाइदा न उठावोगे तो अपनी बुद्धि पर पछतावोगे। फिर कोई जन तुम्हारा साथी न होगा। और फिर तुम बहुत शीघ्र दुःख करके मर जावोगे और पीछे तुम बुरा दृष्टान्त माने जावोगे। और यदि विना कारण द्रोही तुम पर चढ़ता है और तुम्हारे पद का विचार नहीं करता तो तुम संतोष करो कि घमंडी सदा सिर के बल गिरता है और अपने किये को पाता है। तुम्हें चाहिये कि इसको तुम अपने घरेलू कर्मों में भी विचार करो न किसी से लड़ो न झगड़ो न मुकद्दमे करो। जहां तक हो सके सरकारी अदालतों में जाने से डरो। अपने झगड़े अपने भाई बिरादरी से तोड़ करवा लो उनके न्याय अनुसार चलो न मानोगे खराब होगे॥

समय पर सब काम होना उचित है।

हम लोग समय का आदर नहीं करते। योरप ने समय का आदर करने से उन्नति की अब हम भी समय को नियम सहित लगाने से ठीक २ काम में लाने की चेष्टा करते हैं॥

हम को अपनी दशा पर अब शोक आता है कि हमारा कोई काम नियम सहित नहीं। समय को बांटते हुए जीव डरता है इससे हमारी जङ्गली स्वतंत्रता दूर होती है जिस का हम को सैकड़ों वर्षों से अभ्यास है। दिमाग अपनी स्वतंत्रता और आलस्य नहीं छोडना चाहता गप्प मारते पहरों बीत जावें स्नान करने, खाने, सोने का कुछ विचार नहीं। किसी काम करने के लिये समय नियत नहीं। चलो आज पढ़ने लगे हैं ऐसा मज़ा आया कि संसार की खबर तक नहीं। यहां तक मालूम नहीं कि इस काम में लगने से कोई काम और बिगड़ता है वा नहीं लिखने बैठे है तो उसी में डूब गये, महीनों नगर से बाहर ही नहीं निकलते, हवा खाने तक की छुट्टी नहीं यदि हवा खाने को निकलें तो कोसों निकल गये बिना पूरे थके घर न लौटेंगे। बैठे हैं तो पहाड के समान एक स्थान पर जम गये। टहलने लगे तो उस में ही सारा दिन बिता दिया। किसी मेहनत में लगे हैं तो न सिर की खबर न पांव की। चारपाई पर वा जाज़िम पर लेटे हैं तो फिर उठना ही नहीं, सोते हैं तो मानो मौत से शरत लगाई है। हमें किसी समय अवकाश नहीं हम सब समय काम में लगे ही रहते हैं पर आश्चर्य यह कि हमारा कोई काम सटीक नहीं होता। कोई अधूरा रहजाता है। इधर दो काम सुधरे उधर दो बिगड़े। यह सब खराबियां क्यों हैं केवल समयको काम की योग्यता के अनुसार न बांटने से। जो

काम आगे आया बिना ज़रूरत उसी में लग गये। पैसेका काम किया रुपये का बिगाड़ा यह बहु मूल्य समय जिस के एक पल का मूल्य सब सृष्टि भी नहीं हो सक्ती हम कैसी अनादर के साथ व्यर्थ खोते हैं। शोक हम पर है हम मुफ़तखोरों को रुपया लुटाते हैं। विषय भोगों में उड़ाते हैं। परन्तु समय के बांटने के लिये हम जेब घड़ी वा क्लाक अपने पास नहीं रखते। झाड़, फानूस, बोतलें चित्र हमारे पास न हों तो हमारा वैभव कैसे जान पड़े, आभूषण न पहनें तो रईस कैसे जान पड़ें। परन्तु घड़ी खरीदने में हमारा जीव नहीं चाहता क्योंकि उसको देख कर समय व्यर्थ गवाने में चिन्ता होगी और बेकाम बैठने वा व्यर्थ फिरने से रोकेंगी। नहीं तो वह टन टन बजेगी और आयु के चले जाने को सुनादी सुनाती रहेगी। सब वस्तु का बदला हो सक्ता है और बिगड़ा बन सक्ता है। परन्तु समय पर किसी का अधिकार नहीं। युवा वृद्ध नहीं होना चाहता है और वृद्ध मौत से बचा चाहता है। आश्चर्य यह है कि इस बहु मूल्य के वस्तु को शीघ्र बिताने की भी सब में अभिलाषा पाई जाती है। मां बाप चाहते हैं कि हमारा छोटा बालक शीघ्र बड़ा होजावे नौकर चाहते हैं कि शीघ्र महीना पूरा होवे कि वेतन मिले। रोगी कहता है कि मुझे एक २ घड़ी साल के बराबर बीतती है किसी प्रकार दिन कटे, ज़मीनदार चाहते हैं कि हमारे खेत शीघ्र काटने योग्य होजावें, विद्यार्थी चाहते हैं कि हमारी विद्या

सीखने का समय शीघ्र कट जावे। बीता हुआ समय लौट कर नहीं आ सका और आगे आने वाले की पूरी आशा नहीं इस कारण वर्तमान काल को मुख्य समझ कर ऐसी चिन्ता करनी चाहिये कि वह व्यर्थ न जावे नहीं तो केवल पछताना ही हाथ रह जावेगा॥

योरप की उन्नति की दशा देख रहे हो। जादू के समान नित्य नई वस्तुएं पैदा होती जाती हैं। जिस प्रकार मकनातीस लोहे को खींचती है, उसी प्रकार योरप अपनी कारीगरी और चातुरी से समस्त संसार के रुपये को खींच रहा है। भला नयी विद्याओंमें यह हिम्मत यह बरकत यह करामात किसन डाली अमरीका और योरपमें द्रव्य और ऐश्वर्य्य किस कारण ऐसा बढ़ रहा है। हमारे देश में मजदूर दिन भर में तीन चार आने कमाते हैं तो योरप में वह इतने रुपये रोज कैसे कमाते हैं। इस लिये कि वह अपने समयको बहुमूल्य समझते हैं। उस का कोई भाग व्यर्थ नहीं जानते। प्रत्येक कामके लिये उसकी आवश्यकतानुसार समय नियत करना चाहिये और वह काम उसीसमय में हो! यदि जी में ठान भी लें कि अमुक समय में अमुक काम करेंगे तो कुछ समय उपरांत आप ही उस समय को बांट से मन उखड़ जावेगा, हमारे विचार को तोड़ देगा फिर हम दूसरे लोगों के समान निकम्मे हो कर रहना पसन्द करेंगे। वाह रे हमारे विचार और वाह रे हमारी दृढ़ता भला हम से उन्नति

होगी। हम बढ़ें तो क्योंकर और मूर्खता से बचें तो किस प्रकार। हमें अपना नाम अर्ध जंगली अर्ध सभ्य ऐसा प्यारा हो गया है कि उस के दूर करने की हम चेष्टा ही नहीं करते। भला हम ऐसा करें तो अपने मूर्ख भाइयोंको क्या मुख दिखावें हमें अपनी समझ पर रोना आता है। ईश्वर हमें सत्य पथ पर चलावें ॥

सुनो ए प्यारो। जब तक हम अपने आवश्यक और अनावश्यक कामों की जांच कर उन के लिये अलग २ समय न नियत करदेंगे और फिर उसी अनुसार अपने समय को न लगावेंगे तब तक हमें सभ्यता के गुण प्राप्त न होंगे और देश से दरिद्रता का मिटना भी असम्भव होगा। यदि सभ्यता का कोई ऊंचा स्थान मान लें तो समय की बांट उसकी सीढ़ी है। ऊंचे स्थान पर जो बिना सीढ़ी चढ़ना चाहेगा वह व्यर्थ अपने पांव तोड़ेगा। वा सिर के बल गिरकर प्राण देगा। इसज़ रूरी और लाभकारी काम को समझने के लिये भी उत्तम समझ और ज्ञान चाहिये। साधारण मनुष्य उसको समझनेकी योग्यता नहीं रखता। ऐ पुराने छोटे विचार के लोगो तुम नये फैशन के लोगों को इस कारण उत्तम नहीं समझते कि वह देश के सुधार का प्रयत्न करते हैं। और देश से मूर्खता निकालने के लिये कटिबद्ध हैं। वह तुम्हारे समान अपने बहु मूल्य समय को व्यर्थ कामों में नहीं फेंकते। तम समझते हो कि वह घमंडी हैं हम से बहुत

मिलते नहीं चुप चाप अपने काममें लगे रहते हैं मानो युरपियन लोगों के चेले होगये, अब वह अपनी चोंच और चुगलमे हम को जुदा समझते हैं, तुम थोड़ो समझ वाले हो, उन की बुद्धिमानी और युक्ति तुम्हारे विचार में नहीं आती, उनकी जेबघड़ी देखकर तुम्हारा मन कुढ़ता है, वह कभी अपना समय बचाने के लिये जो तुम्हें बिदा कर देते हैं मानों बड़ा भारी अपमान किया और कहने लगते हैं कि वह तो बड़े रूखे हैं तनिक आदर और नीति के नियम नहीं जानते, चलो अपने समान दूसरोंको भी मत भुलावो, अब हम भी समय को बांटने के नियम समझने लगे हैं और उस के लाभ समझ कर उस के अनुसार समय लगाने का प्रयत्न कर रहे हैं और इस बात की परवाह नहीं करते कि जेब घड़ी पास है लोग हमें क्या कहेंगे, और कि यदि हम अपने समयकी बांट पर ध्यान देंगे तो मूर्ख हमसे अप्रसन्न हो जावेंगे ॥

किसी काम में लगना चाहिये

(१) मनुष्य बेकाम नहीं रह सकता, (२) व्यर्थ काम में न लगा, (३) सोने में व्यर्थ समय जाता है, (४) कौन काम अच्छा है, (५) सुस्ती छोड़ो किसी उत्तम काम में लगो ॥

---

(१) मनुष्य का चित्त कभी बेकाम नहीं रह सकता, सोता हो वा जागता किसी न किसी उधेड़ बुन में लगा रहता है काम करने वाला है तो काम में लगा है नहीं तो खाली मनसूबे ही बांधता रहता है ॥

ध्यान वा विचार कि पंक्ति कभी नहीं टूटती, बेकाम जीव घबराया करता है और निकम्मे रहना एक ऐसा रोग है जो मनुष्य जीवन को बिगाड देता है इस कारण मनुष्य से बेकाम रहा नहीं जाता किसी न किसी धन्धे में लगा रहता है लिखना पढ़ना वा किसी उद्यम वा हुनर में लगना काम है।

(२) जिन से और काम नहीं हो सकता वा करने की बान नहीं है इस कारण से कि हमारी रोटियों की दूसरों को चिन्ता है वह शतरंज, गंजीफह, ताश, चौसर आदि खेलने में लग जाते हैं यदि उनमें हार जीत न भी हो तो भी वह अपनी आयु का एक बड़ा भाग बेकाम व्यर्थ गंवाते हैं। और ऐसे काम

में लगे हैं जिसका फल कुछ भी नहीं, इनसे पूछो तो वह उत्तर अवश्य देंगे अंत में मन लगने के लिये कुछ करना चाहिये कोई दूसरा काम होता तो हम क्यों यह लेकर बैठते मानो संसार में उनके करने के लिये कोई काम शेष रह ही नहीं गया। जो थे और लोगों ने ले लिये उनके लिये यह व्यर्थ काम छोड़ दिया। ऐसे लोग काम चोर मुफतखोर हैं। यह नहीं कहते कि मुफत के खाने ने हम को निकम्मा बना दिया। खबरदार ऐसों के सङ्ग न बैठो नहीं तो किसी काम के न रह जावोगी। वह जब इन खेलों से छुट्टी पावेंगी तो नशे की चोजों को काम में लावेंगी। कहीं उन को देखा दाखी तुम ऐसे काम न करने लगना। एक आलसी की कथा तुमने सुनी होगी कि जिस को २४ घंटे के बीच में दम भर अवकाश न था और करता ज्यादा काम भी न था। केवल अपने बखेडों के उलझाव में रहता था। इसी प्रकार कोई २ धनवान् लोग अपने शरीर की सजावट में दिन भर लगे रहते हैं। उनसे तनिक छुट्टी मिली कि शतरंज बिछी दा गप्पें आरम्भ हुईं। खुशामदी टट्टू पास बैठे हुये हैं वह इन को हांक रहे हैं। अमीरों को विषयों की ओर झुका देना तो उनका कर्तव्यही है। तुम जानते हो कि हल चलाना एक काम है शिक्षा भी एक बड़ा काम है। इनके सामने ताश खेलना तुच्छ काम है। पुस्तक पढ़ना समाचार पत्र देखना, गणित के बातों पर विचार करना सर्व साधारण

के लाभ के लिये लेख लिखने अच्छे काम हैं॥ दूसरे प्रकार के लोगों में शतरंज चौसर काम हैं। जुवारी और विद्यार्थी दोनों लगेरहें काममें जैसा आनन्द एक विद्यार्थी को अपना काम पूरा करने पर हुआ वैसा एक व्यर्थ काम में लगे रहने वाले को न होगा परन्तु थक वहभी आवेगा। ऐसे लोगों का दृष्टांत उस वैद्य के समान है जिसने स्वप्न में एक रोगी से मोहरों का तोड़ा पाया और कन्धे पर रख कर घर लाया प्रातःकाल उठाने पर मुहरें तो न पाईं परन्तु कन्धों में उठाने की पीड़ा बनी रही बिना प्रयोजन परिश्रम करना मूर्खता है॥

२) जैसे मनुष्य जाग्रतावस्था में बिना कुछ काम किये नहीं रहता इसी रीति पर सोने पर भी मन कहीं न कहीं लगा रहता है। कभी स्वप्नमें वह राजा बन जाताहै कभी भूख और प्यास से दुःखित होकर घूमताहै। कभी सर्प काटने से कभी तोफानके आने से कभी वर्षा अधिक होनेसे घर बह जानेसे कभी बारूदऔर आग के लग जाने से घर जल जानेसे वह मर जाता है गहरे नींदमें होता है तो उसको वह बात याद नहीं रहती, सावधान कभी दुखदाई स्वप्न से महा दुखित न हो जाना और न कभी सुखदाई से फूल ही उठना, वह केवल एक ध्यान मात्र है क्यों कि मनुष्य की बहुधा वही बातें स्वप्ने में दीखती है जो प्रथम से उसके ध्यान में रहती हैं अर्थात् जो बातें एक जन कान से सुनता है आंख से देखता है वा जो उस के काम वा उद्यम

से संबंध रखती है वही उसको स्वप्न में भी दीख पड़ती है। वा एक जनका जिस विषय में मन लगा हो वह प्रीति से हो अथवा वैर से, किसी रोग के कारण भी ऐसा हो जाता है कि उसी ढङ्ग के स्वप्न दीखने लगते हैं, जैसे यदि रुधिर शरीर में अधिक होगया तो लाल वस्तु स्वप्न में दीख पड़ती है, प्यास लगी हो तो पानी ही पानी दृष्टि पड़ता है परन्तु स्वप्न देखने वाला उसको पी नहीं सकता जन्म का अंधा कभी नहीं कहता कि मुझे स्वप्न में ऐसा दीखा है, उसको स्वप्न में उन्हीं वस्तुओं का ध्यान आ सकता है जिसको उसने सुना वा हाथ से टटोला वा जिह्वा से स्वाद लिया। ऐसा ही और भी समझ लो, एक जमींदार जिसने कभी स्कूल वा दफतर नहीं देखा उसको कभी यह स्वप्न होगा कि मैं अमुक दफतर में लेखक हुआ वा मास्टर बना उसका हल, बैल, खेत वर्षा का अवश्य स्वप्न दीख पड़ेगा, क्या तुमने नहीं सुना कि (बिल्ली को छीछड़ो कहीं ख्वाब आता है) विरुद्ध इसके कोई २ सर्वथा ठीक और सच्चे हुआ करते हैं, यहां दैवात् हो जाता है, ऐसे लोग बहुत कम हैं जिन को स्वप्न न दीखे, बलगमी प्रकृति वाले को अपने स्वप्न कम याद रहते हैं॥

(४) मनुष्य किसी अवस्था में क्यों न हो किसी न किसी बात में मन लगाये रहता है, अब विचारना उचित है कि कैसे काम में मन लगावें, वे दो प्रकार के होते हैं एक जिनसे

कुछ फल निकलता है दूसरे वह जिससे कुछ नहीं, पढ़ना सुफल है और चौसर खेलना निष्फल है, दूकानदारी सुफल है तो गप्पें मारना निष्फल है, इसी भांति और समझ लो, मनुष्य जब एक बार एक काम को व्यर्थ समझ लें और फिर वही करें तो वह पशु हैं मनुष्य नहीं ॥

(५) निकम्मापन, आवारगी, काहलो, सुस्ती, आराम तलबी, सब एक ही बात है, आराम तलबी अमीरों को घेरती है तो असावधानी और सुस्ती गरीबों को यह बहुत हानि कारक है उसके कारण बहुतों के घर उजड़ गये, बीसियों राज नाश हो गये, बड़े २ अमीर कंगाल हो गये, बहुधा विद्यार्थी विद्या न सीख सके, जैसे सांप को मौत आती है तो वह रास्ते में आ बैठता है, कीड़े की मौत आती है तो उसके पर निकल आते हैं इसी प्रकार जिस वंश और राज को नष्ट होना होता है वा धन पात्र को कंगाल होना होता है, वा विद्यार्थी को बिना विद्या रहना होता है तो आलस्य पहिले अपना डेरा आकर जमाता है॥

वह जन भाग्यवान है जो इस नष्ट कारक बान से बचा है और उत्तम काम में लगा रहता है। हमें आशा है कि तुम ऐसे उत्तम कामों में लगी रहोगी जो तुम्हारे आगे के लिये लाभकारी हो और सब लोग भी उसके कारण तुम्हारी प्रतिष्ठा करें सदा चेष्टा करो कि बेकाम न रहो। तुम्हारे शरीर के अंग प्रगट करते हैं कि वह बेकाम रहनेके लिये नहीं बनाये गये हैं। यदि इनसे

कोई लाभकारी काम न होगी तो यह समझ लिया जावेगा कि तुमने अपने सिरजनहार की इच्छाके विरुद्ध किया, जिसके उत्तर दाता तुम माने जावोगे॥

धन।

सब धन, भूमि, स्थावर, जंगम स्वत्व, धान्य, नकद रुपया यह सब द्रव्य हैं। रुपया कोई खाने पीने की वस्तु नहीं है और न कोई ऐसी वस्तु है जिसके बिना निर्वाह होना असम्भव है परन्तु तौ भी आज कल गृहस्थो का कोई ऐसा काम नहीं है जो सिवाय धन के दूसरे से हो सके, इस कारण कि यह न्यायवान है आप ही सब वस्तुओं का भाव नियत कर लेता है, एक दूसरे के बीच में आड़ वा बंधक हो जाता है, मनुष्यों को बड़ी विपत्तियों से बचा लेता है, दरिद्रता का वैरी है, सब स्थानों पर इस की आवश्यकता है, सब समय इसकी अभिलाषा की जाती है, कोई सिर नहीं है जिस में इस की अभिलाषा न हो कोई मन नहीं जिस में यह बसा न हो, सब के दिमागों में, यह विचार है कि किसी प्रकार धनवान हो जावें तब मन के सब चाव निकालें वह काम करें जो दूसरों से न हो सका हो,

दिन रात लोग इसी ध्वनि में लगे रहते हैं बहुधा तो बिना परिश्रम धन पाने के अभिलाषी रहते हैं॥

(२) बहुत जन तो धार्मिक रीति पर इसको कमाते हैं बहुत जन घूस लेते हैं और देते हैं, चोर उचक्के, बट मार, डाकू, दगबाज़, कपटी, ठग आदि इस धन के प्राप्त के अर्थ बनते हैं, वह मनुष्य के अवगुणों को छिपाता है परिश्रम से बचाता है प्रतिष्ठा की रक्षा करता है, और मनुष्य का सर्वनाश भी यही करता है, यही मनुष्य के सूम और कंजूस पुण्यात्मा और उदार नाम धराता है इसकी अभिलाषा में मनुष्य मृत्यु के पंजे में आ जाता है, तोप, बंदूक, नेजा, बर्छी का सामना करता है, एक दूसरे के छुरी कटारी मारता है, समुद्र की लहरों में कूद पड़ता है, आग में जल मरता है, दूसरों के हाथ अपनी स्वतंत्रता और प्रतिष्ठा बेंच देता है, चापलूसी करता है, द्वार २ भीख मांगता है, अपने प्यारे जीवन को इस की तृष्णा में कड़वा कर देता है। माता पिता संतान से सन्तान माता पिता से बिगड़ जाती है, भाई मित्र नातेदार, स्त्री, पुरुष सब इस के सेवक हैं, राजा से रंक तक सब धन के भूखे हैं, इसके प्राप्त में बड़ी कठिनाइयां और इस की रक्षा में बड़ी विपत्तियां उठाते हैं। "दूकानदार, ब्योपारी और दूसरे वणिक इसके लिये झूठ बोलते हैं और ग्राहकों को नाना प्रकार के चथकड़े दिखलाते हैं, पापी बनते

"जैसे प्रथम बेचने वाला सच बोलना नहीं जानता है वैसेही

मूल्यलेने वाला उसकी बात पर कभी विश्वास नहीं करता, सच न बोलने से सब को हानि होती है। जो धन छल कपट से कमाया जाता है यदि वह विपत्ति में न डाले तो ऐश्वर्य्य ही मानना चाहिये। कोई २ लोभी इसको सन्तान से भी अधिक प्यारा मानते हैं। सन्तान तो एक ओर रहे, अपने प्राण तक को उसके सामने कुछ नहीं समझते कोई २ झूठे मुकद्दमे करते हैं झूठी गवाही देते हैं कोई२ उसके लिये हाकिमों को खुशामद करते हैं,दलाली बीच में करते हैं, और अधर्म से धन लेते हैं। धर्म ईमान को रुपयेकी प्यासमें भूल जातेहैं। आदमी इसके लिये ऐसे २ काम कर बैठता है जो सृष्टि के नियमके विरुद्ध हैं। यदि धन धर्म और प्रतिष्ठा से कमाया जावे तो यहां सब सुख प्राप्त का द्वारा बन जाता है। वह सब आवश्यक कार्य्य को पूरा करता है और सब प्रकार के चैन और सुख के देने वाला होता है। धन जङ्गल में मंगल बना देता है, पहाड़ों को उड़ा देताहै, समुद्र पर पुल बांध देता है, हवाई घोड़े तैयार कर देता है, परदेश में घर से अधिक हितकारी बना देता है, नहरें खुदवा देता है, विद्या गुण को प्रकाश करता है, रीति व्यवहार धर्म कानून को यही इच्छानुसार बना देता है। यदि धन देश हित में लगाया जावें अर्थात् पूरे पुण्य में लगाया जावे तो सुयश बढ़ेगा लोक पर लोक सुधारेगा। यदि अनर्थ में खर्च करो गे दुष्ट उपद्रवी कहलावोगे। कच्ची बुद्धि मनुष्य को बहुत शीघ्र

खोटे कर्मोंकी ओर झुका देती है, कारण यह है कि उनमें प्रथम कोई दिखावे का झूठा सुख जान पड़ता है वर्षों उपदेश सुनते रहो परन्तु जहां कुछ दिन भी दुष्टों से बर्ताव हुआ, तहां बात को बात में वह सब उड़ जावेंगे। जैसे गधा गर्मी में और जाड़े में मस्त होता है, वैसे मनुष्य के लिये कोई ऋतु नहीं जब उसको कुसङ्ग मिलेगा, उसके विचार भ्रष्ट हो जावेंगे, तुरन्त उसमें दुष्टाचरण हो जावेंगे। कोई २ जन जब ऐसा होता है अपने भाग को बुरा कहते हैं परन्तु यह उनको भूल है जिस प्रकार तुम अपनी इच्छानुसार मकान बनवाते हो भोजन पान करते हो वस्त्र पहनते हो इसी प्रकार भला वा बुरा काम कर सक्ते हो, तुम स्वतन्त्र हो। वह स्वतंत्रता ईश्वर ने तुमको ऐसा ही दी है जैसी सरकार अङ्गरेज ने देशी राजओं को दी है। तुमें उचित नहीं कि सावधानी छोड़कर बुरे भले को पहचान न रक्खो अंधाधुन्ध करने लगो, धन पुण्य पाप दोनों के लिये बड़ा यन्त्र है॥

(३) और यह भी स्मरण रक्खो कि धन का कुछ ठिकाना नहीं, उसका पक्का आश्रय करना व्यर्थ है उसकी बे प्रमाण प्रीति बहुत पाप कर्मों में फसाती है जिस प्रकार जंगली पक्षी कभी एक वृक्ष पर बैठता है कभी दूसरे पर इसी प्रकार धन कभी किसी के पास रहता है कभी किसी के। तुम्हारे देखते हो देखते कितने धनवान् दरिद्री हो गये। यह परिश्रम और चातुरी से

पैदा होता है और किफायत और सावधानी से रक्खा किया जाता है। इस सूरत में यह मन और हृदय दोनों को प्रसन्न रखता है। सरकार अङ्गरेज ने कितने द्वारा ऐसे बना दिये हैं जिससे धन नष्ट नहीं होने पाता, परन्तु जब व्यर्थ व्यय किया जाता है तब इसका ठहरना महा कठिन होता है। पारे के समान धन तुरन्त फिसल जाता है। जैसे गुम्बज पर से गोले या चलने में पानी नहीं ठहर सका इसी प्रकार धन भी व्यर्थ व्यय से जाता रहता है*

(४) एक बुद्धिमान का वचन है कि जिसकी आमदनी कम हो और खर्च अधिक उसकी बुद्धि पर मुझे रोना आता है। जो जन अपनी आमदनी और खर्च का व्योरा रखते हैं और सदा परिणाम सहित आमदन से कम खर्च करते हैं और कुछ विपत्ति समय के लिये बचा रखते हैं वह दूरदर्शी और बुद्धिमान हैं। उनका जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होता है। परन्तु

---

* मैंने उरदू में एक रिसाला "जर का मुनासिब और गैर मुनासिब इसतेमाल और मेहनत और तवंगरी" नामक अङ्गरेजी किताब सैल्फ हैल्प से अनुवाद करके प्रकाशित किया है, इस में अपनी कमाई के धन को धर्मात्मा, किफायती उदार हृदय, हो कर उचित रीति से खर्च करने के उपदेश हैं मूल्य ।/) काशीनाथ, सिरसा जिला इलाहाबाद ॥

जिनके खर्च इतने हैं कि आमदनी उनका पूरा नहीं डाल सकी वह लाचार हो कर ऋण बन जाते हैं जिस से नित्य उनको चिन्ता रहती है उससे वह घुल २ कर प्राण देते हैं। धर्मिष्ट और परिश्रमी होने पर भी उनकी दशा उत्तम न हो तो यथार्थ में वह दया के पात्र हैं, उनकी सहायता करना हमारा कर्तव्य है यदि वह कम व्यय करने का गुण भी रखते हो। ऐ प्यारो, बुद्धिमान् इसमें मन नहीं लगाते हैं वह धन को केवल अपनी, आवश्यकता का पूरा करने का द्वारा मानते हैं। वह धर्म से कमाते हैं और धर्म की राह में लगाते। विचार करो परिश्रम करके धन कमाना और उसकी प्राप्ति में कठिनाइयां झेलना और फिर ब्याह शादियों में उड़ाना वा वृद्ध के मृत्यु होने पर ज्योनारों में बिगाड़ना, वा नाच रंग में गंवाना, जुवां खेलना, गुंडों और खुशामदियों को खिलाना, शराब, ब्रांडी पीने में उडाना पूर्ण मूर्खता नहीं है तो और क्या है। जो यह विचारते हैं कि धन विषय भोग के प्राप्ति का द्वारा है संसार में थोड़े दिन रहना है न जाने कब मर जावें यदि इस से आनन्द न मनावें तो कदाचित् कल वह दूसरे का हो जावे तो ऐसे कम समझ लोग अपनी पूंजी को थोड़े दिनों में खराब कर डालते हैं और बड़े दुःख में शेष जीवन व्यतीत करते हैं और व्यर्थ अपयश के भागी होते हैं। इस प्रकार के आदमी बहुधा वह लोग हो जाते हैं जिनको अनायास बिना परिश्रम धन वा

अधर्म से बहुत धन मिल जाता है, जो लोग धन परिश्रम से कमाते हैं वह निर्दय होकर उस को व्यर्थ नहीं फैंकते, ऐसे लोगों से लोक हित भी बन पड़ता है और वह आप भी सुखी रहते हैं।

(५) यथार्थ में धन उन्नति की राह में आड़ है वह मनुष्य को आलसी निकम्मा बना देता है, वह जिन्हों ने बड़ी विद्याएं निकाली हैं जिन्हों ने बड़ी वीरता की है जिन्हों की हिकमत को संसार प्रशंसा करता है जिनके नाम की बड़ी प्रतिष्ठा होती है वह सब निर्धन थे॥

कसरत करने के गुण।

(१) कसरत करने की आवश्यकता, (२) अभ्यास (३) कौन सी कसरत अधिक लाभ दायक होती है॥

(१) आरोग्यता और दृढ़ता रखने के लिये कसरत मनुष्य के लिये परमावश्यक है, सन्डफोर्ड मारटिन की कहानी में तुमने नेक डाक्टर के एक अमीर के आश्चर्य वत इलाज करने का वर्णन पढ़ा होगा वह सिवाय खाने और सोने के और कुछ नहीं करता था, वह इतना अधिक मोटा होगया था कि कई

आदमी जब पकड़ कर उसको उठाते थे तब उठता था इस कारण जीवन उस को बोझ सदृश हो गया था, उस का भोजन कम किया गया और धोखा देकर उस से कसरत करवाई उसका सब शरीर सुधर गया, तुम अपने देश के धनवानों को देखते होगे जो अपने हाथ से काम करना प्रतिष्ठा की हानि समझते हैं और चाहते हैं कि पलंग भी ऐसा बना हो कि तनिक खिसक गये और मल त्याग कर दिया और निश्चित हो गये, अमीरी क्या ठहरी सदा का रोग ठहरा, उनके मुख देखो तो मानो कुप्पा है तोदोले इतने हैं कि हिल नहीं सकते, पांव फूले हुए ऐसे हैं मानो हाथी पांव हो गया है, पगडी बांधनी है तो दो सेवक चाहिये, कुरता पहनना है तो कोई पहनावे तो पहिनें, स्नान कराने को सेवक भोजन कराने को सेवक, सुलाने को सेवक चाहिये। कपड़े पहनना उनके लिये पहाड है, हर समय स्वादिक भोजनों की चासनी में मरे मिटते हैं, मद्यपान और व्यभिचार में चूर हैं यही उनका दिन भर काम है, यद्यपि वह अपने मन में इसको अमीरी ठाठ कहते हैं, और सब साधारण कहते हो कि वह बड़े आनन्द में हैं परन्तु बुद्धिमान ऐसे जीवन को पशु के जीवन से भी निकृष्ट मानते हैं। कभी उनसे पूछो तो सही तो अपना दुखड़ा सुनाने लगेंगे, कभी मस्तक में पीड़ा है, कभी ज्वर चढ़ा है, कभी संग्रहणी से दुखित हैं, कभी अजीर्णसा हो गया है अन्न नहीं पचता है, बहुत से चूर्ण, माजून खाये जाते

हैं जो असल औषधि है उसको नहीं मांगते हैं जिसमें हींगजगी न फिटकरी रंग चोखाही आवे। वह क्या है. शरीर की कसरत है। गरीब जो अपने हाथ पांव को चलाते हैं मेहनती कहलाते हैं वह आरोग्य और फुरतीले कहलाते हैं परन्तु वह जो अमीर कहलाते हैं रोगों से भरे हैं॥

(५) ए महाशयो तनिक अंगरेज़ों को भी तो देखिये सब छोटे बड़े दो चार कोश खुली हवा में घूम आते हैं। इनके शरीर कैसे दृढ़ और सुडौल होते हैं मुख पर प्रसन्नता बनी रहती है। अमीरों को पूछो तो हमारे शासन करता हैं। कभी यह न विचारना कि हमारे देशी धनवान जो शरीर के हृष्ट पुष्ट दीखते हैं कुछ बलवान होंगे। नहीं जो शरीरसे कसरत करता है यद्यपि दुबला पतला भी हो तो वह सहज में नहीं पकड़ सकता। मोटे मियां को तो हलना चलना ही कठिन है, चार पग चलेतो हांपने ही लग जावे। परन्तु यह तो मोटी बात है कि जो बात बान हो जाती है वह फिर नहीं मालूम होती। पल्लेदार कितना बोझ उठा कर दूर तक ले जाते हैं वह तुमसे हिलाये नहीं हिलेगा ज़िमीनदार देख कैसी मेहनत करते हैं यदि तुम दो दिन भी ऐसा करो तो बीमार पड़ जावो। मज़दूर कैसी मेहनत करते हैं सिर का पसीना पांव तक बह कर आता है लुहार कैसा बड़ा हथोड़ा आसानी से उठाता है, अदालत के हाकिम कैसा अभ्यास रखते हैं कि मुकद्दमें की असलियत को झट समझ लेते हैं। द-

फ़तर के क्लर्क और मुन्शी कैसी मन से समस्त दिन लिखते चले जाते हैं, गुरू कैसा मग़ज़ खपा कर दिन भर विद्यार्थियों को पढ़ाता है। दूकानदार कैसी नम्रता से गाहक से बरताव करता है। जहां तक देखते जावोगे तुम्हारी हैरानी बढ़ती जावेगी। यदि ध्यान से देखोगे तो जान पड़ेगा कि अभ्यास होने से वह उनको सरल हो गया है

बहराम गोर एक बार राज भवन में बैठा हुआ अपनी श्लाघा कर रहा था कि मैं ऐसा वीर हूं कि एकही तीर में गोरी खर को मारता हूं और कबाब करके अकेला ही उसको खा जाता हूं संसार में और ऐसा कौन होगा। एक दासी पास खड़ी थी कहने लगी महाराज यह कोई बड़े अचम्भे की बात नहीं है यह अभ्यास से संबंध रखती है। यदि कोई और भी ऐसा करना चाहे तो कर सकता है। यह सुनते ही बादशाह क्रोधाग्नि से भड़क उठा और उसको भला बुरा कहा, केवल इस कारण कि उसने ऐश्वर्याई दस्तूर के समान हां में हां न मिलाई। विचारी की क्या सामर्थ थी चुप हो रही, परन्तु उन्ही दिनों में एक गौ के बच्चा हुआ, उसने अपना अभ्यास कर लिया कि वह उसको एक बार नित्य महल पर चढ़ा ले जाती और उतार लाती ज्यों ज्यों बछड़ा बढ़ता गया उस का अभ्यास बोझ उठाने का बढ़ता रहा, जब पूरा बैल हो गया तो बादशाह के सामने ऊपर महलों पर ला कर खड़ा कर दिया और कहा कि यह मेरा है।

काम है। मैं अब मानू को जब कोई ऐसा कर दिखावे। बादशाह ने थोड़ी देर सोच कर उत्तर दिया यह कुछ आश्चर्य नहीं, यदि कोई तुम्हारे समान बान डालले। उस समय उस बांदी ने हंस कर उत्तर दिया कि आश्चर्य है कि बादशाह गोरखर तो बिना अभ्यासके मार कर खाजाते हैं और बैल अभ्यास से उठाया जाता है। दोनों काम अभ्यास से ही संबन्ध रखते हैं अभ्यास का बंद होना असम्भव नहीं। मूर्ख, विद्वान्, बुरे, भले, आलसी, तेज़ बराबर होते आये हैं॥

(३ जो बुरी वा भली बान लड़कपन में पड़ जाती है वह बड़े होने पर दृढ़ हो जाती है। इस कारण सरकार ने अपनी पाठशाला के विद्यार्थियों को कसरत करने की बान डालने का उद्योग किया है। कहीं २ इसके अलग गुरु नियत हैं। लडकों को प्रेरणा करने और उत्साह दिलाने के लिये सरकार पारितोषिक देतीहै। इस नियम सहित कसरत करने के सिवाय हमारे देश में लड़कों में कसरत के बहुत खेल प्रचलित हैं जिसमें वह आप लगे रहते हैं। कोई २ एक मुख्य अङ्ग को और कोई सारे शरीर को दृढ़ करते हैं परन्तु कोई खेल ऐसे हैं कि बालक खेले तो अच्छा लगे परन्तु बड़े बड़ों को नहीं शरीर को सुडौल बनने के लिये सब से उत्तम कसरत तह है कि नित्य दो तीन मील सैर कर आवो यह सब को लाभकारी है। पांव दृढ़ होते हैं शरीर के व्यर्थ अंश निकलते हैं ठीक भूख लगती है, भोजन किया

हुआ पचता है, शरीर आरोग्य रहता है,उत्साह बढ़ता है रुधिर साफ होता है। जब आरोग्यता के लिये कसरत ऐसी आवश्यक है तो उस से असावधानी करना उचित नहीं। जहां संसार के सब धर्म्मों के लिये समय निकालते हो वहां इसके लिये भी निकालो सरकार अपनी सेना से बिना आवश्यकता भी कसरत कराया करती है। इस से अभिप्राय यह है कि बैठे २ आलसी और निकम्मे मोटे न हो जावें। इस का फल देख लो कि कहीं युद्ध आरम्भ होजावे तो वह किस वीरता से लड़ती है। युद्ध में भेजे जाने के लिये सिपाही आप प्रार्थना करते रहते हैं। परिश्रम दिखाने के लिये उनका मन लहराया करता है। कायरी समीप नहीं आने देते। असली युद्ध न हो तो साल भरमें नकली ही युद्ध कराया जाता है कि जिस में अभ्यास न छूट जावे वीरों को पारितोषिक दिये जाते हैं॥

ए वीरो! यदि तुम मानते हो कि रोग और आलस्य दरिद्रता और २ कायरी की मूल हैं तो कसरत करनेकी बान डालो इसको कभी मत त्यागो। इससे तुम्हारी सामर्थ्य बढ़ेगी और देश की दशा सुधरेगी। तब तुम शिल्पकारी कारीगरी के कामों में उन्नति कर सकोगे और आवश्यकता पर युद्ध में भी काम दे सकोगे। और तुम्हारा उत्साह होगा कि तुम सरकार के वालन्टीयर फौज में दाखिल होने में अपनी प्रतिष्ठा समझोगे जैसा कि मेम्बर म्युनीसिपिलटी वा अनरेरी मेजिस्ट्रेट वा लोकल

बोर्ड के सभासद होने में समझते हो। इस से बड़ा लाभ यह होगा कि तुम केवल अपना धन प्राण और प्रतिष्ठा की रक्षा हो न कर सकोगे किन्तु अपने देश को भी ॥

सुथरापन।

(१) पवित्र हवा (२) पानी। (३) भोजन। ४) स्थान। ५) शरीर। वस्त्र की आवश्यकता। (६) परिणाम॥

---

(१) डाक्टरों क खोज से सिद्ध हो चुका है कि मनुष्य को आरोग्य रखने के लिय पवित्र हवा, भोजन, स्थान, जल, वस्त्रकी आवश्यकता है, परन्तु सब से अधिक आवश्यकता स्वच्छ वायु की है जिस के बिना मनुष्य एक घड़ो जो नहीं सकता। उस से उतर कर जल को और फिर भोजन को। और सब से पीछे वस्त्र और स्थान को है। जिस प्रकार मछली और दूसरे जल जन्तु जल मे तैरते फिरते हैं उसो प्रकार मनुष्य हवा का जोव है। जिस प्रकार मछलोयों को जब हवा को आवश्यकता होती है तो वह जल में से ऊपर हवा में कूद कर फिर गोता मार जाती हैं, इसी प्रकार मनुष्य को कभी २ जल की आवश्यकता

होती है। हृदय में फेफड़े लगे हैं जिनमें छोटे २ छिद्र होते, हृदय जो सब शरीर का राजा है उस को यह मानो सदा पंखा झलते रहते हैं। हलक की राह से उनको ताज़ी हवा सदा पहुंचती है जो छनकर हृदय में पहुंचती है इससे शरीर की आरोग्यता बढ़ती है। जहां हृदय को तनिक गन्दी हवा लगी और शरीर रोगी हुआ। सांस ली हुई गन्दी हवा जो हमारे शरीर से बाहर होती है वृक्षों का आहार होती है। यही कारण है कि बस्तीके बीच में वृक्षों का होना आरोग्यताका कारण है। जो ताज़ीहवा हम खींच कर अन्दर भेजते हैं वह ओक्सीजन है और आरोग्यता बढ़ाने वाली है। जहां इसमें हानिदा वस्तुएं मिलीं वहां वह तन को रोगी बनाने वाली हुई। धुवां, अग्निका प्रकाश वस्तुओंकी मैल, मल आदिसे हवा बिगड़तीहै वही वायु स्वच्छ नहीं रहती जहां सूर्यका प्रकाश नहीं पहुंचता हम सदा व्योहारमें लगे रह कर लोगों की बहुत भीड़में रहते हैं इस कारण हमें ताजी हवा नहीं मिलती उचित है कि ताज़ी हवा लेने के लिये हम प्रातः और संध्या को बाहर टहल आया करें जिसमें एक दो मील तक चल आया करें जिसमें भोजन पचे और फिर भोजन करने की इच्छा हो॥

(२) इस प्रकार जल जो हमारे पीनेमें आताहै वा जो स्नान करने और भोजन बनाने के काम में आता है उस का स्वच्छ होना उचित है उस में दुर्गंध और मैलापन न हो, वह ताजा हो जो वस्तु हवा को गंदा करतीहै वही जलको भी अपवित्र करती

है और उसका स्वाद बिगाड़ती है ऐसे तालावों का जल जिसमें लोग मल धोते हैं पशुओं को पिलाते हैं, स्नान करते हैं, कुल्लियां करते हैं, वस्त्र धोते हैं उसके जलको न पीना चाहिये। वा जिस में बस्ती की गन्दी नालियां बह कर आती हैं उसका जल भी पीना उचित नहीं। परन्तु ऐसा जल खेतों के लिये लाभकारी होता है। ऐसे कुवों का जल पीना चाहिये जिनका पानी मीठा हो जिनके चबूतरे ऊंचे हों, जिनमें किसी वृक्ष की पत्तियों वा पक्षियों की बीठ न पड़ती हो जिन में सूर्य्य का प्रकाश पहुंचता हो, जिन के पास कोई नीची धरती न हो जहां पानी एकत्र होकर रिस २ कर कुवें में न जाता हो, जहां स्त्रियां पूर्णमासी को आटे के दिये बना कर न रखती हों, जो कुवें में गिर पड़ते हैं और पानी में दुर्गंध उत्पन्न करते हैं और जिस से छोटे २ कीड़े पैदा हो जाते हैं जो आरोग्यता को नाश करते हैं, जिन में मैल गोबर से भरे बरतन नहीं डाले जाते हों और नहाने धोने का पानी न गिरता हो। यदि मरी फैली हुई हो तो चुआया वा उबाला हुआ जल पीना चाहिये। वा पानी में किञ्चित् फिटकरी, निरमली वा हारा कसीस डाल नतरा कर पीना चाहिये॥

(३) कौन कहता है तुम नित्य मोहन भोग पकवान मिठाई मांस पुलाव आदि स्वादिष्ट आहार खाया करो दाल रोटी साग खाओ, रोटी गेहूं की हो वा जुवार की हो, अभिप्राय यह है कि

पकी हुई वस्तु हो अधी न हो कची न रह गई हो । उसमें कोई वस्तु ऐसी न हो जिस से ग्लानि हो, भोजन करने का स्थान, और पात्र पवित्र हो, वैद्य कहते हैं एक बार पेट भर कर खा लेने की अपेक्षा दो वार थोड़ा २ खाना लाभकारी है,भूख न हो तो न खावो पूरे संतुष्ट होनेमें जब तनिक शेष रह जावे तो भोजन करना छोड़ दो । भूख के अनुसार भोजन करोगे तो तुम्हारे आमाशय में जिस में हृदय से गर्मी पहुंचतीहै आहार शीघ्र पच जावेगा यदि अधिक खा जावोगे तो यह गर्मी दब जावेगी। भोजन देर करके पचेगा वा न पचेगा, सरदी, खांसी, ज्वर, पेट की पीड़ा ताक में लगी रहते हैं कि तनिक तुम से असावधानी हो और वह तुम्हारे शरीर पर आकर सवार हों। फिर वह ऐसा पछाड़ते हैं कि महीनों तुमको बिस्तरसे न उठने देंगे और अन्दरही अन्दर तुम्हारे लहू को पीते रहेंगे ॥

(४)निज वास स्थान ऐसारक्खो कि हवा उसमें बिना रोक आती हो,फैलाव का हो,कुछ ऊंचा हो, पवित्र हो,सीला न हो भोजन बनानेकी रसोई उसमें न रहे,वह उससे अलगही हो,कम से कम एक मनुष्यके रहने के लिये ४८ वर्ग फुट स्थान हो। दूध बिलोना हो तो रसोई के स्थान में बिलोवो नहीं तो रहनेके स्थान में मक्खियां भरेंगी जो आरोग्यताको हानि पहुंचाती हैं। मल त्यागके लिये ऐसा स्थानहो जिसकी दुर्गंधरहने वा भोजन करने के स्थानतक न आवे पशुके रहने के लिये अपनेही रहनेके स्थान

में स्थान न बनावो इनके गोबर और मूत्रसे हवामें गंध पैदा होती है जो आरोग्यता को नाश करने वाली है। बर्तनो के धोवन को मकान के अंदर न डालो नहीं तो सील हो जावेगी और गंधि पैदा होवेगी। भला तुम कहोगे कि क्या हमारे पुरुषा ऐसे ही स्थानों में नहीं रह गये, क्या वह मूर्ख थे कि हम उनका अनुकरण न करें। इसमें संदेह नहीं कि समय नित्य प्रति उन्नति करता जाता है। क्या आश्चर्य है जो विज्ञता तुम्हारी है उनकी न हो। जब हम विश्वास करते हैं कि उनकी भूल थी तो क्या यह बुद्धि मानी है कि ऐसा जानने पर भी हम लकीर के फकीर बने रहें। यही बड़ी हानि है इसी अनुचित रीति पर चलना बड़ी खराबी है यही हमें उन्नति नहीं करने देती। जब हमारे पूर्वज इक्के और गाड़ियों से सफ़र करते थे तो क्या हमें रेल पर सवार न होना चाहिये। क्या हमें उचित है कि उनकी लकीर पर चल कर इस प्रकार अपने समय और रुपये में किफायत न करें यथार्थ तो यह है कि बुद्धि और ज्ञान की उन्नति के साथ सावधानी भी बढ़ती है। पहिले समय में यह बात कहां थी॥

(५) जब कि सब लोक परलोक का हित आरोग्यता से होता है तो हमें उचितहै कि उसकी रक्षा के लिये जो विधियेंहैं उन पर विचार रक्खें। यद्यपि यह सम्भव नहीं कि हम उन सब पर पूरा विचार रक्खें तो भी ईश्वर ने जो हमें बुद्धि दी है उससे विचारें कि किस बात में हमारा लाभ है, और किसमें हमारी

हानि है। हम जानते हैं कि कौन वस्तु मीठी है कौन कड़वी कौन स्वादिक हैं और कौन बेस्वाद। यदि हम जान बूझ कर विष खालें तो इसमें प्रगट होगा कि मानो हमें जीवन अच्छा ही नहीं लगता है। बस जो वस्तु हमारे लिये हानि कारक है जहां तक बने उससे बचनाही उचित है। और जो लाभकारी हैं उन से लाभ उठाना हमें उचित है। शरीर और कपड़ों की पवित्रता आवश्यक है, जिस प्रकार एक नगर की स्वच्छता नालियों से होती है उसी प्रकार इस शरीर में सात लाख छिद्र नालियों के समान हैं जिनसे हरदम मैली और गन्दीवस्तु शरीरसे निकलती रहती है और जो कपड़ों में लग जाती है। डाक्टर लोग वर्णन करते हैं कि २४ घंटे में कई सेर पानी पसीने और भाप के द्वारा शरीरसे निकलता है उनमें छ:मासेसे अधिक विष भी निकलता है। उचित है कि शरीर को नित्य मल मल कर जल से धोवो स्नान करके फिर मैले कपड़े पहन लेने से स्नान का गुण कम हो जाता है नित्य साफ कपड़े पहिनना स्नान के फल के बराबर है। यदि नित्य कपड़े बदलना तुम्हारी सामर्थ से बाहरहै तो चौथे वा अधिक से अधिक आठवें दिन बदलना उचित है। सोने के वस्त्र अलग रहें। अब यह बात कठिनजान पड़ती है परन्तु रोगी होने के कष्ठ और खरच को विचारो तो यह सावधानी कठिन न जान पड़ेगी। जब यह देखा जाता है कि सब मंदिर और मसजिद पवित्र रक्खे जाते उन में पूजा करने के लिये हमारे

पवित्र हो कर जाते हैं तो इससे प्रगट है कि स्वच्छता से ईश्वर भी प्रसन्न है। किसी महात्माने स्वच्छता को इसी हेतु करके आधो ईश्वर की पूजा कही है। संसार के लोग भी स्वच्छ जन की प्रतिष्ठा करते हैं। तुमने नहीं सुना कि सफेद कपड़े पहनने वाले को लोग भला आदमी जानते हैं उस को चाहे जानते हों वा न हों। यह कुछ अवश्य नहीं कि वस्त्र बहु मूल्य हों नहीं केवल स्वच्छ और पवित्र से प्रयोजन है। गन्दे मैले कपड़े पहनने वाले के शरीर से दुर्गन्ध आती है लोग उस से ग्लानि खाते हैं और वह आप भी आरोग्य होने परभी मुरदार सूरत बना रहता है। उस की प्रतिष्ठा नहीं होती है। जहां तक हमारी विज्ञता है हम कह सक्ते हैं कि हमारे देश में आरोग्यता रखने के नियमों का बहुत कम विचार होता है इसी कारण यहां नाना प्रकार के रोग अपना अधिपत्य जमाये हुए हैं॥

ए प्यारो मैं अन्त में तुम से आशा करता हूं कि केवल अपनी आरोग्यता के नियमों पर पूर्ण विचार रक्खोग किन्तु अपने सब इष्ट मित्रों को भी रखनेकी चेष्टा करोगे यदि ऐसा करोगे तो सब को बड़ा फ़ायदा पहुचावोगे। मरी जो सदा हमें घेरे रहती है बहुत कम हो जावेगी वा सर्वथा मिटजावेगी, आरोग्यता बनी रहेगी, लोग अपने कामों को मन लगा कर करेंगे, निकम्मापन जो रोग से होता है दूर हो जावेगा, मौतों की संख्या कम हो

आवेगी फिर दरिद्रता देश से जाती रहेगी। फिर देश में भाग्य-मानी दीखने लगेंगी और नाना प्रकार की उन्नति होने लगेगी।

शरीर के अङ्ग

किसी बनाये हुये यंत्र को प्रथम बड़े ध्यान से देख लो कि वह किस प्रकार बना है और उसके टुकड़े २ आपस में किस रीति से जुड़े हुए हैं,फिर जीवों की बनावट को देखो और फिर अपने शरीर पर ध्यान दो और समझो कि उसके अङ्ग कैसे चलते हैं हम कैसे बैठते हैं,सोते हैं,खाते हैं पीते हैं,काम काज करते हैं. लिखते पढ़ते हैं। हाथ, पांव, मुख, और पीठ, कैसे बनी है, शरीर पर बाल कैसे लगे हैं, भोजन और वस्त्र की आवश्यकता क्यों है, रोग और आरोग्य होने के क्या कारण हैं। मनुष्य की दशा योग्यता और अवस्था के विचार से क्यों सदा बदलती रहती है। मनुष्य कैसे उत्पन्न होता है, क्यों मरता है,। जब तुम अपने शरीर के बनावट को जान लोगे तो विचारो यह कैसी चातुरी से बना हुआ है सृष्टि कर्ता ने आग, पानी, मट्टी,. हवा को किस रीति से मिलाया है। सब रंग सूरत, प्रकृति, लम्बाई, चौड़ाई, बोल, चाल, ढङ्ग में एक दूसरे से भेद क्यों रखते

हैं। जब तुम्हारा जीवन उस सर्व शक्तिमान कर्ताकी चातुरी का नमूना है जिस को जान कर बहुधा बुद्धिमानों ने अपनी बुद्धि का प्रकाश किया है तो कोई हेतु नहीं है कि वह उसका पूर्ण धन्यवाद न करे प्रत्येक अङ्ग को धन्यवाद करने के लिये उद्यत रहना चाहिये। जैसे नेत्र का धन्यवाद यही है कि उसकी सृष्टि के भेदों को देखे और उसकी पूर्ण शक्ति और महानता को मन में विचारे और उससे बुद्धि के दर्पण को उजला करें, वृक्ष के एक पत्ते को लेकर उसके तार, रंगत, और बनावट पर ध्यान दो, फिर चेंटी से लेकर हाथी के अंगोंकी बनावट देखो, कैसी बड़ी २ चातुरी से वह बने हैं। अभिप्राय यह है आंखों को सृष्टि के भेदों के जानने में लगावो जिसमें उसके कर्ता के विषय ज्ञान हो। कान को विद्या और बुद्धि की बातें सुनने में और जिह्वा को स्वजाति को लाभों पहुंचाने के वर्णन और व्याख्यान में लगावो तब तुम उनके होने के अभिप्राय को पूरा करोगे— हाथ का ध्यन्यवाद यह है कि वह उत्तम शिल्पकारी के कामोंमें लगाया जावे, वा योग्य जनों को नकदी और अन्न से सहायता दी जावे। पांव जो अपने भाईयों के उपकार में चलते हैं, हृदय जिसमें सच्ची प्रीति है, दिमाग जिसमें उत्तम विचार उत्पन्न होते हैं वह अपना धन्यवाद करते हैं, एक पवित्र पुस्तक में लिखा देखा है कि जिस हाथसे किसी को हानि पहुंचे उसको काट देना उत्तमतर है। जो आंखें दूसरे के धन को कुदृष्टि से

देखें उत्तमतर होता यदि वह न देखती, इसी प्रकार उस पांव का लंगड़ा होना अच्छा है जो धर्म की राह में न चलता हो जिसमें वह अधिक पाप न करे। ऐ प्यारो अपने जीवन के फल पाने के लिये इन आवश्यक उपदेशों को स्मरण रक्खो। किसी अंग को जिस को ईश्वर ने तुम्हें दिया है धन्यवाद से खाली न रहने दो, ध्यान रक्खो यदि यह काम लेने के लिये न होते तो क्यों उत्पन्न किये जाते। उनसे पूरी मेहनत न लेना वा उनको खोटे कर्मों की ओर लगाना मानो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करना है। यह विचार मन में रक्खो कि यदि कभी बेकाम बैठे हो तो तुरन्त अपने मनसे कहो कि मैं निकम्मा हो कर बैठने के लिये उत्पन्न नहीं किया गया हूं तुरन्त किसी लाभकारी काम में लगजावो। इस प्रकार जब एक काम समाप्त हो तो दूसरा आरम्भ करदो। तुम जानते हो बुरे काम निकम्मे आदमियों के हृदय में पैदा होते है। परिश्रमी उनसे बच रहता है। जब खोटा विचार कभी तुम्हारे मन में आवे तो झट अपने को समझ लो कि मैं ईश्वर की इच्छाके विरुद्ध काम नकर के पापी न बनूंगा और न संसारी लोगों में निरलज्ज बन कर रहूंगा। अपने बाहर और भीतर के सब व्यवहार एक ही रक्खो। लोगों को ऐसा दिखलावो जैसे तुम यथार्थ में हो। इसका बड़ा लाभ यह होगा कि तुम सदा अपनी अभिलाषा पूर्ण कर सकोगे और कभी न घबरावोगे॥

संसार आशा के बल जीता है।

(१) आशा। (२) विद्या का पढ़ना और गुरु का पढ़ाना। (३) माता पिता का स्नेह। (४) गवर्नमेंट की प्रजा वात्सलता प्रजा की आज्ञा पालन। (५) देन लेन (६) ब्योपार। (७) उचित और अनुचित काम। (८) कारीगरी और खेती। (९) धातुओं की खोज। (१०) परिणाम॥

(१) शब्द " आशा, ऐसा प्रगट है कि सब छोटे और बड़े इस अभिप्राय को समझते हैं। संसार के सब काम इस पर ही होते हैं तो भी उसको कुछ व्याख्या करना उचित है।

(२) विद्यार्थी दिन और रात पढ़ने में लगा रहता है, गुरु परिश्रम से पढ़ाता है। माता पिता उनको आवश्यकताओं को पूरा करने की चेष्टा करते रहते हैं। परन्तु यह तीनों आशा के पाश में कसे हुए हैं॥

(३) इस प्रकार माता पिता का अपनी संतान का पालना यद्यपि स्वभाविक है तो भी बिना स्वार्थ नहीं है। उनको आशा रहती है कि वृद्धावस्था में वह हमारी सहायता करेंगी, अर्थात् जब हम आप न कमा सकेंगे तो यह हमें कमा कर खिलावेंगी हमारी आवश्यकताओं को पूरी करेंगी वा हमारे नाम बनाये रखेंगी वा हमारे एकचित धन और स्वत्व की रक्षा

करेंगी। यद्यपि उनको पूरा होना ज़रूर नहीं परन्तु यह आशा उनको सदा लगी रहती है ॥

(४) गवर्नमेंट अपनी प्रजा के सुख चैन के लिये यथोचित प्रयत्न करती है । बाहरी शत्रुओं को चढ़ाई से देश की सीमा की रक्षा करती है और भीतर के उपद्रवों को मिटाती है और उद्योग करती है कि प्रजा पर ऐसा शासन हो कि भेड़िया और बकरी एक घाट पानी पियें और चोर, डाकू, और बटा मार मिटा दिये जावें जिसमें प्रजा शांति सहित रहे । यदि विचार किया जावे तो यह प्रबन्ध भी आशा से खाली नहीं है इस से राज्य की दृढ़ता होने का अभिप्राय है, प्रजा यदि वर्तमान राज का भक्त और आज्ञा कारणी है और सच्ची है तो वह भी शान्ति और स्वतंत्रता और सुख से रहने की आशा पर है, जंगी नौकर सिर देने को उद्यत हैं, अदालतें मानसिक परिश्रम करने के लिये कटिबद्ध हैं, सेवक हाथ बांधे हुए आज्ञा पाने को प्रत्याशा करते हैं, यह सब क्यों होता है पेट भरने को, रुपये पाने, अधिकार प्राप्त करने की आशा पर, इसी प्रकार बीमार आरोग्य होने की आशा में पड़ा है। वैद्य को धन, सुख, प्रतिष्ठा पाने की अभिलाषा है ॥

(५) साहूकार अपने असामियों को ऋण देते हैं और ऋणी सब सहन करते हैं प्रथम को लाभ और दूसरे को अपना

काम चलाने की आशा रहती है चाहे यह देन लेन सचाई के साथ हो ॥

(६) व्योपारी अपने रुपये को माल के लेन बेचने में लगते हैं, देश विदेश फिरते हैं, नाना प्रकार के कष्ट उठाते हैं, समुद्र और धरती पर यात्रा करते हैं, पहाड़ जंगलों के पार जाते हैं, क्यों जाते हैं लाभ की आशा में चाहे हानिही हो जावे ।

(७) चोर माल पाने को आशा में और जुवारी जीतने की आशा में और भी दुष्टाचरण लोग बन्धन में पड़ जाते हैं। परन्तु भला मनुष्य दूसरों को भलाई करने की आशा में भलाई करता है, कोई सुयश के अभिलाषी हैं कोई परलोक हित चाहते हैं कोई यह मानते हैं कि मनुष्य के कर्तव्य धर्म पूरे करने में सब भलाई है ॥

(८) कारीगर जीवका के लिये कारीगरी के काम करते हैं, और बहुधा काम चोर लोग मेहनत से बचने के लिये भीख मांगने लगते हैं, किसान, जो अपने खेत में दिन रात मेहनत करता है कि यदि मेरा फसल देवी आपत्तियों से बच जायगी तो मेरी आश का बाग हरा भरा हो जावेगा ॥

(९) कोई धातुओं की खोज में पत्थरों से टकराता फिरता है, कोई बलुई भूमि और निर्जन बनों की धूल छानता फिरता है, कोई समुद्र में जहाज़ दौड़ाता फिरता है, सरदी गर्मी, तोफान, हवा, बादल को तनिक परवाह नहीं करता

कोई रेल पर सवार है, अभिप्राय यह है कि कोई प्रबन्धक, ग्रन्थकर्ता, वैद्य, स्त्री, पुरुष, शासन कर्ता, पराधीन, स्वामी सेवक, पुजारी, पवित्र, महात्मा, साधू, कोई ऐसा नहीं जो इस ध्वनि में न हो, यद्यपि अभिलाषाएं सब की अलग हैं, यह सम्भव नहीं कि कोई आशा से खाली हो इसको चाहे तृष्णा कहो, वा कामना कहो, इस के बिना संसार रह नहीं सकता प्रत्येक काम में उन्नति के लिये इस का होना ही आवश्यक है, मनुष्य को इस की अत्यन्त आवश्यकता है यदि वह इस को भलाई की ओर रक्खे, परन्तु दूसरे को आशा पर आप प्रयत्न और उद्योग करना छोड़ देना मूर्खता है॥

(१०) यद्यपि आशा का शरीर नहीं है तौ भी इसका प्रकाश विदित है, जिसको देखो इसकी ध्वनि लगी है यह इसी का प्रभाव है कि मनुष्य अपने रहन सहन में नित्य उन्नति करता है। यदि यह न होती तो सन्सार भी विद्यामान न होता, यदि सन्सार न होता तो संसारी लोग कहां से होते इस से प्रगट है कि संसार आशा पर स्थिर है *

---

* मेरी हिन्दी की तीसरी पुस्तक मूल्य ≠)॥ में यह पाठ देखिये जिस का सिरनामा यह है "सुयश से अधिक मीठी दूसरी वस्तु संसार में नहीं है" काशीनाथ सिरसा ज़िला इलाहाबाद॥

दया और न्याय।

(१) दया और न्याय, (२) न्याय में दया है, (३) नरम दण्ड मिलने से अपराध कम होते हैं, (४) प्रजा को क़ानून पढ़ाना चाहिये॥

---

(१) यह दोनों शब्द एक दूसरे के विरुद्ध हैं, जैसे अग्नि और पानी हैं, परन्तु इन दोनों पर समस्त संसार स्थिर हैं, इनही के हाथ में राज प्रबन्ध है, इन्हीं के प्रभाव से राज काज चलते हैं, इनकी आवश्यकता प्रत्येक जन को है चाहे वह राज प्रबन्ध से सम्बन्ध रखता हो वा न हो चाहे वह किसी श्रेणीका क्यों न हो दया और न्याय से ही सुधर्म की रक्षा रहती है, यह ऐसे शान्ति प्रिय हैं कि सब धर्म और मत के लोग इन के सामने एक दरजे के हैं, परन्तु इनको अपने आधीन रखना बड़े वीर पुरुष का काम है, जब तुम किसी को पीड़ा दोगे वा किसी की पक्ष करोगे तो यह धीरे से तुम्हारे पास से खिसक जावेंगे, परन्तु जब तुम से कोई भूल हो जावे और तुम सच्चे मनमें पछातावा करके उन से विनती करोगे तो यह तुरन्त तुम्हारे पास फिर चले आवेंगे॥

(२) यदि ध्यान पूर्वक देखो तो न्याय में दया रहती है जब एक अपराध होने पर उसके लिये दण्ड दिया गया तो मानो दूसरों पर दया की गई, जिनमें अधिकार और स्वत्व पर वह

बेदन्ड जाये हस्ताक्षेप करता. जैसे सर्प और बिच्छू पर उन को जीव समझ कर दया करना अपनेभाई मनुष्योंको मानो दुःख देनाहै, इसी प्रकार अपराधीको दण्ड न देना मानो सदैव उसको अपराध करने की प्रेरणा करनाहै, प्राचीन कालमें जैसा न्याय होता था उनके अनुसार अब नहीं होता, अब कानून पर चलना ही न्याय है, प्रथम न्याय एक दो जनोंकी इच्छानुसार होता था अब कानून किसी एक जन का बनाया हुआ नहीं किन्तु सब लेजिसलेटिव कौन्सिल (कानून बनाने वाली सभा) के सभासदों की सम्मति से बनाया जाताहै। परन्तु वह समय भी अभी दूर नहींहै कि जब तक प्रजा अपनी सम्मति प्रगट न करेगी कौंसिल कोई कानून बना न सकेगी। पहिले समय में अपराध के खोज किये बिना दंड दिया जाता था और अपराधी को अपनी निर्दोषता प्रगट करने के लिये कोई अवसर नहीं मिलता था। हाकिमों के अधिकार वे अन्त थे जो वह चाहते करते थे। जीते जी आगमें जला देना कुयें में फिकवा देना अंगों को यंत्र में कसाना, उखली में सिर खुदवाना, हाथी के पांव तले दबवाना, हाथ, पांव, नाक, कान कटवाना तनिक २ अपराध में बड़े दंड देने, अपराधी से बहुत धन लेकर छोड़ देनेकी रीतें पहिले थीं अब तो सुननेमें भी नहीं आतीं। अब लोगों को विश्वास भी न आता होगा कि कभी यह दंड प्रचलित थे। अत्यन्त कठिन प्रकार की शपथ करने की रीतें जैसे जलती आगमें हाथ डाल देना, गर्म तेल वा पानी हाथ

पर डालना, वा उनमें हाथ डुबाना गर्म लोहे वा पत्थरका उठाना अब नाम को भी नहीं है एक अपराधी के अपराध में सब कुटुम्ब, वंश वा ग्राम भर को दण्ड देने की रीति अब नहीं रही अब पिता अपराध करे तो बेटे से कुछ प्रयोजन नहीं और बेटा करे तो पितासे कुछ नहीं प्रत्येक जन अपने कर्मका भोगता माना जाता है और यही अभिप्राय ईश्वरी नियम का जान पड़ता है। यद्यपि न्याय एक शब्द है जो पुस्तोंमें लिखा है परन्तु इसका पूरा वर्ताव बहुत कम हुआ है तो भी सरकार अंगरेज ने इस पर अपने कानूनके द्वारा कुछ बर्ताव किया है। यही कारण है कि यह राज उत्तम माना जाता है ॥

(३) कहीं यह न समझना कि निर्दय दण्डों के देने से अपराध होने बन्द हो गये होंगे, वा राज प्रबन्ध उत्तम तर रीति से हुआ होगा- कदापि नहीं। किन्तु दिन दोपहर बिना रक्षा के प्रबन्ध के रास्तों में चलना कठिन था। अब गरीब हो वा अमीर बिना किसी भेद के अपराधी को कानून अनुसार दण्ड दिया जाता है। कोई बच नहीं सक्ता। यद्यपि दण्ड पहिले के समान कड़े नहीं है तो भी अपराध और उपद्रव कम होते जाते हैं। क्योंकि नरम दण्ड पाने से लोगों के स्वभाव भी नरम होते जाते हैं। यह मेरा विचार है कि ऐसी नीतिज्ञ सरकार में फांसी देना वा बेतों से पिटवाना जो भयानक दण्ड है न होने चाहियें। फांसी के बदले जन्म स्याह और बेत के बदले कैद वा जुर्माना

होना बहुत है। तो भी सरकार का राज प्रबन्ध अब ऐसा उत्तम है कि एक जन बिना भय बड़ी २ दूर की यात्राकर सक्ता है। यदि प्रबन्ध में कुछ निर्बलता है और अपराध सर्वथा अभी नहीं मिटे तो उस का कारण वकीलों की अधिक संख्या होना है चोर और दुष्टाचरण लोगोंके सहायक बन जाते हैं, वा बहुधा पुलिस के अफसरों के घूस लेने और अयोग्यता से दुष्टदंड से बच जाते हैं। मजिसट्रेटों को पुलीस की सच्चाई में सन्देह रहता है इस कारण वह अपराधी को दण्ड नहीं देते। हमारी सम्मति है कि पुलीस में सुशिक्षित जन भरती किये जावें और मूर्ख स्वार्थी चुन २ कर निकाल दिये जावें। जब पुलीस धर्म न्याय से काम करेगी तो वकीलों को अपराधियों के छुड़वा देने का कम अवसर मिलेगा॥

देश में शान्ति है कुछ इस कारण नहीं कि कठिन दण्ड दिये जाते हैं किन्तु न्याय होने के कारण। सरकार की ओर से साधारण कैदियों के साथ ऐसा सलूक किया जाता है कि पहिले समय में राज कुल के कैदियों के साथ भी ऐसा नहीं होता था। जलखानों के कर्मचारियों की देख भाल रहती है कि वह कैदियों के साथ अनुचित वर्ताव न करें, उनकी आरोग्यता की रक्षा की जाती है और कुछ टूटी फूटी शिक्षा भी दी जाती है। अपराध कम होने का एक मुख्य कारण यह भी है कि शिक्षा प्रकरण ने लोगों के हृदय से बहुत मूर्खता और दुष्टता

के विचारों को दूर कर दिया है और करता जाता है, उन लोगों तक में जो लूट मार करने का उद्यम हो करते हैं शिक्षा के प्रचार करने के प्रयत्न किये जाते हैं, सरकार को हाकिमों को आज्ञा होनी चाहिये कि वह दया सहित न्याय किया करें, ऐसा न हो कि कानून बदला लेने का यंत्र वा उनके चित्त के भड़काव के आधीन हो जावे क्योंकि सब हाकिम एक प्रकार के न्यायवान नहीं होते, कोई अत्यन्त कठिन कोई बड़े चिड़ चिड़े प्रकृति के कोई मत विषय में बड़े कटर होते हैं। कोई मैजिसट्रेटों के अधिकार को अपने स्वार्थ का द्वारा बनाये हुए हैं जिसका फल यह होता है कि उन को अपकीर्ति हो जाती है, अभिप्राय यह कि कानून के भले बुरे बर्ताव में हाकिमों के स्वभाव और नीति का बहुत कुछ प्रभाव प्रजा पर पड़ता है, ईश्वर करे कि हमारी सरकार प्रजा पीड़ित और न्यायवान कर्मचारियों के भेद को भली भांति समझ ले॥

(४) कानून के उलझाव और बहुतायत के होने से प्रजा को कठिनाई भी बढ़ती जाती है। यद्यपि सब साधारण की शिक्षा में कानून शामिल नहीं है तो भी इस में विज्ञता न होने का दोष क्षमा योग्य नहीं। गवर्नमेन्ट का अभिप्राय यह है कि कानून का जानना प्रजा का कर्तव्य है। यह बात सर्वथा अन्यथा तो नहीं किन्तु उसके ही किये विचार योग्य है हम नम्रता पूर्वक प्रार्थना करते हैं कि प्रजा को सरल आज्ञा

दारोगा आदि में फौज के कानून की शिक्षा जिनसे उसका सदैव काम पड़ता है माल के कर्मचारी वा पाठशाला के शिक्षा के द्वारा होनी चाहिये जिसमें न जानने का बहाना न रहे। ऐसे अपराध बहुत कम हैं जिनको मनुष्य स्वभाविक अपराध न मानता हो तौभी बच्चों को उन को सिखला देना अधिक लाभ कारी है। जब वह उन बातों को जान लेंगे तो बड़े होने पर दंड के भय से उन अपराधों से बचने का प्रयत्न करेंगे और अनजान लोगों को भी उनके विषय समझाते रहेंगे। इसका उत्तम फल यह होगा कि बहुधा जन नीतिज्ञ सुजन हो जावेंगे। यथार्थ में उत्तम नीतिज्ञ राजका अभिप्राय नहीं होना चाहिये। कि बिना दण्ड दिये प्रजा के आचरण शुद्ध बनादें। यद्यपि सरकार अपराधों को नहीं करने वाली है कराने वाली नहीं, तो भी यदि उसकी आज्ञा से अपराध कम हो, प्रजा का आचरण ठीक हो और सरकार सर्व प्रिय हो तो कैसे बड़े लाभ की बात है।

सुख।

सुख और दुःख ऐसे शब्द हैं जिससे कोई जन अनजान नहीं। स्त्री पुरुष अमीर गरीब सब इसको जानते हैं, दुःख को कोई नहीं चाहता सब सुख के अभिलाषी हैं। एक भेदी सब के साथ लगा रहता है जो प्रत्येक के हृदय की दशा को बतला देता है। वह सुख है। तुम देखते ही बता दोगे कि वह किस दशा में है। ध्यान करोगे तो जान पड़ेगा कि मनुष्य के सुख को बाहरी वस्तुओं से बहुत सम्बन्ध है अर्थात् किसी सुन्दर वस्तु के देखने वा सुगन्ध वा सुन्दर रंग के फूलोंके गुच्छे के संघने से वा स्वादिक व्यंजन वा फल को जिह्वा पर रखने से मन प्रसन्न हो जाता है। मनुष्य अपना चित्त प्रसन्न करने के लिये नाना प्रकार की सामग्री तैयार करता है। कोई २ जन इन्द्रियों के भोगसे मन प्रसन्न करना चाहते हैं परन्तु वह क्षण भर के होते हैं उन का परिश्रम अच्छा नहीं! विद्यार्थी पुस्तकों के पढ़ने से प्रसन्न होता है और दूसरा जन पर स्त्री गमन से परन्तु ध्यान से देखने से जान पड़ेगा विद्यार्थी का पठन सुफल है। वह जन जो धन्धे में लगे रहने से प्रसन्न रहता है वे काम होने पर दुःखित होता है उसका दिन बड़ी कठिनाई से कटता है अरोग्यता भी मनुष्य को सुखी बनाये रहने को हेतु है इसके बिना सब सुख व्यर्थ है। मनुष्य को अपरमित

भोजन छादन मिथ्या विहार से अपनी आरोग्यता नष्ट न करना चाहिये। यद्यपि आरोग्य रहना मनुष्य के आधीन नहीं तौ भी सामर्थ भर सावधानी करना मनुष्य का कर्तव्य है। सुख सब पर एकसा प्रभाव प्रगट करता है। जो बड़ा आदमी है उस को बड़े २ अभिप्राय पूरे करने मे सुख होता है जो छोटा है उसको छोटे से ही प्रसन्नता हो जाती है॥

जैसे एक तहसीलदार को डिपटी कलक्टर हो जाने से प्रसन्नता होती है वैसे ही एक चपरासी के जमादार हो जाने मे होती है। जैसे एक विद्यार्थी को ऐम, ए, पास करने से होती है तो दूसरे को केवल दरजा चढ़ने से। बादशाह को एक देश विजय करने से प्रसन्नता होती है तो गरीब को रोटी ही मिल जाने मे होती है। मनुष्य को सुख अपने बराबर वालों के सामने बढ़ने पर होता है। जब वह उन से अधिकार वा पद में बढ़ता है तो वह उसके सुख का हेतु होता है। विद्यार्थी को पूरी प्रसन्नता तब होती है जब वह अपने साथियों से बढ़ कर माना जाय। इसी प्रकार एक डिपटी कमिश्नर को अपने आधीन कर्मचारियों को उन्नति देने में इतना आनन्द नहीं होता जितना उसको अपने साथियों से बढ़ कर प्रतिष्ठा प्राप्त करने में होता है। इस प्रकार प्रत्येक उद्यम वाले को उस समय अधिक आनन्द होता है जब उस को अपने समान लोगों में बढ़ कर प्रतिष्ठा प्राप्त हो जैसे उस लुहार को उस

समय प्रसन्नता होती है जब उस को बनाई हुई वस्तु को दूसरों के बनाये हुए को अपेक्षा अधिक आदर हो। परन्तु ध्यान करने मे ज्ञात पडता है कि यह कोई सुख सदैव का नहीं इधर उबाल वा तरंग उठो और उधर बुझो। अब थोड़े सुखों का व्योरा सुन लो तनखाह बढ़ाने, अधिकार मिलने, सरकार से प्रतिष्ठा प्राप्त करने, बिरादरी में प्रतिष्ठा पाने, धन मिल जाने रुपया कमाने, मुकद्दमा जीतने, ऐश्वर्य्य और वैभव हाथ लग जाने, ग्रंथ लिखने में यश होने, घर में पुत्र जन्म होने, विवाहादि उत्सव होने, फौजदारी के मुकद्दमें से छुटकारा पाने, बन्दो से मुक्त होने का सुख माना जाता है यह नाना प्रकार और रंगों के हैं हम कहां तक गिनावें परन्तु यह सब सदैवी रहने वाले नहीं, इनमें किसो का परिमाण नहीं किया जा सकता। जैसे कपड़ों का नाम कपड़ा और सब रंगोंका नाम रंग है ऐसे ही सब सुखों का नामसुख है गृहस्थी में यदि आरोग्यता, धन, प्रतिष्ठा के साथ कुटुम्ब में एकत्र रहनेका अवसर मिले और सब का पूरा स्नेह हो। जुदाई का ध्यान तक न हो तो यह सुख भारो है। परन्तु नित्य का सुख सुख नहीं समझा जाता, वह बान हो जाती है। सुख में रहने वाले को तनिक भी दुःख को चोट लग जावे तो उस को बडा कष्ट हो जाता है। और यह भी विदित है कि मनुष्य एक सुख को छोड दूसरे को खोज में लग जाता है, और कभो असावधानी से सुख को दुःख मान लेता है

और उसी में मर जाता है और अंतिम श्वांस तक उस को नये सुख प्राप्त की आशा लगी रहती। वह बड़े प्रयत्न करता है यहां तक कि उस को प्राप्ति की आशा में अपनी जान तक को भय में डाल देता है और कभी उस को बे प्रमाण अभिलाषा करने में खोटे २ कम कर बैठता है॥

परन्तु दृढ़ चित्त वाले, धर्म पर आरूढ़, पवित्र पुस्तकों को पढ़े हुए, ईश्वर भक्त जन ऐसी वृत्ति को पसन्द करते हैं कि जो न सुख को सुख और दुःख को दुःख जानें अर्थात् दोनों में सम रहें, वह ऐसी अवस्थामें रहने को ईश्वर की प्रसन्नता मानते हैं।

इन्द्रियों के विषय भोग के पूरा करने के सुख प्रगट में बहुत उत्तम और प्रिय जान पड़ते हैं परन्तु किस काम के हैं. वह क्षण भंगुर हैं और बहुधा पाप कर्मों में ले जाते हैं। जब यह सीमा से बढ़ जावेंगे तो आनन्द की जगह दुःख हो जावेगा और सच्चा सुख कोसों दूर भाग जायगा सच्चा सुख वह है जो बाहर मुख पर प्रकाश और अन्दर हृदय में प्रेम का उत्साह और आनन्द भर दे। दिखावट से उस को कुछ संबन्ध नहीं। वह सुख मनुष्य जाति पर दया करने से प्राप्त होता है, संसार में जितने बुद्धिमान तत्वदर्शी हुए हैं वह सब इसके ही खोज में रहे नहीं उन्हों ने परोपकार के लिये अपना तन मन धन तक दे डालने में दुबधा तक न की। वह लोग धन्य हैं जो अपने भाइयों और देश के

अर्थ लगे रहते हैं और उनके भला करने में अपने प्राण और धन को तुच्छ समझते हैं * ॥

संगत का प्रभाव

(१) संगत का प्रभाव अवश्य होता है। (२) कुसंग का प्रभाव तुरन्त ही दीख पड़ता है। (३) मनुष्य को अपने उद्यम के लोगों से मुख्य सम्बन्ध होता है। (४) मनुष्य के संग के लिये मनुष्य हो चाहिये ॥

(१) हम नहीं जानते कि संसार में कौन ऐसी वस्तु है जिस का कुछ न कुछ प्रभाव न हो। जहां पत्थर में कोई वस्तु रखने से कुछ समय में पत्थर और मट्टी में रखने से मट्टी और नोन में रखने से नोन हो जाता है वहां इस बात को समझना भी क्या कठिन है कि सुगंध के संसर्ग से एक वस्तु में सुगंध और दुर्गंध के संसर्ग से दुर्गंध आ जाती है। एक सुजन कहते हैं कि

* मेरा व्याख्यान "मनुष्य का सच्चा सुख किस वस्तु में है और कैसे प्राप्त होसक्ता है" देखो, मूल्य ≠) ॥ काशीनाथ, सिरसा ज़िला इलाहाबाद ॥

यदि घोड़े को गधे के पास बांधोगे तो यद्यपि उस का रंग न बदलेगा परन्तु दुलत्तियां मारना ज़रूर सीख लेगा। इसी प्रकार मनुष्यको दशा है। भली बुरी संगति के अनुसार उस पर प्रभाव उत्पन्न होता है॥

(२ यह स्वभाविक है कि सब जन अपनी बुद्धि और धन को अधिक समझते हैं। इस भूल में पड़ कर गोते भी बहुत जन खाते हैं। जिन लोगों ने यह दावा किया था कि हम पर किसी के संग का प्रभाव न पड़ेगा अंत को उन का दावा झूठा निकला। जो जुवा होते हुए देखते हैं आप खेलते नहीं अंत को खेलने लगते हैं। इसी प्रकार परस्त्रीगामी, चोर झूठे दुष्टों के संग मे लोग ऐसे ही हो जाते हैं। यदि कोई बच रहा तो आश्चर्य्य ही मानना चाहिये। और यह बात भी परीक्षा की हुई है कि शुभ कार्य्य का शीघ्र प्रभाव नहीं होता, कारण यह कि भलाई एक सीधी वस्तु है और मनुष्य के मन पर से छल हटाने वाली है, और प्रकटमें इस का कम आदर होता है परन्तु इस से परलोक सुधरता है। अंत को भली संगत का फल भी कुछ न कुछ होता है। जैसे एक जन अनपढ़ है परन्तु पढ़े लिखे लोगों की संगत में नित्य बैठता है तो ज़रूर उसको बोल चाल उठना बैठना उनके समान हो जावेगा॥

(३) जैसे मनुष्यों की प्रकृति भलाई की ओर कम होती है, यदि उन पर भली संगत का प्रभाव न होता तो अब तक भ-

लाई का नाम कोई न लेता भला होना तो दूर रहा और मूर्खता का समय कभी श्रेष्ठ न होता। देखो शिष्य को गुरु के संग से गुण प्राप्त होता है, भक्त जनोंके संगसे ईश्वर भक्ति और विद्वानों के संग से विद्या प्राप्त होती है, ऐसे ही चतुर बोलने वालों से चतुरता के साथ बोलना सीखा जाता है. उत्तम लेखकों के साथ उत्तम लिखना आता है। अभिप्राय यह कि जैसी संगत वैसी बुद्धि हो जाती है। सब जीव जन्तु अपनी जाति का संग रखना चाहते हैं इसी प्रकार मनुष्य अपने उद्यम और विचार वाले के संग रहना पसन्द करता है मनुष्य को उचित है कि अपनी आगे की उन्नति करने के लिये अपने से अधिक बुद्धिमान अनुभव युक्त, विश्वसनीय और शुभचारण वाले की संगति सब काम छोड़ कर करे। जैसे विद्या के साथ उसके अनुसार व्यवहार करना अवश्य है, उसी प्रकार नये युवों को मनुष्यत्व सीखने के लिये सभ्य मण्डलियों में रहना उचित है। बड़े २ विद्वान् जिनको पहिले बड़ी मण्डलियों में बोलने का अवसर न मिला हो अवसर पड़ने पर बोलने से जी चुराने लगते हैं। और यदि बोलते हैं तो उन की ज़बान लड़खड़ाने लगती है जिस से सभासदों के सामने तुच्छ बनते हैं। मनुष्य को उचित है कि जब तक आप अपनी परीक्षा न कर ले वा अपने से उत्तमतर लोगों के वर्णन करने की रीति न सीखले किसी सभा में बोलने का उत्साह न करे परन्तु फिर भी बोलना बोलने से

आवेगा क्योंकि जो काम तुम कर नहीं सक्ते यदि उसको न करोगे तो फिर उसका करना किस प्रकार आवेगा। जैसे यदि तैराक बनना चाहते हो तो पानी में जाने से जी मत चुरावो, नहीं तो उस गुण को न सीख सकोगे॥

(४) मनुष्य मिलनसार प्रकृति का है इस कारण उस के लिये संग होना अवश्य है। यदि ऐसा न होता तो वह अपने आवश्यक कामों को पूरा न कर सक्ता और कोई एक दूसरे की सहाय्यता न कर सक्ता फिर उन्नति का समय न आता। वह मनुष्य जो दूसरे की संगति नहीं चाहते और सब सम्बन्धों को तोड़ कर अलग रहते हैं यदि उनको जंगली कहें तो कोई चिन्ता नहीं यद्यपि संगति योग्यता और अधिकार के अनुसार उत्तम होती है परन्तु अपने से बडे के पास बैठने में प्रतिष्ठा विद्वता और बुद्धि बढ़ती है। और कम पूंजी, कमाने मूर्ख और खोटे आचरण वालों के पास बैठने से प्रतिष्टा और भलमसी में बाधा लगती है। रईसों और अमीरों का उचित है कि बुद्धिमान और चतुर लोगों को अपना साथी बनावें। क्योंकि साधारण मूर्खों के संग रहने से तेज प्रताप नहीं रहता, आचरण बिगड़ जाता है जिस से रियासत में अप्रबन्ध और गड़ बड़ हो जाती है प्रसिद्ध बुद्धिमान जो देयेजानसकलवी ने एक प्रश्न के उत्तर में कहा मैं अभ्यास करके उत्तम लोगों के संग में जा बैठता और जैसे कि ह से कुत्ता पूछ हिलाता है वैसे ही मेरी गवें उत्तम लोगों के संग

को अभिलाषा में फड़कातो रहतो हूँ। कुत्ता जैसे अनजान आदमी को देख कर भूंकता है वैसे ही मैंभी दुष्टों को देख कर जलता हूं इसी कारण वह लोग मुझे कलबो अर्थात् कुत्ता कहते हैं।

जब सब प्रकार के संग का प्रभाव होता है तो यह उचित नहीं कि देशहितैषी सुजनो के संग से लाभ न उठाया जावे वा अपने से उत्तमतर लोगों के संग को परम गुण कारी न मानें॥ यदि दुष्टाचरण लोगों को संगति से तुम तुरन्त वैसे ही न हो जावोगे तो भी अपकीर्ति के तो भागी होजावोगे और सबसे ग्लानि की दृष्टि से देखे जावोगे इसके विरुद्ध यदि बुद्धिमान और विद्वानों के संग बैठोगे तो सर्व प्रिय और बुद्धिमान हो जावोगे। अब तुम भी अपने मन में समझ लो कि तुम किस को पसन्द करते हो सुजनता को वा कमीनेपन को। यदि चाहते हो कि तुम्हारा गौरव बढ़े तो दुष्टों की संगति से ऐसा भागो जैसे मच्छर हवा से भागते हैं नहीं तो तुमारी वह दुर्गति होगी जिसका देखना कोई सुजन पसन्द न करेगा॥

सभ्य श्रेष्ठ वचना

(१) आवश्यकतानुसार बोलना। (२) बुरा न बोलना।

(३) स्त्रियां सिठनियां न गावें । (४) संसार की यात्रा किस रीति उत्तम प्रकार से पूरी हो । (५) जिह्वा की करतूत और फल ॥

---

(१) प्रथम बातको तोलो तब फिर मुखसे बोलो, ज्ञानवान विना अभिप्राय नहीं बोलते । और बोलते हैं तो अभिप्राय से अधिक नहीं, एक बुद्धिमान का बचन है कि अधिक बोलना पागल पन है, दूसरे ने कहा है कि ईश्वर ने मनुष्य को दो कान और एक ज़बान दी है । बस कहने से सुनना दूना चाहिये । यदि तुम से न पूछा जावे तो चुप रहो । अधिक बोलना व्यर्थ है उस से अपना गौरव तेज प्रताप घटता है । सिवाय इसके अधिक बोलने में अधिक भूलें होती हैं । जो बचन मुख से निकालो समझ सोच कर निकालो जिस में नीचा न देखना पड़े ॥

(२) कभी असभ्य शब्द जिह्वा पर न लाओ । कोई जन किसी अनुचित अनार्य्य शब्द को अपना "तकिया कलाम" बना लेते हैं । वा बात२ में आप शपथ खाते हैं वा दूसरों को खिलाते हैं वा किसी को झूट झूठा कह बैठते हैं वा बिना प्रयोजन किसी से आमदनी, खर्च, वस्त्र, भोजन स्थानादि के विषय प्रश्न कर बैठते हैं वा आपस में गाली गलौज वा ठट्ठा मसखरी करने लगते हैं वह नहीं जानते कि इस पवित्र यंत्र से ऐसा बुरा काम न लेना चाहिये ॥

(३) प्रयत्न करना चाहिये कि स्त्रियां विवाह वा मृत्यु के अवसर पर अश्लोल और असभ्य गोत न गावें। यह कैसे लाज को बात है कि बहू बेटियां अपने बड़ों के सामने ऐसा निर्लज्जता और ढीठ पन करें और वह डाढें हिला हिला कर हंसे, जो जोभ असभ्य वचन बोलती है, उत्तमतर होता यदि वह गूंगो होती और जो बे परिमाण चलती है उस के होने को भी कुछ आवश्य-कता नहीं क्योंकि बिना प्रयोजन वह पाप भागी बनती है॥

(४) घमंड, अभिलाषा, मिथ्या बोलना, निन्दा, आदि कर्मोने प्रकृति इनको राह में कांटे हैं वा रेलवे लाइन पर बड़े पत्थरों के समान हैं जो उसको चाल को रोकते हैं। जिस को सोधी राह पर बे खटके चलना स्वीकार हो वह इन डाकुओं को जड़ काटे और अपने बचावके लिये नम्रता, सत्यता, आदर, सत्कार, सहन शोलता, सरल स्वभाव रक्षकों को सदैव अपने साथ रक्खे। आशा है इनको सहायता से संसार का पंथ कुशल पूर्वक कट जावे। यद्यपि दूसरो दशा में भो यह यात्रा पूरी हो जायगी परन्तु पीछे सिवाय अपयश के और कुछ शेष न रहेगा इससे अधिक स्मारक चिन्ह और क्या हो सक्ता है॥

(५) दूसरे पशु जीव जन्तु से अधिक मनुष्य को उत्कृष्टता क्यों प्राप्त है। इन्द्रियों को क्रिया जैसो मनुष्य में होती है वैसो इन में भो है। जिस प्रकार वह जन्मते मरते हैं उसी रीति से यह भो, परन्तु वह एक पवित्र वस्तु है जिस के कारण मनुष्य-

यों से उच्च पद का माना जाता है। वह बोलने की सामर्थ है जो जिह्वा द्वारा उसको प्राप्त है। एक दूसरे को इसके द्वारा एक दूसरे के विचार प्रगट होते हैं वह हृदय के कोष की ताली है, भेद को छिपाना चाहते हो तो ज़बान पर मत लावो। उसके प्रभाव से मनुष्य उच्च पद को प्राप्त होता है और उससे ही वह निन्दनीय और कमीना हो जाता है। यह चाहे तो लाखों का रुधिर बहवा दे और उसी प्रकार फांसी पर चढ़वा दे। उस की रच्चा जादू का काम देती है लाखों शत्रुओं को मित्र बना देती है बने कामों को बिगाड़ देती है राज सिंहासन पर बैठा देती है द्वारा२ पर भीख मंगवा देती है शान्ति और उपद्रव दोनों की यह बाग है यही युद्ध की मूल होती है यही मनुष्य को धर्मात्मा और ईश्वर भक्त बनाती है और यही अधर्मी और पापी बनाती है आर्य्य सभ्य जन इसको अपने आधीन रखते हैं और स्वतंत्र नहीं होने देते। वह बिना आवश्यकता नहीं बोलते और बोलने के समय चुप भी नहीं रहते, ऐ प्यारो यदि तुम आर्य्य सुजन हुआ चाहते हो तो प्रथम अपनी ज़बान को शुद्ध करो। वह बोलो जो सब की पसन्द हो और तुमारा बोलना ऐसा हो कि मानो मोती बर्सा रहे हो वा फूलों की झड़ी बांधे हुए हो। नहीं

तो तुम दवा के पान न समझे आवोगे फिर पीछे पछताये से कुछ लाभ न होगा, आगे तुम्हारी इच्छा * ॥

बड़ों का आदर और प्रतिष्ठा करना उचित है ।

(१) युवा पुरुषों की फरयादें । (२) उनके दूर करने के उपाय ॥

---

(१) यह फरयाद अब बहुधा सुनाई देती है कि कमी बुद्धि के विद्यार्थी किञ्चित् पढ़ कर सर्वज्ञ होने का दावा करने लगते हैं और अपने बड़ों को तुच्छ मानने लगते हैं। उनको न तो किसी का भय है न लाज स्वतंत्र बने फिरते हैं। जेन्टिलमैन तो कहलाना चाहते हैं परन्तु सभ्यता कहीं देखने का नहीं है। माता पिता को जिन्होंने उनको पाला पोसा पढ़ाया व्याहा गालियां देते हैं और उन को मूर्ख समझते हैं। माता से अधिक

---

* मेरा व्याख्यान "सभा में उत्तम रीति से बोलना सीखने के नियम" देखो मूल्य ≈)—काशीनाथ सिरसा ज़िला इलाहाबाद॥

स्त्री का सत्कार करते हैं नौकर होते हैं तो माता पिता और दूसरे सम्बन्धियों की सहायता नहीं करते जिनको उन पर दावा है, केवल अपने पेट पर हाथ फेरते हैं ॥

माता पिता की आज्ञा पालने की अपेक्षा अपनी स्त्री की आज्ञा और इच्छा पूरी करने में अधिक उद्यत रहते हैं, उस के ऐसे अधीन हो जाते हैं कि सब कमाई उस के ही हाथ पर लाकर रख देते हैं जब वह उनके हाथ में पैसा उठा कर दे तो उनको मिले, स्त्री जो स्याही सफेदी करे उनको उसमें कुछ दखिल नहीं, सगे भाई से बिगड़ जावे तो इन को कुछ परवाह नहीं परन्तु पत्नी कभीं अप्रसन्न न हो,स्कूल से पढ़ कर उठे तो बस फिर गुरु से क्या प्रयोजन, रास्ते में कहीं वह मिल गये तो मुंह छिपायेंगे कि प्रणाम न करनी पड़े, लेना देना तो दूर यहां केवल तनिक सिर झुकाने में यह असमंजस है कृतघ्नी ऐसे हैं कि यदि कहीं उच्च पद पहुंच गये तो अपने को शिष्य बताने में बड़ा लाज समझने लगे, ईश्वर जाने यह कहां से लिखे पढ़े और सीखे कदाचित् माता के गर्भ से डिगरी लेकर निकले हो, यह तो उनकी गत की गई जिन का दूसरों की अपेक्षा उन पर अधिक दावा है शेष नातेदार किस गिनती में हैं,किन्तु उन से उलटी प्रभुता ठान लेते हैं ॥

(२) हमने इन फरयादों पर ध्यान दिया हम यह नहीं कह सक्ते कि यह सब की सब ठीक हैं परन्तु इन को मिथ्या भी

नहीं कह सके, क्योंकि कहीं २ ऐसी दशा देखी गई है, इन फ-रयादों को दूर करने के लिये हम अपने पाठकों से कहते हैं कि यदि वह बड़े हैं तो स्वयम् बुद्धिमान हैं यदि वह छोटे लड़के हैं तो ऐसा प्रयत्न करें कि उन के विषय कोई ऐसा न कहे कि वह बड़ों का आदर नहीं करना जानते। कभी कोई शब्द अपने बड़ों के विषय अनादर का मत कहो। यदि उन की ओर से कोई दन्ड भी तुम्हें मिला हो तो उसको सह लो क्योंकि वह तुम्हारे शत्रु नहीं जो अप्रसन्न हुए हैं तो तुम्हारे लाभ के लिये हुए होंगे। यदि माता पिता से तुम्हारी विद्वता अधिक हो गई है वा तुम उच्च पद को पहुंच गये हो तो उन्हें कभी तुच्छ न समझो, तुम अन्त को उन के पुत्र ही हो आकाश से तो उतर हो नहीं हो। तुम उन की प्रतिष्ठा न करोगे तो दूसरा कौन करेगा उनका नि-रादर हुआ तो यथार्थ में तुम्हारा ही हुआ तुम्हारी ही हानि हुई। स्त्री का निस्सन्देह सत्कार करो परन्तु माता पिता के सत्व का पूरा विचार रक्खो। संसार में किञ्चित् धन के लिये कोई अप-कीर्ति मत कमाओ यह केवल एक कच्चे थोड़ी देर के तेज रंग के समान है जो शीघ्र ही उड जाता है। योग्य गुरु को पूजा करना तुम्हारा कर्तव्य है इस में तुम्हारी भाग्यमानी योग्यता और यश समझा जावेगा। उनकी उचित आज्ञा पालन करने में कभी आगा पीछा न करना चाहिये। अपनी रहन सहन चाल ऐसी रखनी चाहिये जिसमें उन का कोई निरादर न स

मझा जावे। इनके सिवाय उन सब का जो अपने से अधिकार, अवस्था, विद्या, बुद्धि में अधिक हो आदर करना उचित है। सब से प्यार और नम्रता के साथ बर्ताव करना चाहिये। इस में तुम्हारा क्या बिगड़ता है मुफत में यश मिलता है।

यदि तुम उदारता और प्रसन्नता के साथ सब से बरताव करोगे तो लोग तुम्हारा मान करेंगे और तुम्हारे मित्र बहुत बन जायेंगे। इस में तुम्हारा कुछ खर्च नहीं। हे प्यारो मैं तुम को एक बार और उपदेश करता हूं कि जहां तक हो सके ऐसे काम करो जिससे तुम्हारी सुकीर्ति हो। यही सब नीति धर्म का मूल है॥

दृढ़ता

किसी काम को आरम्भ करने के प्रथम मन में भली भांति समझ लो कि मुझ से यह पूरा हो सकेगा वा नहीं जिसमें पीछे कठिनाई न सहनी पड़े, परन्तु जब उसको आरम्भ कर चुके हो उसके निबाहने ही में वीरता और पुरुषत्व है। अपने विचारको सदा दृढ़ रक्खो, अपनी बात से मत हटो, अपने बचन को प्रतिपाल करो, जहां पांव रक्खो दृढ़ता सहित रक्खो चाहे जितनी, आपत्तियां सहनी पड़ें। अपनी सचाई मत छोड़ो। अच्छा बताव

जिस कारण कोई २ प्राचीन बुद्धिमान बहुत प्रसिद्ध हुए हैं स० मुद्रों को किस ने छान डाला, संसार के नकशे क्यों कर तैयार हुए, पहाड़ और जङ्गल काट कर राह क्योंकर बनी धातुओं का वर्णन क्योंकर जाना गया, सहस्रों कलें कैसे बन गईं विद्या कला कौशलता में नयी बातोंके प्रभाव कैसे निकले। परदेश की यात्रा और विजय किस प्रकार की गई, आकाश के तारा गण कैसे जाने गये, धन और चातुरी कैसे प्राप्त हुई,? इन सब प्रश्नों का उत्तर केवल यही है कि दृढ़ता के जब दृढ़ सुजन को कई बार अपने काम में सफलता भी नहीं होती किन्तु हानि होती है तो भी वह विचार को नहीं त्यागता। और ज्यों २ निष्फलता होती जाती है त्यों २ वह अधिक परिश्रम से उस में इस आशा से लगता है कि कभी तो मुझे सफलता होवेगी। जब कोई दुर्घटना वा बड़ी हानि हो जाती है तो भी उत्साही जन अपने अश्रुओं को कभी ठट्ठा करने का अवसर नहीं देता। वह ऐसा संतोषी और दृढ़ स्वभाव जान पड़ता है कि मानो उस को कोई हानि नहीं हुई क्योंकि वह जानता है कि उस का बदला हो सकता हो वा न हो दोनों दशा में पछताना व्यर्थ है। कच्चे चित्त के विद्यार्थी दृढ़ता त्याग देते हैं जब परीक्षा में उत्तीर्ण नहीं होते और पढ़ना छोड़ देते हैं अथवा अत्यन्त निरास होकर अपने प्राण को संकट में डाल देते हैं। परन्तु बुद्धिमान और न्याय वान दृढ़ विद्यार्थी जानते हैं कि इस में अथवा हमारे परिश्रम

में कुछ कमी हुई अथवा कोई ऐसी घटना हो गई तब वह और अधिक मनलगा कर पढ़तेहैं और सफलता प्राप्त करते हैं। एक जन दफ़ई घोड़े पर सवार हुआ, चढ़ना ठीक न जानता था, रास्ते में एक खाई आ पड़ी, साथी ने घोड़े के एड़ी मारी और उस को उछाल कर पार हो गया, यह सिर के बल गिर पड़, फिर घोड़े पर चढ़ बैठे घोड़ा कूदा और फिर गिर पड़े, फिर तीसरी बार ऐसाही किया अन्तको चौथी बार कुशल पूर्वक फांद कर पार हुए। तैमूर बादशाहने जंगल में एक चैंटी को देखा कि उस ने बहुत बार एक टीले पर चढ़ने का प्रयत्न किया परन्तु गिर २ पड़ी अन्त को चढ़ ही गई। इस चींटी को देख कर तैमूर ने दृढ़ता सीखी, कई बार हार जाने के उपरान्त अन्त में विजयी हुआ। ऐ वीरो? समयके हेर फेर से कभी मत घबराओ, अपने विचार पर दृढ़ बने रहो वीरों का यही स्वभाव हुआ करता है॥

सुजनता।

(१) मनुष्य का बड़ापन। (२) वंश से बड़ा पन। (३) अपने गुण से बड़ापन। (४) फल॥

---

(१) मनुष्य सब जीव जन्तुओं से बोलने की सामर्थ के कारण स्वभाविक ही बड़ा है। तनिक और आगे विचार कर देखो उस को एक दूसरे से बड़ा पन कैसे प्राप्त होताहै ? बुद्धिमान वा उत्तम गुण वा उद्यम के कारण होता है, अथवा बड़े पद वा अधिक धन होने के कारण, वा सच्चाई और पवित्रता के कारण, उत्तम आचरण, योग्यता वा गौरव के कारण, जो उत्तम शिक्षा का फल है। वा किसी मुख्य सुयश वा बीरता के कारण, एक को उत्कृष्टता प्राप्त होती है। यह सब सुजनता वा बड़ापन है। मनुष्यों को जो पूरा पुरुषत्व रक्खा चाहते हैं इस से अनविज्ञ न रहना चाहिये। स्मरण रक्खो सुजनता ऐसा बड़ा गुणहै कि इस के सामने धन और पद कुछ सामर्थ नहीं रखते। सुजनता अथवा सुशीलता को धन की आवश्यकता नहीं किन्तु धन को इस को है। सुजन कठिन आपत्तियोंमें भी उत्साह हीननहीं होताहै। संसार की कोई वस्तु उस के मन को लुभा नहीं सकती। अब सुजनता अथवा बड़ा पन दो प्रकार का होता है एक वंश का दूसरा वह जो अपने गुण का हो॥

(२) वंश का बड़ा पन वह है जो बाप दादों में था और गुण का वह जो अपने गुण और योग्यता से हो। तुम्हारा पिता बड़ा धनवान् है, अधिकार में डिपटी कलक्टर वा सिविल जज्ज वा विद्वान् है,वा बुद्धिमें अफलातून दूसरा और बीरता में रुस्तम था परन्तु तुम में वह गुण एक भी नहीं। तो बतावो यह बड़ा

पन तुम्हारो रहन और तुम्हारे शरीर को कहां तक लाभ पहुंचा सक्ता है? तुम्हारा पितामहा, पुण्य शील, सत्य शील परोपकारी था तुम्हारा परदादा वा नगर दादा सुजनता के सब गुणों से भूषित था परन्तु तुम में वह एक भी गुण नहीं ? तो क्या अपने पूर्वजों को सनद और तकमों को गले में लटकाय हुए लोगों को दिखाते फिरोगे। यदि उन की पुरानी हड्डियों और सड़ी हुई मट्टी के नाम पर तुम चाहते हो कि अपने नाम को प्रकाश करें और इनके शुभकार्य्य से आप लाभ उठावें तो इस से अधिक और क्या मूर्खता होगी। तुम ने पढ़ा होगा कि जाटों के योग्य लड़के उच्च पदों पर पहुंच गये थे और वज़ीरों के अयोग्य बेटे अधिकारों से उतार दिये गये थे वा कनान दुष्टाचारण का आदमी था तो उस को उसके पिता नूह की सुजनता ने कुछ भी लाभ नहीं पहुंचाया। बस फिर तुम क्यों बाप दादों के बड़े पन पर भरोसा किये बैठे हो॥

(२) योग्यता और सुजनता वही लाभकारी है जो मनुष्य आपही रखता हो। प्रयत्न करो कि तुम अपने पूर्वजों से बढ़ कर काम करो, किसी के बड़े बूढ़े सदा जीते नहीं रहते और न सदा जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करनेके लिये बंधक होते हैं। गृहस्थी के धन्धे सबके सिर पर रहते हैं जो केवल अपनी ही योग्यता से पूरे होते हैं। वह जो इस परीक्षा में कायरी और आलस के कारण पूरे उत्तीर्ण नहीं होते अर्थात् गृहस्थी के

पीछे पैर और संसार से नाता तोड़ फकीर हो जाते हैं तो समझ लो कि उनमें कोई अपना गुण नहीं। यह समझ रक्खो मनुष्य अपने वचन और कर्मका आप ही उत्तर दाता होता है इस लिये तुम सुशील बन कर ऐसे उत्तम काम करो और सुयश कमाओ कि जिस में तुम्हारे पुरुषों को मुरदा मिट्टी में फिर कैसे जीव आजावे। ऐसा न हो कि तुम मुरदा मट्टी के नाम से पहचाने जाओ। सुनो यदि तुम्हारे शरीर में कोई नोचे तो पीड़ा किस के होगी। तुम्हारे वा तुम्हारे पिता के। सरदी तुम को लगेगी तो तुम को गर्म कपड़े पहनने और हाथ तापने की आवश्यकता होगी। धूप तुम को लगेगी तो छाया खोजने की आवश्यकता तुम्हें होगी, प्यास में पीना, नींद के समय सोना तुम्हारे पुरुषों में था सो तुम में है, वह यह काम अपने लिये करते थे तुम अपने लिये करते हो। शारीरक काम सब के अलग २ होते हैं। भूख जब तुम्हें लगे तो तुमही उसको दूर करोगे और किसी के भोजन करने से तुम्हारा उदर न भरेगा। इसी प्रकार तुम्हारे पुरुषोंका सुयश उनके लिये लाभकारी था तुम अपने लिये कुछ प्रयत्न करो। यह ईश्वरी नियम है कि सब अपने लिये आप करें मनुष्य की बात यह नहीं है। जैसे मुर्गी अपने बच्चे को उसी समय तक दाना चोंच से खिलावेगी जब तक वह आप उठा सकने योग्य न होगा। जब वह अपना काम आप करने योग्य हो जाते हैं तो लातों से मार कर दूर कर देती है कि जावो अपना

चरो चुगो। युवा अवस्था में यदि घर बैठे रहोगे और बड़े बूढ़ों को कष्ट दोगे वा उनकी सुजनता को छुन्डो वा गोट समझ कर बेचते फिरोगे तो बड़े पश्चाताप का विषय होगा। किसी २ जन का यह सोचना व्यर्थ है कि हम में उनके समान साहस नहीं उनका समय बहुत उत्तम था यदि पुरुष होकर देखोगे तो कोई काम ऐसा नहीं है जिस को तुम्हारे पूर्वज कर सक्ते हों और तुम पर न हो सकता हो समय की फरयाद केवल तुम ही नहीं करते किन्तु सदा से यह होती आई है। तुम जानते हो जो बेटा बाप से कम हिम्मत हो वह कुपूत और जो अधिक हिम्मत वाला हो वह सुपूत और जो बराबर हो वह पूत कहलाता है॥

(४) ऐ प्यारो। तुम सुपूत बनने के लिये सदा कटि बद्ध रहो, और अपनी सुजनता सुशीलता और सुयश से न केवल अपने कुटुम्ब और वंश का मान बढ़ावो किन्तु अपनी जाति और देश का भी। तब तुम अपने जीवन को देश के लिये लाभकारी बना कर अपना जन्म सुफल करोगे। तुम सुयशी बने रहोगे और अपने पीछे आगे की पीढ़ी के लिये उत्तम उदाहरण छोड़ जावोगे *॥

* मेरी अनुवादित एक उरदू पुस्तक " सच्ची शराफ़त क्या है और किस तौर हासिल हो सकती है और सच्चे शरीफ़ में

सत्यबोलना

सत्य बोलना एक ऐसा बड़ा गुण है जिस का होना प्रत्येक जनके लिये अवश्य है, विशेष कर भारत में तो इसकी बहुत ही ज़रूरत है। क्योंकि अब जो अधिक झूठा, छली कपटी, बातूनी मुकद्दमें लड़ाने वाला, दुष्ट स्वार्थी, गवाही देने का उद्यम रखने वाला होता है उस को बहुधा उसी प्रकार के लोग स्याना बुद्धि मान समझते हैं। सत्य वादी लोगों को जिनकी संख्या बहुत कम है। वह मूर्ख और समय के रंग से अनजान बताते हैं। में

आश्चर्य यह है कि मिथ्यावादी को झूठ बोलने और कपट करने में तनिक भय और लज्जा नहीं होती यद्यपि वह मन जानता रहता है कि जो मैं करता वा कहता हूं सब अन्यथा है। झूठी शपथ करना तो मानो ऐसे लोगों का उद्यम है "वह उनका तकिया कलाम हो रही है" न्यायालय में तो वह शपथ करने में सदा उद्यत रहते हैं। दूकान दार जो झूठ बोल कर पैसे कमाता है मुनशी जो छल से घूस लेता है वह बड़ा चतुर

का कुल्लंत अज़ीम होजाती है" छपी हुईभी मौजूद है मूल।)॥ इस को अवश्य देखिये सर्व साधारण और शिक्षा प्रकरण में तीन सहस्र कापियां इसकी दोवार छपवाई में बिक चुकी हैं साहिब डाइरेक्टर ने इस को प्रतियां मंदरसों के लेने लिये सरक्यूलर जारी किया है। काशीनाथ सिरसा ज़िला इलाहाबाद॥

और कमाल माना जाता है। नौकर जो सिवाय अपने मासिक वेतन के अन्याय से रुपया जमा करता है वा जो अर्थ की बात न बता कर पूंछने वाले को टाल देता है इस को पाप नहीं समझता॥

(१) सच्ची बात कड़वी होती है इस लिये अर्थ निकालने के निमित्त झूठ बोलना न्याय युक्ति समझा गया है। जैसा युद्ध के समय एक राजा दूसरे से बचन वा प्रतिज्ञा भङ्ग करके अपना अर्थ निकालता है तो सर्व साधारण लोग उसको चातुरी समझते हैं और अवगुण नहीं मानते इसी प्रकार लोग मुकद्दमें होने में छल कपट से मतलब निकालने में नहीं मानते। इसी प्रकार जब किसी पर फौज़दारी का मुकद्दमा हो तो उसके छुड़ाने के लिये झूठ बोलना उचित समझा जाता है॥

(२) एक महात्मा का बचन है कि सत्य से लोक परलोक दोनों बनते हैं, ईश्वर प्रसन्न होता है इस कारण मनुष्य को सदा सत्यवादी होना उचित है। कर्म भी सच्चे हों। वह जो सीधी राह चलता है उसकी अपेक्षा जो टेढ़ी चलता है अपनी यात्रा को शीघ्र पूरा करता है जब लोगों को विश्वास हो जावेगा कि जो तुम कहते हो वह सत्य है तो फिर कोई कारण नहीं कि तुम्हारा गौरव न बढ़े। यह नहीं कि जब तुमने कभी भूले से भी सच्च कह दिया तो परीक्षा लेने लगे कि देखो लोग हमारा विश्वास करते हैं वा नहीं। भला यह क्या जरूर है कि तुम सच्च

बोलो तो अपने भाई मनुष्य पर "अहसान" जताओ। नहीं अपने मन में पक्का विचार किये रहो कि जिह्वा सत्य बोलने के लिये है। इस में चाहे किसी का लाभ हो वा हानि तुम स्वतंत्रिति सहित सत्य पर स्थिर रहो जब तुमसे यह पूछा जावे कि तुम कहां जाते हो वा क्या करते हो यदि इस के बताने में अपनी हानि समझो तो झूठ बात बता कर उत्तर न दो किन्तु यह कह दो कि हम वह नहीं बता सकते, पूछने वाला आग्रह करे जैसा बहुधा यहां लोगों की रीति है तो तुम अपने बचन पर दृढ़ रहो॥

(३) हमारे देश में एक कठिनाई और है कि नन्हें २ बच्चों को मायें (सब में तो यह रीति नहीं है परन्तु तो भी बहुत लोगों में है (दूध के साथ झूठ पिलाती हैं) सोते को जगाती हैं तो झूठ बोल कर, रोते को चुप कराती हैं तो झूठा भय दिला कर, झूठ बोल कर खुश करती हैं, झूठे प्रतिज्ञा करती हैं। इस प्रकार झूठ बालकों के स्वभाव में समा जाता है। जब वह बड़े होते हैं तो सच्चा और झूठा के भेद को नहीं जानते यद्यपि शिक्षा उनको सत्य पथ पर लाती है परन्तु उससे क्या बड़ा लाभ हो सकता है जब कि वह चारों ओर से झूठ से घिरे रहते हैं। जैसे वह आप झूठ बोलते हैं और कपट करते हैं तैसे ही दूसरों को समझते हैं आदमी अपनेही मन और शरीरके अनुसार दूसरे भी विचार करता है झूठा सबको झूठा और सच्चा सब को सच्चा

बचाता है परन्तु इससे भी झूठे सच्चों को बहुत धोखे दे जाते हैं जैसे घूस देनेवाला और लेनेवाला और निन्दा करनेवाला और सुनने वाला दोनों बुरे समझे जाते हैं इसी प्रकार झूठ बोलने और सुनने वाले समझे जाते हैं। प्यारो ? जोबात कहो करके दिखावो, उत्तमतर यह है कि विन कहे परोपकार करो, यदि वादानुवाद करते हुए अपनी भूल को समझ जावो तो फिर उस पर आग्रह मत करो, किन्तु तुरन्त अपनी भूल को स्वीकार कर लो और स्पष्ट कह दो कि वह मेरी भूल थी, आप ठीक कहते हैं, वीर वही है जो अपने मुख से अपने अपराध को स्वीकार करता है, अब झूठ बोलने के अवगुण सुनिये, झूठ के बराबर दूसरा अवगुण नहीं, झूठे पर कोई विश्वास नहीं करता वह अपने मन में सदा लज्जित रहता है, उसकी बात पानी की लकीर समझी जाती है, यदि वह अफसर हो भी तौ भी सर्व साधारण की दृष्टि में तुच्छ हो जाता है, झूठा जब झूठ बोलता है तो उस को अपने झूठ को सच दिखाने के लिये झूठी बातों का एक तार बनाना पड़ता है, परन्तु फिर भी झूठे पर ईश्वर की मार होती है "उघरे अन्त न होत निबाहू" वह संसार में सब को शूल की समान चुभता है, मेरी समझ में झूठ ही सब पाप और दुष्ट कर्मों का मूल है जिस को बड़ी वीरता और साहस से उखाड़ना उचित है, नहीं तो तुम जानो अन्त में इस का फल बहुत ही खोटा होगा, ऐ प्यारो झूठे की सङ्गत का फल बहुत बुरा

होता है, उस से बचना चाहिये, सुनो वह जन बड़ा भाग्यमान है जिस के पास सत्य धर्मका द्रव्य हो, वह संसारिक धन से तुम उसके जमा करने में प्रयत्न करो ॥

ऐक्यता।

इस शब्द को सब कोई जानते हैं और इस के अभिप्राय को सब उपकारी और गुणदायक समझते हैं, संसार के प्रबन्ध को जब देखा जाता है तो इसकी बड़ी आवश्यकता समझी जाती है, मनुष्य का स्वभावविक मिलनसार होना स्वयं इस का प्रमाण है, वह ग्राम, नगरों में मिल २ कर रहते हैं और सदा एक दूसरे की सहायता चाहते हैं, राज व्यवस्था जिसको सदा ईश्वरी नियम के अनुसार बनाने का प्रयत्न किया जाता है पुकार २ कर कहती है कि आपस में प्रीति और मिल करके रहो नहीं तो कष्ट सहना पड़ेगा ॥

कुव, मधु मक्खी, कीड़े मकौड़े आपस में मेल करके रहते हैं और एक दूसरे की सहायता करते हैं अत्यन्त लज्जा की बात है कि तुम मनुष्य हो कर आपस में फूट और वैर रक्खो, मनुष्य नाना प्रकृति के होते हैं उनका आपस में मिलना और एक दूसरे से सहानुभूत करना, दुःख सुख में साथी होना

अवश्य है, आकाश की ओर दृष्टि करो जिस में तारागण, नक्षत्र केतु आदि हमारी ओर तक रहे हैं, यह कैसे अच्छे लगते हैं मानों सुहावने बाग में फूल खिल रहे हैं, वा आकाश मानो एक बड़ा शामयाना है जिसमें कंड़ोलों के समान लटके हुये हैं वा वह रत्नों के गुच्छे हैं जो जग मगा रहे हैं, हम को उनसे प्रकाश पहुंचता है, अंधेरी रात में आकाश निर्मल होने पर यात्रा में वह हमें राह दिखाते हैं, समय का प्रमाण बताते हैं, कोई २ इनके भ्रमण में एक जन की भाग मानी और विपत्ति का होना मान लेते हैं, मधु मक्खियां जो एैसे छोटे २ जीव हैं आपस में मिल कर मधु उत्पन्न करता है। यदि मनुष्य आपस मिल रक्खें तो न जाने क्या बड़े २ फल निकलें॥

तरकारियां जो एक स्थान पर उगी हों वा नियम से फुल क्यारियों में किसी बाग में लगी हों तो कैसे प्यारे लगते हैं, इसी पर विचार कर लो कि ईश्वर का प्रयोजन है कि मनुष्य जाति ग्राम नगरों में मिल कर रहें, मनुष्य का शरीर अलग २ तत्वों के मेल से बना हुआ है वह एक दूसरे के विरुद्ध है। इससे भी विदित है कि हमारा मिल कर रहना ईश्वरी नियम के अनुसार है। छोटे २ जो आपस में मिल जावें तो बड़े २ काम कर दिखावें जैसे दो इकाई मिल कर ग्यारह हो जाते हैं वैसे ही दो आदमी मिल जावें तो पहाड़ को गिरादें, नदी की चाल को रोक लें, ऐक्यता के प्रताप से मनुष्य सब काम कर सकता

है, अपने भाइयों के साथ भलाई कर सकता है, अपनी जाति और देश को बाहर के शत्रुओं से बचा सक्ता है, विचार कर देखो भारतवर्ष में इस को कितनी आवश्यता है, क्योंकि वह प्रत्येक चढ़ाई करने वाले के सामने आपस की फूट के कारण हाथ जोड़ कर दास बन जाता है धन और प्रतिष्ठा नाश करता है, कारण यह है कि यहां नाना मतों के लोग रहते हैं सब के विचार एक से नहीं हैं, मूर्खता के कारण एक दूसरे से ईर्षा द्वेष रखते है और अपने देशी भाइयों से ग्लानि करते है जब यह दशा है तो मेल कैसे हो, वे घर की घूमने वाली जाति जैसे सांसी, पखिवाडो, भेड़घुट, गधेले, बाजीगर, कंजर आदि और नीच जातें जैसे धोबी, चमार, धीमर आदि भी एक गुन इससे उत्तमतर हैं, क्योंकि इन में मेल है, वह सरकारी अदालतों में नहीं जाते अपने झगडे अपनी बिरादरी में तोड कर लेते हैं। हम तनिक बात में अदालत में दौडते है और एक दूसरे के विरुद्ध प्रयत्न करते हैं। हम जानते हैं कि फूट ऐसी विपत्ति है कि जहां इसका तनिक प्रवेश हुआ, सुख का दुःख और बस्ती का उजाड़ हो जाता है, यह घर, कुटम्ब नगर देशों को सत्यानाश कर देती है परन्तु शोक यह है कि इस पर भी लोक इस का त्याग नहीं करते, इसके सिवाय फूट का कारण आपस का ईर्षा द्वेष, स्वार्थ और धन स्त्री और धरती भी होती है। इस के हेतु मनुष्य अयोग्य काम कर बैठता है सचाई और धर्म से विमुख

हो जाता अपयश कमाता है,लड़ता है झगड़ता है,दंड पाता है, कटमरता है,मातापिता तकभी अपनीसंतानसे जानसेतंग होजाते हैं, सहोदर भाई स्वभाविक स्नेह को तोड़ कर एक दूसरे से वेर करने लगते हैं और पक्के शत्रु होजाते हैं, यदि मिल कर रहते हों तो भी यह ताना ऐसे हैं कि इनको ऐसे जुदा कर देते हैं मानो वह भाई हो नहीं हैं एक मा बाप से पैदा ही नहीं हुए,सच्चे मित्र हों तो उन्हें ऐसा बिगाड़ देते हैं कि एक दूसरे के रुधिर के प्यासे बन जाते हैं, बुद्धिमान तो समझते हैं कि इनको बे प्रमाण प्रीति बड़े २ पापों में फसाती है इस लिये वह उन से बचे रहते हैं, इस कारण वह सब समय प्रसन्न दीख पड़ते हैं और जीवन का सुख भोगते हैं, वह मित्रता और बैर दोनों से छूटे रहते हैं, कोई २ तुहमत लगाने और चुगली खाने से दूसरे को प्रीति में विघ्न डाल देते हैं ऐसे दुष्ट अपने देश के बैरी महानिन्दनीय हैं, ज्ञानवान् ऐसों की सङ्गत से बचे रहते हैं और मूर्ख लोग उन के कपट में फस कर अपना सुख धन और प्रतिष्ठा सब गवा देते हैं ॥

यद्यपि फूट और बैर हमारे देश के प्रसिद्ध काल हैं, परन्तु जब इस अविद्या के वृक्षकी जड़ें उखाड़ कर खारी समुद्र में डाल दी जावेंगी तब यह मिटेंगे। परन्तु यह वृक्ष विद्या के फावड़े शिक्षा के कुदाल से काटा जा सक्ता है। इसका विद्यमान् होना सब प्रकार हानि कारक है। यहभी याद रक्खो कि

फूट शान्ति को शत्रु और दरिद्रता के प्राण हैं देखो अमरीका मिल ऐक्यता के प्रताप से किस ऐश्वर्य्य और वैभव को प्राप्त हुए हैं समस्त संसार उन से दबता है और हम फूट से अपना देश, धन सब खो बैठे हैं। जहां देखो यह नाश कारक विद्यमान है। सिवाय इस के मत का द्वेष अभी चारों ओर फैल हो रहा है। ईश्वर करे कि हमारे देश को इस दुष्ट से शीघ्र छुटकारा मिले जिस में हम सब मत वाले आपस में इस रीति करके मिलें मानों हम सब एक ही माता पिता की संतान हैं, मत द्वेष की अग्नि को भडकाने वाले बहुधा मूर्ख और कमीने प्रकृति के लोग हुआ करते हैं जो अयोग्य अगुवाओं की प्रेरणा से खड़े होजाते हैं, सज्जन लोग व्यर्थ उनके साथ आटे में घुन के समान पिस जाते हैं। आओ भाइओ हम तुम दूध चीनी के समान आपस में मिल जावें। चैन से रहें विदेशीयों से अपनी अदूरदर्शिता और मूर्खता पर हंसी न करावें॥

ऐक्यता की जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। जिन वस्तुओं और कामों को मनुष्य असम्भव समझता था मिलने डङ्के की चोट कह दिया कि हम सहज में उन को पूरा करा देंगे भला फिर जो सम्भव काम हैं वह क्यों अटके रहेंगे ऐ प्यारो पाठको। तुम बिना जात, मत, रङ्ग के भेद के एक दूसरे की सहायता करते रहो, इस के प्रभावसे तुम्हें धन और भाग्यमानी

प्राप्त होगी। परन्तु स्मरण रक्खो कि जब ऐक्यता करो तब भलाई के काम में तब बड़े आनन्द से जीवन व्यतीत होगा॥

सच्ची भलाई क्या है।

(१) मनुष्य जीवन क्या है। (२) तुम किस में भलाई समझते हो। (३) सच्ची भलाइयां। (४) यदि तुम चाहो तो तुम भी कर सक्ते हो॥

---

(१) इस बात को यथोचित समझते होगे कि मनुष्य का जीवन बेठिकाने और क्षण में मिट जाने वाला है वह पानी के बुलबुल के समान है अथवा एक स्वप्न के सदृश है। और मां बाप, भाई, बहन, पति, पत्नी, मित्र, स्वामी, सेवक के नाते भी ऐसे ही हैं जैसे मनुष्य जीवन है। वा यह कहनाउचित है कि यह सब यात्री एकही नाव पर सवार हैं जिसको जीवन कहना चाहिये। और संसार नदी है जिस में से जा रहे हैं, नाव पर उतरने से सम्बन्ध टूट जाता है। संसार एक चलती सरांय है, आरम्भ से आज तक किरोड़ों आए और चल दिये। इन्हीं तारों की छाया तले हम से उत्तमतर लाखों फिर गये और सूर्य और चांदके प्रकाशका आनन्द देख गये। इस प्रकार राजा महाराजा

से रंक तक की गतिको समझ लो। अब तुम फिर भी ऐसे होते रहने के प्रमाण को सहज में समझलोगे संसार की सब वस्तु चाहे वह स्थावर हो चाहे जंगम मृत्यु के पञ्जे के नीचे होकर विनाश होती है। सिवाय इसके मनुष्य जो उनके लिये खय २ कर मरता है मृत्यु होने पर कोई भी उसके काम नहीं आती। परन्तु इस थोड़े दिनों के जीवन में सुख को कौन लेगया? जिस ने मनुष्य जाति में भलाई की और उस के अर्थ तन मन धन अर्पण कर दिया॥

(२) तुम इस अनोखी भलाई को अब तक न समझे होगे कि वह क्या है क्योंकि तुम जानते हो कि मन्दिर, मसजिद कुवें, तालाब बनवाना पुण्य हैं वा दान देना भलाई है। भूखे को खिलाना, नङ्गों को वस्त्र देना भलाई है। हम भी कहते हैं कि यह उत्तम शुभ काम है परन्तु जिस भलाई को हम कहते हैं वह इन सब से बड़ कर है। भला तुम भी विचार करो कि जो रुपया हम मंदिर आदि में खर्च करेंगे वह क्या सदा रहेगा कदापि नहीं। प्रथम तो पहिले से ही ऐसे लाखों स्थान बने हुए हैं जिन में से बहुतों को पाखण्डियों ने अपना मुख्य स्थान बना लिया है, इस कारण इन को दुष्टता और अनर्थ और के आलस्य जनक स्थान कह सक्ते हैं। बहुत से जो किरोड़ों की लागत से बने होंगे उजड़े पड़े हैं चमगीदड़ों के घर हो रहे हैं हिंसिक जीवों का स्थान है, वहां कुत्ते भूंकते हैं, देखने से भया-

नक मालूम होते हैं। बहुधा वे चिन्ह और सर्वथा मिट गये इस प्रकार और दूसरे स्थानों को समझ लो जो सर्व साधारण के लाभ के लिये बनाये जाते हैं। जैसे कोई अपना नाम शेष रखने के लिये पुत्र जन्म की अकांक्षा करता है वैसे ही इन स्थानों के बनाने मे थोढ़े दिन की कीर्ति है। क्या आश्चर्य है कि वह पुत्र वा उसकी संतान आगे बेसंतान होकर जावें और पीछे फिर कोई नाम लेवा और पानी देवा बाकी न रहे यदि रहा भी तो उस से मुरदे की आत्मा को क्या लाभ हुआ। किसी को पुरानी हड्डियों के उखाड़ने की क्या आवश्यकता है। कौन पूछता है कि तुम्हारे बाप दादे का क्या नाम है, अपने ही पर समझो कि तुम किससे पूछते हो और तुमसे कौन पूछता है। सब हित के लिये स्थान बनाने मे यथार्थ प्रयोजन की आवश्यकता है। वह भलाई से उतर कर है और थोड़े दिनों की है सदैव की नहीं। भूखे को खिलाना नङ्गे को पहिनाना उसके यावज्जीवन के लिये उस को निश्चिन्त नहीं करता क्योंकि कुछ समय बीतने पर वह भूखा और नङ्गा बन जावेगा। यद्यपि यह भलाई है परन्तु सब से बडी नहीं क्योंकि यह थोड़ी देर की है जो दान पुण्य नियत जनों को दिया जाता है वह भलाई नहीं क्योंकि वह उसको पद वा सत्व मानते हैं वा हम उनसे वाह २ सुनने के निमित्त ऐसा करते हैं वा बिरादरी के भय से वे मन भी रीति पूरी करते हैं। यदि यह कहो कि ईश्वर का पूजन करना

वा उसके एक होना स्वीकार करना सबसे नम्रता करना भलाई है तो भी विचारने से प्रकट हो जावेगा कि यह तो हमारा कर्तव्य ही है। किसी पर निहोरा नहीं और यदि भालाई है तो ऐसी बंधी हुई है कि उसका लाभ केवल हमें ही पहुंचता है। दूसरों का इस में क्या प्रयोजन सिद्ध होता है। यदि संसार त्याग कर साधु हो जाना वा एकान्त सेवी हो जाना भलाई है तो बतलाईये इससे इससे दूसरे का क्या लाभ है॥

(३) ठहरो मैं तुम्हें बताता हूं कि सच्ची भलाई क्या है। वह यह है कि भलाई मनुष्य जातिके साथ की जावे, वह एक जाति वा देश को बिना भेद और कमी के लाभ पहुंचाती है जिस में स्वयम् उस सुधार कर्ता की भी उन्नति है। सुनो जो देश और जाति का सुधार करते सच्चे मन से उनको लाभ पहुंचाते हैं, उनको स्वतंत्रता बढ़ाने में प्रयत्न करते हैं उनकी भलाई को सदा विचारते हैं उन को दरिद्रता से बचाते हैं, आपस की फूट बैर को दूर करते हैं और उनको आपस में प्रेम और मेल बढ़ाने का उपदेश करते हैं और विद्या गुण में उन्नति करने को प्रेरणा करते हैं, सर्व साधारण की आरोग्यता की रक्षा के लिये प्रयत्न करते हैं, सब को धर्म और न्याय के पथ पर चलाते हैं वह सच्चा भलाई करने वाला है ऐसे जन ईश्वर के प्यारे देश का सुधार करने वाले सच्ची भलाई करने वाले हैं *

---

* स्वामी दयानन्द सरस्वती इस प्रकार की देश भलाई करने

जैसे आजकल दो एक सच्चे देशहितैषी पैदा हुए हैं जो रात दिन इस चिन्ता में लगेहुए हैं, यद्यपि बहुधा मूर्ख जन इनको निन्दा करते हैं और उनको हानि पहुंचाने में प्रयत्न करते हैं तो भी वह महात्मा अपने दृढ़ विचार से तनिक नहीं हटते और बुरा करने वालों से बदला लेने की तनिक चिन्ता नहीं करते और न इन की निन्दा से कुछ खेदित होते हैं। यदि व्यतीत काल के इतिहासों को जानते हो तो डाक्टर बाटन और हैमिलटन की बीरता को स्मरण रक्खो कि उन्होंने अपने देश के लिये कैसे बड़े २ लाभ के काम किये। शाहजहां और फरुखशेरस अपनी उत्तम सेवा के बदले क्या मांगा ? रुपया, हाथी, घोड़ा वा अपने निज के लिये कोई राज वा अधिकार। किन्तु अपने देशी भाईयों के लिये निर्विघ्न वणिज करने की अनुमत, अपने देशीय माल पर से महसूल की माफी बैठने के लिये स्थान और अपने ही माल

वालों में दिव्य दृष्टांत हुए हैं। उन की स्थापित की हुई आर्य्य समाज का ९वां, नियम यह है "प्रत्येक जन को अपनी उन्नति पर संतोष न करना चाहिये किन्तु सब की उन्नति में अपनी उन्नति समझना चाहिये" मेरा अनुवादित श्रीयुत ह्यूमसाहब का व्याख्यान जो नेशनेकांग्रेस के उद्देशों के विषय है जिस में देश हित और देश सुधार करने के लिये अत्यन्त उत्तम उपदेश है। देखिये मूल्य ≠) काशीनाथ, सिरसा, ज़िला इलाहाबाद॥

की रक्षा के लिये अपने ही लोगों में से पहरों और चौकी देने वालों के रखने की अनुमत, प्राप्त करलो, विचार करो न वह बुद्धिमान अङ्गरेज़ों की जातिमें उत्पन्न होते और न अङ्गरेज़ हिन्दुस्तान के चक्रवर्ती राजा होते कलम्बस ने क्या किया ? अपने प्राण को संकट में डाला और योरप के लिये एक नया लोक खोज किया। ऐसे ही और बहुत हुए हैं जिनका नाम सदा प्रतिष्ठा के साथ लिया जायगा॥

(४) यदि तुम यह विचार करो कि हम किस गिनतीमें। हम कौनसा काम सच्चो भलाई का कर सकते हैं, तो तुम्हारा यह विचार ठीक नहीं टटेरी आकाशको ओर टांग करके सोती है कि अगर वह गिर पड़े तो उन पर उठालूं। उसके विचार में आकाश कोई शरीर धारी वस्तु है। माना कि यह उसक स्वभाविक बात है परन्तु यदि सच है जो उसको वीरता के विचार को देखो, महात्मा यूसफ के मोल लेने के लिये तो वह बुढ़ियां उद्यत थी जिस के पास केवल एक सूत की अट्टी थी, उसने उस को लिया वा न लिया इससे हमारा प्रयोजन नहीं मुख्य प्रयोजन यह है कि ऐसे दृष्टान्त से तुम उपदेश प्राप्त करो तुम नई पौद हो यदि चाहो तो बहुत कुछ कर सक्ते हो॥

बुरों से कैसा बिवहार करना उचित है।

(१) सुन्दरताई और भोंडापन। (२) स्वभाविक बान नहीं बदलती। (३) अन्तिम बाद का न्याय ॥

---

(१) संसार में कोई बस्तु ऐसी नहीं जो सुन्दर वा भोंडी भली वा बुरी न कही जावे। जैसे धातुओं का भलाई वा बुराई उनकी तासीर के विचार से कठिन वा नर्म लाभकारी वा हानि कारक, पसन्द योग्य वा न पसन्द योग्य कही जाती हैं। इसी प्रकार बनस्पति के विषय में भी कहा जाता है, पशु जीवजन्तु भी इससे बाहर नहीं हो सकते उनमें से मनुष्यले लो तो वह अपनी सूरतऔर गुण और अवगुण के कारण बुरा वा भला कहाजावेगा ॥

(२) किसी की आदि प्रकृति वा स्वभाविक रंग न तो हम बदल सक्ते हैं और न बदलने की सामर्थ रखते हैं जैसे सर्प, भेड़िया, सिंह आदि हिंसक जंतुओं का स्वभाव हम नहीं बदल सक्ते इसी प्रकार बाज़ का चिड़ियों को मारना, बिल्ली का चूहे पर और कुत्ते का बिल्ली पर झपटना है। अग्नि का जलाना स्वभाविक है उस को कौन बदल सक्ता है। काला गोरा और गोरा काला नहीं बन सक्ता है। चाहे हम अपनी ओर से पूरा प्रयत्न करें परन्तु इसका होना सम्भव नहीं, हां हिंसक पशुओं को प-

कड़ कर चाहे हम पिंजरे में बन्द करदें, इनकी डाढ़ी तोड़दें, इनके पंजे कतर डालें तो यह दूसरी बात है, काले पर कोई बनाया हुआ रोगन लगादे और गोरे पर स्याही मल दे तो न तो वह असली रंग हो सक्ता है न सदैव रह सक्ता है। इस प्रकार जो फल फूल स्वभाविक स्वादिष्ठ और सुगंध युक्त हैं हम चाहें उन को कैसा ही चरणों से मर्दन करें परन्तु तौ भी वह अपना स्वाभाविक गुण न छोड़ेंगे। परन्तु जिस पात्र में विष होगा उस में से विष ही टपकेगा और जिस में मधु भरा है उस से मधु। परन्तु विष और मधु और पात्र की धात स्वभाविक वस्तु है, हम अपने अर्थ के लिये उन को तोड़ फोड़ अपनी इच्छानुसार बना लेते हैं परन्तु तौ भी उनके असली स्वभाव और गुण को नहीं बदल सक्ते॥

(३) उत्पत्ति और शिक्षा बुद्धि के भेद सब मनुष्यों के स्वभाव ऐसेही नहीं होते। इस कारण उनकी दशा का बदलना भी एकसा नहीं हो सक्ता। किसी २ को जो खोटे कर्मों की बान हो जाती है तो वह भलाई का नाम सुनते ही पूंछ दबा कर भाग जाते हैं, जहां किसी ज्ञानवान ने शिक्षा करना चाहा तो वहां से चल दिये जैसे हवा में बादल। खड़े हो तो हृदय को वज्र बना कर और बैठे हैं तो मन को ऐसा कड़ा पत्थर करके कि सचाई को एक न मानेंगे वह अपने जैसों में बैठ कर सुजनों की भलाई पर ठट्ठे मारते हैं और दुष्टता करने का उद्यम करते है।

भ्रातृ भाव दूर करके सदा सब को हानि करने का विचार करते हैं। ऐसे मनुष्य गरीब, अनाथ, विधवा, वृद्ध अपङ्गों पर भी दया नहीं करते, शिक्षा, धिक्कार और दण्ड को भी परवाह नहीं करते। अपने निर्लज्ज पन को बड़े उत्साह और प्रसन्नता से वर्णन करते हैं, बेटे हैं तो माता पिता के प्राण के ग्राहक शत्रु हैं, उनकी प्रतिष्ठा धन यश को नाश कर रहे हैं, शिष्य हैं तो गुरु की शिक्षा और उपदेशों को उठा कर आले में रक्खे हुये हैं, स्कूल से निकले तो गर्दभ के समान दुलत्ती चलाने लगे। ऐसे ही दुष्ट जन दूसरों को बहकाने और बिगाड़ने के लिये शैतान हैं, जिस प्रकार मोठी घास और सरपत खेत के लाभकारी पौदों की बाढ में बाधक होती है तो उस को जड़ से उखड़ना पडता है, इसी प्रकार जब किसी जन का आचरण ऐसा बिगड़ जावे कि किसी प्रकार न सुधर सके और भले मानसों को उनसे पगड़ी बचाना कठिन पड़े तो उनका ऐसा पूरा प्रबन्ध करना उचित है कि दूसरों को भी भय हो, नहीं तो भीतरी प्रबन्ध और शान्ति में बड़ा विघ्न होगा। लोहा लोहे से ही काटा जाता है इस लिये बुरों से बुरा सलूक करना अनुचित नहीं किन्तु ऐसी करने से उनके से उनके और सृष्टि के साथ भलाई करना है और जो जान बुझ कर बुरों से वह सलूक करता है जिसके वह योग्य नहीं उन को भी उनमें ही समझना चाहिये। चोर का सहायक चोर झूठे का झूठा, जुवारी का जुवारी क्यों न कह-

जावेगा? नीति की पुस्तकों में इस के बहुत दृष्टांत हैं और इतिहासों में भी असंख्य ऐसे अनुभव लिखे हैं। तुम अपने अनुभव से भी कई प्रमाण इस बात के जानते होगे कि दुष्टों के साथ भलाई करना भलों के साथ दुष्टता करना है। इससे यह फल न निकलना चाहिये कि हम सर्व साधारण को बदला लेने की प्रेरणा करते हैं, किन्तु इस बात पर और देते हैं कि यथाशक्ति न्याय के अनुसार सब काम करो। मन में द्वेष और बैर को न ठहरने दो। परन्तु यह भी न्याय है कि दुष्टा चरण वाला जब प्यार से उपदेश करने पर भी सीधी राह पर नहीं चलता और जिससे केवल हानि पहुंचने के और किसी बात की आशा नहीं, और मनुष्य का कोई यत्न उसके सुधारने में काम नहीं करता तो उससे वही सलूक करना चाहिये जिस के वह योग्य है। यदि हम ऐसा न करेंगे तो स्वयं मनुष्य जाति के वैरी होंगे। स्मरण रक्खो जैसे दुष्टोंसे कभी भलाई नहीं होती वैसे ही सुजनों से कभी बुराई नहीं होती। हमारी समझ में दुष्टों से बुराई इस नियत से करना कि वह ठीक राह पर आजावें और सर्व साधारण को उनसे पीड़ा न पहुंचे यथार्थ में भलाई करना है। यदि उनकी ओर से हमारे मन में कोई द्वेष न हो। यदि ऐसा होगा तो हम बदला लेते हैं और पापी बनते हैं॥

जीवन का कुछ भरोसा नहीं।

(१) मौत का कोई समय नियत नहीं। (२) मरना अवश्य ही होगा। (३) मृत्यु किसी को पसन्द नहीं (४) मृत्यु भी लाभकारी है॥

(१) मनुष्य यद्यपि या तो अपने को सब सृष्टि में सबसे उत्कृष्ट माने हुए हैं, परन्तु उस के जीवन का कुछभी ठिकाना नहीं। कोई २ केवल संसार की हवा ही लेकर चल देते हैं, कोई थोड़े दिन हवा खाते रहे और फिर सिधार गये, कोई जीते ही मृतक के समान हैं, कोई २ जन्म दिन से मृत्यु के दिन तक बराबर रोगी बने रहते हैं और नाना प्रकार की पीड़ा और दुःख में फसे रहते हैं। दिन रात रोने पीटने आहे करने से काम रहता है बस इसी दशा में चल देते हैं इनकी गति देख कर रोंगटे खड़े होते हैं। कोई २ ऐसे हैं कि जन्मे और आराम में पड़े सब अवस्था, लड़कपन, युवा, और वृद्धपन में कटी कभी रोग और संकेतों का नाम तक न सुना, कोई जीवन पर्यन्त दरिद्र में ही फसे रहे, कोई बड़े लाड़चार में पले सुख भोग में रहे और अन्त को संसार से विदा हुए॥

आश्चर्य है तो केवल यह है कि क्यों सब की दशा और रहन सहन एक सा नहीं है। इस अवसर पर बहुधा लोग कहते हैं और प्रमाण देते हैं कि संसार में आवागमन लगा

हुआ है, मनुष्य पिछले जन्म के कर्मों के फलों को इस जन्म में भोगता है और दूसरे लोग कहते हैं कि ईश्वर की यह सृष्टि है इस में उसने सब ही प्रकार के जन उत्पन्न किये हैं॥

(२) संसार में कोई कितना ही बढ़ जावे, धन ऐश्वर्य्य, सामर्थ प्राप्त कर ले परन्तु अन्त में मृत्यु उसको भी नहीं छोड़ती चाहे कोई धन में कारून, घमंड में फराऊन, देश विजयोयों में सिकन्दर, ऐश्वर्य्यमें जमशेद, भागमानोमें फरेदूं, न्यायमें नौशेरवां, प्रजा पोडनमें जुहाक, दातव्यमें हातमताई संतान की अधिकाई में रावण, स्वरूप में युसुफ, कुरूप में लापलेण्डो, बुद्धिमांनो में लुकमान, बल सामर्थ में रुस्तम, शरीर के सुडौलपन में इस्फन्द यार, लोभ में महमूद गज़नवी संतोष में फीरोज़ शाह तुगलक, दृढ़ता में बाबर, शान्ति प्रिय और सब धर्मवालों को एक दृष्टि देखने वालों में अकबर, मत द्वेष में औरङ्गजेब, विषयासक्त में मुहम्मद शाह, दुष्टता मे अफगान, बीरता में सिक्ख राज भक्त में हिन्दुस्तानी, चातुरी में चीनी, हास्यमें ईरानी अतिथि सत्कार और डकैती में अरब, यती में तिब्बती, सुन्दरताई में जार्जियन, भोलेपन में हबशी युक्ति और बुद्धि में यूरोपियन और एमेरीकयन कोई क्यों न हो मृत्यु की नङ्गी तलवार से कोई नहीं बचा न बचेगा। पहाड़ हो, चाहे बालू भूमि हो, समुद्र हो, चाहे टापू हो कहीं इससे जान बचाना सम्भव नहीं। जिधर जाइये यह साथ है, उस का होना सत्य है। माता पिता का एकलौता

पुत्र हो हों और वह वृद्ध भी हो, कंगाल और अपाहज भी हों परन्तु जब समय आता है तो यह निर्दय काल उसको भक्षण किये बिना नहीं मानता। वह पेगम्बर अवतार साधू, महात्मा, राजा महाराजा, बादशाह, फकीर, अमीर, हाकिम, रियाया स्त्री, पुरुष, बूढा जवान, बच्चा किसी की पक्ष नहीं करता, जब जिसका समय आया और यमदूत अपना काल पाश लेकर विद्यमान हुआ वा क्या मजाल है कि नियत समय से एक क्षण का भी अवकाश दे। यदि मौत के बदले रुपया, भूमि ली जाती तो कदाचित् धनवान बच जाते, इस दशा में मौत भी बिचारे कंगालों के भाग में रहती, परन्तु यह सब सामग्री विनाशवान है वह प्राण किस प्रकार बचा सकती है।

जब यह विदित है कि मौत के पंजे से किसी को छुटकारा नहीं और उस का स्मरण पापों से बचाता है और अन्त में सुयश का भागी बनाता है और जो मौत को भूले रहते हैं उन पर फिटकारें पड़ती रहती है, बस जो जन चाहें कि हमारा सुयश मरन के उपरान्त रहे वह मौत को स्मरण रख कर परोपकार करें॥

(४) नब्बे सौ वर्ष का वृद्ध हो, रोग से मरणान्त अवस्था में हो, चिता में पहुंचने को तैयार ही हो, अन्धा हो, लाठी के सहारे से चलता हो, ऐसा निर्बल हो कि एक २ पग चलने में ठोकरें खाता हो अत्यन्त दरिद्री हो, कोढ़ी हो वा दूसरे परम-

ग्लानि योग्य रोग से दुःखित हो, कि लोग उसकी पास बैठने से ग्लानि करते हों, कोई उसका सहायक और साथी भी न हो। अभिप्राय यह कि एक जन सब प्रकार के कैसा ही महा दुःखी हो फिर भी वह मरना नहीं चाहता और जीने की ही अभिलाषा करता है। विश्वास न हो तो किसी ऐसे से पूछ देखो मरने का नाम सुनते ही देखो तुम को कैसे दुरवचन कहता है और तुम्हारे कुटम्ब भर को कोस डारता है। सब जानते हैं कि मृत्यु अवश्यही होनी है परन्तु अन्तिम स्वास तक सब का यही प्रयत्न रहता है कि हम उससे बच जावें। परन्तु आज तक मौत से कोई न बचा न आगे किसी के बचने की आशा है परन्तु इस से बचने के लिये प्रयत्न जो किये जाते हैं उस से विदित है कि कोई इसको पसन्द नहीं करता। हां इस में यह कहा जा सक्ता है कि जब कोई पसन्द नहीं करता तो कोई जन आत्म घात करके क्यों मर जाते हैं। सुनो आत्म घात करने वालों के मन में पहिले से हो कोई भय लज्जा या दुःख ऐसा समा जाता है कि वह उस को पागल बना देता है। बस जब ऐसी दशा में होता है तो उसका दृष्टान्त ठीक नहीं हो सकता॥

(४) मौत न होती तो संसार में पांव रखने को जगह न होती, सदा अरोग्यता और धन धान्य से पूरित हो कर सब सुखी रहना सम्भव होता तो कोई ईश्वर का नाम तक न लेता।

यह विचार में नहीं आता कि केवल जन्म ही होते रहें और मृत्यु न हो, यदि ऐसा हो तो न जाने क्या २ विपत्ति मनुष्य जाति पर पड़ती रहें। इस लिये ईश्वर ने नियम बांध दिया है कि मौत भी होती रहें। हां समय पर है, यदि युवा मर जाता है तो बहुत दुःख होता है कि क्यों वह संसार में आकर ऐसी शीघ्रता से चला गया, परन्तु विचार करने पर उस पर शोक करना व्यर्थ ही सिद्ध होता है क्योंकि कुटम्बी एक माली के समान हैं और बालक फूल फल के वृक्षों के समान हैं। परन्तु इस वाटिका का स्वामी कोई और ही है (ईश्वर) भला जब स्वामी अपने बाग में से किसी पौदे को उखाड़ दे तो माली को क्या अधिकार है कि कोई उजर करे। उस को कुछ कहना सुनना केवल व्यर्थ नहीं किन्तु एक गुण स्वामी का निरादर होता है इस लिये मुरदे पर शोक करना रोना पीटना चिल्लाना,बाल बखेरना छाती पीटना नास्तिकता है। क्यों दुःख करने वाला अपने जीवन को सदा का समझता है परन्तु एक घड़ी भर का भरोसा नहीं। मृत्यु होना केवल शरीर से आत्मा का अलग होना है। नहीं तो उन दोनों में कोई ऐसी वस्तु नहीं जो नाश को प्राप्त हो। शरीर के सब अंश अपने २ ठीकाने पर सदा बने रहेंगे अर्थात् सब तत्व आग, हवा, जल, मट्टी अलग २ होकर अपनी २ किस्म में जा मिलते है, नाश नहीं होते, यह ठीक प्रमाणों से सिद्ध है कि शरीर में पांचों तत्वों का मेल

थोड़े काल के लिये है सदा के लिये नहीं, यह भली भांति विदित है कि मौत कभी न कभी इस पात्र को फोड़ डालेगी। ऐ प्यारो मौत का नक्कारा हर घड़ी हमारे सिर पर बज रहा है हमें इसके लिये प्रसन्नता से तैयार रहना उचित है हमको उस सड़क पर अवश्य चलना पड़ेगा चाहे प्रसन्नता से तैयार हो वा न हो। मौत का शरबत जो हमारे पूर्वजोंने पिया है हमें भी पीना पड़ेगा और उनकोभी जो हमसे पीछे आवेंगे, चाहे इच्छा करें चाहे न करें। इस पर भी हम यह नहीं समझते कि हम क्यों ऐसा घमंड किये रहते हैं और अयोग्य कर्म करते हैं। हे सच्चिदानन्द, आप हमें सत्य पथ पर चलनेको समर्थ दे॥

हमारी वर्तमान दशा।

राज की ओर से हमें सब प्रकार शान्ति प्राप्त है, फरयाद और अपील करने को न्याय अदालत खुले है जिन में छोटे से छोटे की सुनवाई भी बिना पक्ष पात हो जाती है, हमारी बुद्धि और ज्ञानकी उन्नतिके लिये पाठशालें खुली हुई है,हमारे प्राण और धन की रक्षा के लिये पुलिस नियत है, शत्रुवों के दांत तोड़ने के लिये सेना तैयार है, हमारे रोग चङ्गे करने के लिये औषधालय खुले हुए हैं, रेल हमारी सवारी के लिये

डाक और तार हमारे समाचार पहुंचाने के लिये बने हुए हैं हमारी धरती सींचने के लिये नहरें खुदी हैं। हम पर सरकार ब्रिटिश शासन करती है जो कानून पर चलती है, प्राचीनकाल के समान एक जन की इच्छा पर राज का प्रबंध नहीं चलता कि जो चाहै वह करै, किसी को लूटै किसी को मारै चोरों को पारितोषिक दे वा जिन्हों ने उत्तम काम किये उन के सिर कटवा दे। अब तुच्छ प्रजा में से लेकर राज राजेश्वरी बिक्टोरिया तक सब कानून के आधीन हैं, फिर किसी पर अन्याय क्यों होगा। फ्रान्स और अमेरिका के मिले हुए सूबों में पंचायती राज है, वहां कोई राज वंश नहीं जो सब से पूज्य माना जाय और जिस में राज करना विपत्ति मानी जावे और एक ही ढंग पर होता जावे। पचायती राज में सब से योग्य जन चुना जाता है और पांच छै वर्ष तक प्रबन्ध कर्ता सभा का सभापति बना रहता है। सब छोटी बड़ी सभाएं और प्रजा उसकी आज्ञा कारणी बनी रहती है परन्तु वह भी समय की व्यवस्था के आधीन रहता है। हमारी देशी रियासतें प्रायः एक जन अपने राजा के अधीन है (वह धीरे २ उन्नति कर रही हैं) परन्तु सरकार अङ्गरेजी की छाया के अन्दर रहने के कारण प्रजा पर बहुत अन्याय नहीं करने पाते। जो सुख और शान्ति हम को प्राप्त है आश्चर्य नहीं देशी रियासतों की प्रजा को प्राप्त न हो। हमको अपनी सरकार का कृतज्ञ होना चाहिये जिससे

यह स्वतंत्रता और अमन चैन दिया ईश्वर का परम धन्यवाद करना भी उचित है जिसने हमें ऐसी न्यायवती सरकार के अधीन रक्खा ॥

(२) हम किस दशा में है और हमारी यथार्थ दशा क्या है हम शिक्षा से जी चुराते है इस कारण सभ्यता के गुणों से कोसों दूर हैं। अर्ध ज्ञानवान का नाम हमारा अभी तक पड़ा हुआ है। पुरुष अभी तक अपनी स्त्रियों को कुशाक्ष कहते हैं और मार पीट कर देते हैं और वह उनका सामना करती हैं, कारण यह है कि उनको इतना भी नहीं पढ़ाया कि वह अपने कर्तव्य धर्म को समझें। स्मरण रक्खो हम चाहे कितने ही बढ़ जावें और उन्नति करें परन्तु जब तक अपनी स्त्रियों को शिक्षा न करेंगे अर्ध ज्ञानवान कहलावेंगे क्योंकि समस्त जीवन पर उनसे ही व्यवहार रहता है और उनसे ही मिल कर रहना है। यह विवाहादि उत्सवों पर शृङ्गार करके स्वतंत्र होकर घूमती हैं, असभ्य गीत गाती हैं, कोई निरलज्जता के काम करती है, कोई वृद्ध मर जावे तो स्वांग बनती हैं और बुरे गंदे गीत गाती हैं। मुरदे पर छाती पीट २ कर रोती हैं यहां तक कि मुख और छाती सूज आती है सिर के बाल नोच डालती हैं तानसे रोती पीटती हैं। जो इस प्रकार रोना पीटना न जानती हो उस को मूर्ख और फूहड़ समझती हैं। पुरुष उन को ऐसे काम से नहीं रोकते क्योंकि वह भी लकीर पीटन दास हैं

पुरानी रीतों को पूरा करने को मरे पिटते हैं॥ जाति भेद अब तक बड़े कड़ेपन से चला जाता है जो सब प्रकार की उन्नति करने में बाधक है। हम ईश्वर से इतना नहीं डरते जितना जाति भेदों को तोड़ने से कंपित हैं यद्यपि हमारे पुराने उद्यम बहुत जाते रहे धर्म और मत की बहुत बातें बदल गईं॥

(३) जो हमारे धर्म के गुरु वा अगुवा हैं वा जो धर्म के रक्षक माने जाते हैं वह विशेष कर अपने धर्म सम्बन्धी कर्तव्य त्याग बैठेहैं और उसपर भी यहबंधीहुई रीतिमें भी अधिक धन हरण करते हैं। जो न दे उसको निन्दा और अपकीर्ति करते हैं समय २ पर कटाक्ष करनेसे नहीं चूकते जो वृद्ध वा उत्तम प्रकृति का गुरुहै परन्तु मनमाना फिरताहै उनको भोजनदेना भी स्वीकार नहीं करते परन्तु जिसके साथ बहुत धूम धामकी सामग्री हो दस बीस सेवकहों घोड़ोंके साथकुत्तेभी दौड़तेहैं साथ२गवैये और मदान्ध कराने वालेहों,शरीरपर बहुतउत्तम वस्त्रहों,आभूषण जगमगाते हों तो फिर उस की पूर्णता में सन्देह करना पाप ही माना जाता है। कोसों से उन की अगमानी की जाती है, बड़े आदर से घर ले जाते हैं। चाहे उनके ठहरने में अपना कूंच हो जावे, उत्तम २ व्यञ्जन उनको भोग लगाते हैं, भेट करते हैं मनते मानते हैं,अपनी इच्छा पूरी करनेके लिये तावीज़ और गण्डे उनसे लेतेहैं और उनके ठीक होनेपर सच्चा उनसे विश्वास करते हैं और यह नहीं समझते कि यह उनका

टके सीधे करने का ढब है नहीं तो होता वही है जो होनहार है जो भाग में लिखा है न उससे कमती होता है, न अधिक चेले तो गुरु जी को विषय झूठी बातें बना कर उनको आकाश में ही चढ़ा देते हैं। वहां तो सिद्ध साधक का लेखा है। ऐसा न करें तो लोक फंदे में कैसे फसे और उन को साथ रखने और खिलानेका क्या फायदा हो जैसे तहसील्दारके साथ चपरासी न हो तो किसी को क्या जान पड़े कि वह तहसीलदार है इसी प्रकार जो चेले साथ न हों तो कौन जाने यह गुरु और सिद्ध है। यह निर्दय समूह प्रथम तो बलात्कार मिठाइयां लोगों से लेते थे परन्तु अङ्गरेज़ के राज्य में अब उन का अन्याय तो बहुत कम होगया है परन्तु गरीबों का तो अब भी उनके आदर सत्कार में बुरी दशा हो जाती है। घर, धरती, गहना बिक जाता है, बिचारे ऋणी हो जाते हैं। जैसे प्रत्येक छः महीने पर गडरिया अपनी भेडों को ऊन कतर लेता है वैसा ही यह गुरु जी प्रत्येक साल वा छठे मास चेलों के यहां दौरा करते हैं और मिठाई और भेंट पूजा उगहाते हैं और वह भी ऐसे ठीक समय पर और दुरुस्ती के साथ कि सरकार की माल गुजारी भी ऐसे न आती होगी। जैसे हाकिमों के दौरे से प्रजा को बड़ी हानि होती है अर्थात् लकड़ी, घास, अंडे, मुर्गी दूध आदि आस पास से बेदाम ज़बरदस्ती लिया जारहा है वैसा ही उन के दौरों से बिचारे चेलों की गति होती है। केवल भेंट

इतना है कि यहां भय और आज्ञा से काम लिया जाता है जिस को बहुधा चेले अपना विश्वास से मान लेते हैं। और वहां मजिसट्रेट के अधिकार और सामर्थ के दबाव से आज्ञा पालन कराते है। सोटा और जूता पक्के गुरु हैं। सुना है कि जिमोदार फल तो अच्छे लगते हैं परन्तु जूती से झड़ते हैं। यह तो हमारे साधारण देशी भाइयों के विचार हैं॥

(४) विषय भोग, दुष्टाचरण बेढङ्गपन कुसङ्ग के कारण हमारे झूठे विचार बुराई की ओर और दृढ़ होते हैं अब तक स्त्रियों में भूत और जिन्न लगाने का वहम है कोई २ मूर्ख पुरुष भी इस झूठ विश्वास में फंसे है। यह झूठा विश्वास है, वा छल, वा कपट, वा कोई रोग है। आश्चर्य यह है कि बुद्धिमान युरोपियन स्त्री और वेश्या पर भूत कभी नहीं चढ़ता यद्यपि बहुत गुण इनमें दूसरों से अधिक हैं बुड्ढ और अनसमझ कन्या भी इन से बची रहती हैं. यहां भी तावीज़ और सिर हिलाने आदि छलों से काम लिया जाता है। लोगों को निशानी दिखाने में छल किया जाता है। कहीं निर्जन स्थान में फासफरस वायु आपस में रगड़ जाने से बल उठती है (यह वायु बहुधा निर्जन बन, समाधीस्थान, श्मशान खड़हड़, दल दल सीला धरती आदि में विषली वायु के जमा होने से बन जाती है और तनिक रगड़ पहुंचने पर दिया सलाई के समान भक्क बल उठती है जिसको अगिया बैताल कहते हैं)। इसको लोग भूतों की

आग कहते हैं। भय और झूठा विश्वास एक बड़ा भारी रोग है जो मूर्खों पर चढ़ जाता है। यदि इससे कोई मर भी जावे तो कहा जायगा कि आसेव से मर गया। बिचार करने की बात है कि वहम करने से मनुष्य को हैज़ा हो जाता है इसमे कई और मरो के रोग होजाते हैं। कभी स्वप्न और ध्यानमें डरता रहता है, सोता हो तो चौंक उठता है। मेले तमाशों मे बुरे विचार पैदा होते हैं यदि भलाई की ओर ले चलो तो पूरा भला बन जावे। इस के प्रभाव से मनुष्य अपने को ईश्वर बताने लगता है, बस्ती से निकल कर निर्जन बनों में चला जाता है। गरमियों में आग की धूनी तापता है और सरदीमें ठण्डे पानी में खड़ा रहता है, अपने शरीर को कठिनाइयों में डालता है नाना प्रकार के कष्ट सहता है। प्रसूता स्त्री को रक्षित स्थान में रखते हैं कि बाहरी स्त्री का शब्द कान न पड़े। इस दशा में बालक मर जावे तो कहा जाएगा कि डाइन खा गई। वह जादू को ठीक समझते हैं। वहम मनुष्य को नाना प्रकार के नाच नचाते हैं और आश्चर्यवत कौतुक कराता है। सावधान तुम कभी धोखे में न आना॥

(५) त्योहार वा मेला आजाये तो बहुधा हमारे भाई इस प्रकार उमंग में फूले नहीं समाते कि मानो उनको कोई राजाई अधिकार मिल गया, दिन और घड़ियां गिनते हैं कि कब आवे और हम उस से लाभ उठावें। एक दूसरा प्रसन्न होकर उस के

आने का मंगल समाचार सुनते हैं। घर में कुछ न हो तो अनुचित रीति से खर्च के लिये कुछ पैदा कर लेते हैं। मेले पर उत्तम भड़कोले वस्त्र पहनते हैं, कोई २ मद्यपान करते हैं और व्यर्थ वस्तुओं में रुपया फंकते हैं, असभ्य गीत गाते हैं, नाचते हैं अभिप्राय यह कि अपनी मूर्खता को बहार सब प्रकार लोगों को दिखाते हैं। यहां बुद्धि को क्या मजाल है कि मेले के अन्दर पद तो रक्खें, वहां समाध और स्थान पूजा जाता है, चढ़ावे चढ़ाये जाते हैं, चिरागी दी जाती है, प्रार्थना मांगते हैं। अभिप्राय यह कि हमारे मेले अभी तक असभ्य हैं। किसी वणिज कारीगरी वा गुण की उन्नति का यहां चारचा नहीं। हां वह मेले सुधारते जाते हैं और उन से सर्व साधारण को भी लाभ होता जाता है जो सर्कार से सम्बन्ध रखते हैं। वहां घोड़े, बैल गौवें, भैंस और नाना प्रकार के अन्न और वस्तुओं का दर्शनालय खोला जाता है। अच्छे सुडौल मोटे ताजे पशुओं पर पारितोषिक दिया जाता है। जिस से परिश्रमी लोगों के दिल बढ़ते हैं और देखने वालों को भी प्रेरणा होती है कि ऐसी उत्तम वस्तु हम भी उत्पन्न करें॥

(६) स्त्रियां पुरुषों से पहिले मेलोंमें जाने को तैयार होती हैं वह धर्म्म और पूजा की बुनयाद पर स्थापित हैं। इन में बड़ी खराबियां पैदा होती हैं। इसी प्रकार मन्दिर और शिवालयों में स्त्री पुरुषों की भोड़ होती है वहां पुजारियोंकी तो जीवका

अच्छी चलती है परन्तु अयोग्य व्यवहारों के रोकने का कोई यत्न नहीं किया जाता। स्त्रियां अब तक उन पुरुषों का आदर करती हैं जो साधु भेष धारण किये रहते हैं, उनको सब प्रकार पूजती हैं। जो कोई साधु दो चार दिन सन्तोष से एक स्थान पर चुप चाप बैठा रहे और आरम्भ में कुछ न बोले तो उस को सिद्ध बाबा होनेमें किञ्चित् सन्देह नहीं किया जाता। सब दिशा से मूर्ख लोग उस पर टूट पड़ते हैं और उस के सामने उत्तम पदार्थों का ढेर लगा देते हैं। साधुओं के भेष में बहुधा दुष्टाचरण वाले, चोर लुटेरे छली रहा करते हैं वा वह जिनपर कोई कुटुम्ब का बडा भारी दुःख पडा हो वा अयोग्य और दुर्गुण लोग होते हैं जो और किसी प्रकार जीवका न कर सक्ते हों। तो भी वह जो दूसरों के टुकड़े खाते हैं और आप कुछ काम नहीं करते कदापि पूजा योग्य नहीं और उन से किसी प्रकार की आशा करना मूर्खता है, ऐसे लोगों में कोई कीमियागर वा रसायनी बने फिरते हैं, मूर्ख लोग अब तक रसायन को ठीक मानते हैं यद्यपि इन के सामने बहुत ऐसे लोगों का माल मार कर रफूचक्कर होगये जिस पर भी यह लोग अब तक अपने झूठे विश्वास को दूर नहीं करते ईश्वर पूजन से फकीरों और कबरों की पूजा बडी मानी जाती है, देश में मूर्खता फैले होने का यही एक दृष्टान्त है॥

(७) अभी तक देश की ओर से मच्चे विद्वानों का कुछ सत्कार नहीं होता, मूर्खों में वह सत्कार योग्य वह लम्पटी माना जाता है जो झूठ किस्से और कहानियां और बुद्धि के विरुद्ध घटनाएं जानता हो और बाहुल्यता के साथ वर्णन करता हो और पढ़ा हुआ वही गिना जाता है जो बहुत झूठके साथ पत्र लिखना जानता है. जिस में केवल व्यर्थ बातें हास्य और झूठ के कुछ नहीं होता, नीति विरुद्ध पुस्तकों का पढ़ना अब तक विद्या सीखने में शामिल है, देशी पाठशालाओं ने अपने पुराने ढङ्ग को अभी तक नहीं त्यागा, सरकारी मदरसे उन से सब प्रकार बढ़ जा रहे हैं उनकी शिक्षा प्रजा को सच्चाई की ओर लिये जा रही है और फारसी मकतब प्रजाके बालकों को अनीति में फसाने के लिये कोई यत्न नहीं उठाये हुए हैं, अब जो परीक्षा के फल पर विद्यार्थियों को आनन्द होताहै तो अब उनके पुराने विचार आपसे आप टूट जावेंगे यदि उनके देखने वाले अफसर योग्य प्राप्त होजावें, अभी तक परदेशी भाषा में विद्या की पुस्तकें पढ़ने की रीति चली आतीहै जो अब न राज भाषा है न देश भाषा, इससे बेचारी प्रजा पर बहुत अन्याय होता है, यह कठिन बात सरकार के ध्यान देने योग्यहै,सर्कारी मदरसों में सिवाय फीस के जो सरकार लेती है विद्यार्थियों का और कुछ खर्च नहीं पड़ता, इस कारण वह गुरुओं के साथ कुछ भी सलूक नहीं करते, जब लोकल सैल्फगवर्नमैंट का पूरा

प्रचार हो जावेगा तो कदाचित् धीरे २ बेदाम शिक्षा देने का प्रचार दूर हो जावेगा, और सर्व साधारण इस को प्रसन्नता से एक उद्यम के समान स्वीकार करलेंगे॥

(८) हमारे देश के युवा जहां एकत्र हो बैठते हैं वहां कोई विद्या सम्बन्धी चर्चा नहीं करते। वहां अथवा सुन्दर स्त्रियों का चरचा होता है वा नाच रंग और मद पान की ठहरती है। वा इस में ठट्ठा मसखरी की फुलझड़ियां छुड़ाई जाती है, हंसी ठट्ठे से आकाश गूंज उठता है, वा गिल्ला निन्दा का बाज़ार गर्म होता है, भलेमानसों पर तोहमतें लगाई जाती हैं और सज्जन और विद्वानों की निन्दा की जाती है उन के स्वांग बनाये जाते हैं वा असभ्य गीत गाये जाते है, युवा स्त्रियां और लड़के जहां एकत्र होते हैं तो भी कोई उत्तम बात नहीं करते झूठे किस्से कहानियां सुनते हैं वा वेपर की उडाते हैं, लड़के अपने से बड़ों का आदर नहीं करते हैं, स्त्रियां अनुचित रीति पर स्वतंत्रता प्राप्त करती हैं खुले कुवें, तालाव नहरों पर नङ्गी नहाती हैं, पुरुषों के सामने शौच को बेठ जाती हैं, कमाई करने का बोझ केवल पुरुषों पर ही रहता है आप सिवाय खाने, सोने, चरखा कातने, हंसने रोने के और कुछ नहीं करतीं, परन्तु जब और काम नहीं है तो उन को बन्दी में भी रखना योग्य है,परन्तु यह अन्याय होगा कि यदि हम उनको घर की सेवा का विचार करें, वह घर साफ रखती हैं, भोजन बनाती हैं, बालकों का पालन

पोषण करती हैं, अवकाश मिला तो चरखा वा कसीदे ले बैठती हैं, अभिप्राय यह कि बेकाम एक क्षण नहीं रहतीं ॥

(९) बालक और स्त्रियों को अब तक आभूषणों से लादा जाता है, वह रङ्गीन वस्त्र विशेष कर लाल और काढ़े हुए कपड़ों को बहुत पसन्द करती हैं, मूर्ख जन अपने को स्त्रियों समान सजाये रहते हैं, सर्व साधारण किसी प्रकार राजी नहीं होते सादे वस्त्र पहनो तो सब बुरा शुभ कहने लगें, कंजूस है आवश्यकता से अधिक खर्च न करो तो कंजूस का नाम रक्खा जावे, यदि अपने से छोटों से बहुत मिलाप रक्खो तो ग्लानि की दृष्टि से देखे जावो यदि उन के संग से अलग रहो तो घमंडी कहलवाओ हां खुशी यह है कि अब छूत का विचार कम होता जाता है और हमारे खाने पीने पहनने की वस्तुओं में अब बहुत बदलाव होता जाता है, अर्थात् ज्यों २ समय बदलता जाता है यह भी रङ्ग बदलते जाते हैं, पुराने फैशन दूर होते जाते हैं नये प्रचलित होते जाते हैं, जो रह गये हैं वह वह हैं जिन के दूर करने में उनकी नहीं चलती ॥

यदि सर्व साधारण को उनकी भूल जतलाई जाती है तो पराजय होने पर लड़ने वा अधर्मी वा किरस्टान कहने को तैयार हो जाते हैं ॥

(१०) जब सहस्रों उदाहरण सामने मौजूद हैं कि बालकों के लिये सीतला का रोग प्राण का ग्राहक होता है, टीका लगाना

उस का पक्का इलाज है, फिर भी लोग बालकों के टीका नहीं लगावते, माता अपने बच्चे को आरोग्य करने के लिये कड़वी औषधि कैसी निर्दय पन से पिलाती है, परन्तु उस में भी माता की प्रीति झलकती है, इस लिये गवर्नमेंट ने टीके को ज़रूर लगाने का कानून जारी किया है परन्तु यह वहां के लिये है जहां म्यूनीसिपल कमिश्नर आप इसके लिये प्रार्थना करें अर्थात् बालक आप माता से कहें कि कड़वी दवा पिलाओ, सरकार का कर्तव्य है कि योग्य जन टीका लगाने वाले नियत करे, बहुधा मूर्ख वेक्सीनेटर ऐसा टीका लगाते हैं कि बच्चों की जान नहीं बचती, यही कारण लोगों के इससे ग्लानि करने का है, ऐसा करने उनको उचित ही है, बच्चों के खुरण्ड बलात्कार लेने की रीति भी हम उचित नहीं समझते, कोई ऐसी विधि रचनी चाहिये जो सब को पसन्द हो, टीका लगाने वालों के आचरण और वर्ताव की बहुत कुछ सावधानी करना उचित है क्योंकि जाड़े की ऋतु में ठण्डी हवा में बच्चे और उन की ग़रीब माताओं के लिये फिरते हैं, जिसने नकद कुछ भेंट किया औरत को उनके हाथ से छुड़ा लाया, शोक है कि गवर्नमेंट तक उन यथार्थ अन्यायों के समाचार नहीं पहुंचते॥

(३१) सूर्य्य और चन्द्र ग्रहण को अब तक पुराने विचारों के लोग भय की दृष्टि से देखते हैं परन्तु जो ज्योतिष विद्या का किञ्चित् भी जानते हैं वह समझते हैं कि ऐसा सदैव ही हुआ

करता है और नियम सहित होता रहता है. भ्रमण करते हुए यदि सीधी रेखा पर धरती और सूर्य बीचमें चन्द्रमा आ जावे तो सूर्य ग्रहण और यदि सूर्य और चन्द्रमा के बीच धरती आ जावे तो चन्द्र ग्रहण हो जाता है,केतु अर्थात् पूछदार तारे के उदय होने पर लोग बड़ा भय करते हैं, वह समझते हैं उनका पूछदार होना बिपत्ति का चिन्ह है यद्यपि उनका उदयास्त नियम विरुद्ध नहीं है वह अपने ठीक समय पर भ्रमण करते हुए पृथ्वी तल पर दिखाई पडते हैं,जो सूर्य के समीप होनेके कारण बल उठते हैं जैसे कोई मशाल लेकर दौड़ तो मशाल की लौ पीछे को ओर हो जाती है, वह दूसरे नक्षत्रों के समान सूर्य के चारों ओर भ्रमण करते हैं, बड़ी तेजी से दौड़ते हैं तो पूछ पीछे को हो जाती है और दूर तक निकल जाती है और ठीक समय उपरांत दीख पडती है,जब सूर्य से दूर निकल जाते हैं तो उनकी पूंछ बुझ जाती है,जिस रातको आकाश निर्मल होताहै उस रात को तारे टूटते हुए दीख पडते हैं, तनिक बिचार तो करो यदि इस रीति से सहस्रों तारे टूटते तो आज तक एक भी न रहता वा पहिले से कुछ कम हो जाते. वा जिन को तुम नित्य देखती हो उन में से कम दीख पड़ते.यथार्थ यह है कि यह अग्नि और बिजली की भाप है जो धरती से ऊपर जाती है और ऊपर जाकर और आपस में रगड़ कर नीचे गिर पड़ते हैं । राह से,

हो बुझ जाते हैं नहीं तो कभी कोई यह भी कहता कि हमने अमुक स्थान पर तारा टूट पड़ा देखा ॥

(१२) हमारे देश भाई अब तक म्युनिसिपल कमिश्नर और आनरेरी मजिस्ट्रेट बड़ी प्रसन्नता से होते हैं और अधिकारों को जो बिना वेतन के होते हैं प्राप्त करने के लिये बहुत प्रयत्न करते हैं। परन्तु इस विचार से नहीं, करते कि उनको प्राप्त करके गवर्नमेंट और देश की सेवा करेंगे वा अपनी योग्यता से समाज को लाभ पहुंचावेंगे किन्तु इस अभिप्राय से कि उन को अपने भाइयों पर हुकूमत जताने का अवसर मिलेगा और अपने स्वार्थ को सिद्ध करेंगे। बहुधा सम्मति देने वाले कम हो जाने के भय से वा ज़िले के हाकिम के दबाव में आकर अपनी सम्मति स्वतंत्रता सहित नहीं देते, ऐ युवा पुरुषो वह सभ्यता का समय अभी बहुत दूर है जिस का हमें अपने मन में अभिलाषा है क्योंकि स्वतन्त्र सम्मति देने वाले अभी बहुत कम हैं। अब तक तो हमें बहुधा मेम्बर खुशामदी टट्टू वा हां में हां मिलाने वाले दीखते हैं वा ऐसे जो यह भी नहीं जानते कि हमारे मेम्बर कमिटी होने का क्या अभिप्राय है, आनरेरी मैजिस्ट्रेट भी बहुधा ऐसे हैं जो अपने कर्तव्य को भली भांति पूरा करते हों और बिना पक्षपात न्याय के अनुसार फैसला करते हों॥

(१३) अपनी सहायता आप करने की रीति अभी हमारे देश में बहुत कम प्रचलित है और न कोई इस के अनुसार

बर्ताव करने की चेष्टा करना है कि जो अपनी सहायता आप करता है ईश्वर भी उस की सहायता करता है। धन्यवाद है कि सरकार ने लोगों को अब इस ओर ध्यान देने के लिये प्रेरणा की है और समझा रही है कि जो काम अपने करते हैं उस में सरकार की सहायता के लिये प्रार्थना करना व्यर्थ है, विशेष कर अपनी शिक्षा और आरोग्यता की रक्षा, पवित्रता और सर्व साधारण के लाभ के स्थान बनाने का बोझा प्रजा को आप ही उठाना उचित है, इसी प्रकार आप विचारकर लो कि हमें अपना सबकाम आप करनेके लिये उपदेश किया गया है। धन्य हैं वह लोग जो सचाई और उदारता से इस सिद्धांत के अनुसार काम करते हैं और देश की सेवा को प्रतिष्ठा का हेतु मानते हैं जिस में गवर्नमेंट की इच्छा भी पूरी हो और जीवन का पुरुषार्थ भी प्राप्त हो। हमारे देश पर यह कृपा लार्ड रिपन बहादुर जनरल हिन्द ने की है जिस के कारण उनका नाम प्रतिष्ठा के साथ सदा लिया जायगा यदि देश स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धान्त को न त्यागे ॥

(१४) कई एक हेतु से हमारी नित्य उन्नति इस प्रकार हो रही है जैसी अवस्था नित्य बढ़ती है और पता नहीं लगता और न कोई मिलान ही समझा जाता है। सब से बड़ा कारण सरकार अङ्गरेज़ की नीति युक्त शासन है और जो उन्नतें इसकी प्रभाव से हैं उनका वर्णन करना उचित है, पाठशालाओं

शिक्षा, रेलवे का प्रचार, यात्रा में सरलता, रास्तों का खुल जाना, और देश विदेश के लोगों का मेल मिलाप है। जिससे भोजन वसन, बोल चाल में बदलाव हो रहा है। और सिवाय इसके हमारे भाइयों में कुछ लोग ऐसे योग्य होगये हैं जो अपने तन मन धन को देश की भलाई में खर्च कर रहे हैं। आशा है इस सुधार करता सज्जनों के प्रयत्न से हमारी दशा बहुत कुछ सुधर जावेगी और उन के शरीरान्त के उपरान्त ऐसे हो किन्तु उनसेभी बढ़ सुधार कर्ता उत्पन्न होंगे इसी प्रकार लगातार होते रहने से हम भी पश्चिमी देशों के समान किसी दिन पूरे सभ्य और उन्नति शाली हो जावेंगे। परन्तु यह हमारा कर्तव्य है कि सुधार कर्ताओं का पूरा आदर और सत्कार करें उनके व्याख्यानों को ध्यान से सुनें और इन के अभिप्राय को पूरा करें जब कि वह किसी एक धर्म से संबन्ध न रखते हों॥

समय की आवश्यकतानुसार १५० उपदेश जो बड़े लाभकारी हैं।

(१) ईश्वर को सर्वज्ञ और सर्व व्यापी समझो और उसके सर्व ईश्वरत्व को मन में जागे रखो॥

(२) सचाई विश्वास की मूल है सब काम में उसका विचार रक्खो ।

(३) सदा समय को बहुमूल्य समझो एक क्षण मात्र व्यर्थ न जाने दो ॥

(४) स्वतन्त्रता का आदर करो परन्तु किसी से ऐसा न करो कि माता पिता उस स्वतंत्रता को पसन्द न करें ॥

(५) चलते समय असमञ्जस न करो और दायें बायें देखते जाओ ।

(६) अपने नेत्रों को लाज से नीचे रक्खे रहो

(७) अपने किसी अंग को ऐसे न चलाते रहो जो सभी पर्वतियों को अनुचित जान पड़े ॥

(८) धीरे २ चलना रोगी होने का और शीघ्र चलना क्रोधित होने का चिन्ह है, सदा साधारण चाल चलो ॥

(९) सोना, बैठना, चलना, खाना, पीना, बोलना, सब काम सावधानी से करो ।

:पर स्त्री को घूर कर देखना अनुचित है परन्तु जो सदा नेत्र सामने करके बात चीत करते हैं वह अपने हृदय के भाव को दूसरे के हृदय में जमा देते हैं और अपना मनोरथ सिद्ध करते हैं यह मरदानी बात है । बिजली की विद्या से यह सिद्ध है कि सामने नेत्र करने से आकर्षण शक्ति आजाती है-अनुवादक ।।

(१०) यदि अनुकरण करना चाहते हो तो भले कामका करो ॥

(११) इतना भोजन न करो कि रोगी हो जावो, भोजन करते हुए बेबात बहुत जल न पीयो वह हानि करता है ॥

(१२) जब भोजन करने लगो तो प्रथम हाथ पांव मुख नाक साफ कर लो, भोजन की वस्तु मे अपने कपड़े न बिगाड़ो

(१३) जो काम शीघ्रता सहित किया जाता है उसका फल उत्तम नहीं होता ॥

(१४) संसार में रह कर सचाई का विचार रखना सर्वोपर है ॥

(१५) पश्चमी शिक्षा का यह फल होता है कि मनुष्य कमीनो दब्बू बातें पसन्द नहीं करता ॥

(१६) शिक्षा मे नीति धर्म नहीं आता जब तक उस के अनुसार व्यवहार न किया जावे ॥

(१७) दुष्टों को दुष्टता का त्याग करने का उपदेश सदा करते रहो ॥

(१८) असावधानी सब अप्रबन्धों को मूल है ॥

(१९) अपने कर्तव्य को पूरा करना पक्का धर्म है ॥

(२०) ज़रूरत सब करा लेती है ॥

(२१) जो अपने मन को वश किये है वही वीर है ॥

(२२) जो दूसरों को दशा देख कर अपने आचरण नहीं सुधारता और उपदेश लाभ नहीं करता उसको देखकर दूसरे लोग ऐसा करेंगे ॥

(२३) जो वस्तु आप पसन्द नहीं करते दूसरों के लिये क्यों करते हो ॥

(२४) ईश्वराराधन जो दूसरों के दिखाने को किया जाता है वह छल कपट है ॥

(२५) परोपकार करने से उत्तमतर कोई दूसरा ईश्वर का पूजन नहीं ॥

(२६) पुण्य यश प्राप्त की अभिलाषा से मत करो ॥

(२७) सच्चा पुण्य वही है जिस को दायां हाथ करे और बांया न जाने ॥

(२८) अपने धर्म को ज़रूरत के आधीन मत रक्खो ॥

(२९) कोई गुण क्यों न हो पूरा और पक्का होना चाहिये

(३०) गुण में पूरा पन होने से सुयश प्राप्त होता है जिस से जीविका होने में बहुत सहायता मिलती है ॥

(३१) धन प्रतिष्ठा के प्राप्त में बड़ा भारी द्वारा है*

---

* यह ठीक नहीं जो प्रतिष्ठा धन से प्राप्त हो वह असली नहीं, सच्ची प्रतिष्ठा सत्य शीलता परिश्रम और परोपकार वृत्ति से प्राप्त होती है-अनुवादक ॥

(३२) किसी को कुछ दे कर फिर पछताना अपने किये को आप ही मेटना है॥

(३३) विपत्ति में साहस की परीक्षा होती है॥

(३४) विपत्ति और दरिद्रता मित्रों की सच्चाई जांचने की कसौटी है॥ धीरज धर्म मित्र और नारी। आपत्ति काल परखिये चारी॥

(३५) अपथ्य खाने की बान न डालो॥

(३६) माता पिता गुरु हाकिम के सामने जो कुवाच्य वा कठिन भाषण करता है वा आंखें काढ़ कर देखता है निर्लज्ज ढीठ है॥

(३७) जहां काम कोमलता से हो सकता है वहां कठोरता करना उचित नहीं॥

(३८) जब तुम दुष्ट दुराचरणी नहीं हो तो फिर ऐसे का संग क्यों करते हो॥

(३९) तुम जब बुरे न हो तो भलों के साथ क्यों बुराई करते हो॥

(४०) भले मनुष्य हो तो कलङ्क लगने की जगह क्यों नहीं बचते॥

(४१) तुम निर्दय नहीं हो तो व्यर्थ छोटे २ कीड़े मकोड़े और दूसरे निरपराधी जीवों को क्यों मारते हो॥

(४२) स्मरण रक्खो कि निन्दक और चुगलखोर का मुख सदा काला होता है॥

(४३) कोई दुखदाई समाचार है तो किसी और को कहने दो *॥

(४४) रुपये के व्यर्थ खर्च करने और ऋण बढ़ाने में कभी साहस मत करो ॥

(४५) सुशील और सभ्य कहलाते हो तो ज़रूरी पत्रोंका उत्तर क्यों तुरन्त नहीं देते ॥

(४६) स्नेह रखते हो तो मित्र वा नातेदार को क्यों रंग पत्र भेजते हो † ॥

(४७) बालकों का इतना लाड न करो कि वह विद्या न सीखें ॥

(४८) अपनी प्रकृति सदा शांति प्रिय रक्खो ॥

(४९) किसी का गिला करना और सुनना दोनों बुरे काम हैं ॥

(५०) सभ्यता के विरुद्ध कोई कुवाच्य मुखसे न निकालो ॥

* क्योंकि उस को जब २ देखोगे यह स्मरण करके हृदय कसक आवेगा कि इसने अमुक दुःखदाई समाचार सुनाया था· अनुवादक ।

† यह भी कोई सुजनता है कि अपने एक पैसे की किफ़ायत के लिये दूसरों के चार खरच करावो ॥

(५१) अपने में ऐसे प्रिय बचन बोलने की बान डालो कि सब का मन हरण हो जाया करे॥

(५२) आदर करने वालों का सब स्थानोंमें आदर होताहै॥

(५३ नीतिज्ञ औरसुशील जन जहां जाता है वहां उसका सत्कार होता है॥

(५४) कुशील जन सदा दुःखी रहता है॥

(५५) सत्कार और नम्रता करने से पराये अपने और घमंड और अपने को बड़ा समझने से अपने पराये हो जातेहैं॥

(५६) जिस काम से किसी को दुःख न पहुंचे वह पाप नहीं॥

(५७) जिस काम से बिना किसी को दुःख दिये सब का हेतु हो वह पुण्य है॥

(५८) लड़कों को झूठे किस्से कहानी पढ़ने से न रोकना खोटे कामों की आप प्रेरणा करना है।

(५९) लड़कों को लोगों के सामने लज्जित करना और शारीरिक दण्ड देना उस को निरलज्ज बनाना है॥

(६०) सदा भलों के साथ उत्तम बर्ताव करो और प्रतिष्ठा करो और सब से उदारता सहित व्यवहार रक्खो॥

(६१) जो अपने अपराध को स्वीकार करके लोगों के सामने क्षमा मांगता है हम से पूछो तो उस को यही पूरा दंड है॥

(६२) जिस में संतोष और दूरदर्शिता नहीं वह बुद्धिमान नहीं कहा जा सकता ॥

(६३) किसी का बुरा करके सुख पाने की आशा न रक्खो॥

(६४) धन पर घमंड और विपत्ति में दुःखी न होना चाहिये क्योंकि यह दोनों सदा नहीं रहते ॥

(६५) सदा उस दिन को स्मरण रक्खो जब तुम्हें पुकारेंगे और उत्तर न दे सकोगे ॥

(६६) ज्ञान उत्तम वस्तु है परन्तु सहज में यह नहीं प्राप्त हो सकता ॥

(६७) मूर्ख मित्र से बुद्धिमान शत्रु अच्छा होता है ॥

(६८) शत्रु को जब तक शत्रु समझे रहोगे कभी धोखा न खावोगे ॥

(६९) जब तक नये काम में दोष खोज २ कर न निकाले जावेंगे तब तक वह निर्दोष न होगा ॥

(७०) लोभी आदमी रुपये के सामने प्रतिष्ठा को कुछ माल नहीं समझता है ॥

(७१) सब रुपया पैसा किन्तु प्राण तक को प्रतिष्ठा के हेतु बलिदानकर देना उचित है ॥

(७२) सेवा करोगे तो गुरु बनोगे यदि अपने को ही बड़ा समझे रहोगे सदा सेवक बने रहोगे ॥

(७३) हसने में हलका पन आता है इसलिये बहुत हंसना योग्य नहीं ॥

(७४) ठठोल आदमी से गम्भीरका अधिक आदर होता है।

(७५) बालक पन का समय विद्याभ्यास के लिये है इसको खेल कूद में व्यर्थ मत खोवो ॥

(७६) झूठको सब बुराइयों का और सञ्चको सब भलाइयों का शिरोमन मानो ॥

(७७) जो दूसरों को भय वा आशा दिला कर दूसरो की को कमाई खाते हैं वा भीख मांगते हैं वह कमीने हैं ॥

(७८) जहां तक हो सके व्यवहार में सफाई रक्खो ॥

(७९) लोहे का बल लोगों को इस प्रकार आधीन नहीं कर सकता जिस प्रकार न्याय और दया कर सकती है ।

(८०) अपना बाहर भीतर एकसा रखने का प्रयत्न करते रहो ॥

(८१) क्रोध मनुष्य को पापी बनाता है और बुद्धिपर परदा डाल देता है इस से सदा बचते रहो ॥

(८२) धन न हो तो कोई शोक नहीं परन्तु विश्वासनीय न होगे तो बड़ा हो शोक होगा ॥

(८३) संसार के माल धन को केवल अपनी आवश्यकता पूरी करने का द्वारा समझो इससे बेप्रमाण खर्च करने से बहुत पाप करने पड़ते हैं ॥

(८४) जिन से तुम्हें लाभ हो तुम उनको कभी हानि न पहुंचावो ॥

(८५) प्रथम अपना आदर आप करो तब दूसरे तुम्हारा आदर करेंगे ॥

(८६) रुपये को प्यार करोगे तो प्रतिष्ठा कैसे बढ़ेगी ॥

(८७) अनुभव सब गुरुओं का गुरु है ॥

(८८) स्वभाव को बेपरवाह बनावोगे तो बुद्धि में खाली रहोगे ॥

(८९) वर्तमान सरकार के कानून के विरुद्ध न करो नहीं तो फिर सदा पछताओगे ॥

(९०) सभ्य बना चाहते हो तो पूरी पवित्रता रक्खो परन्तु स्त्रियों का सा शृङ्गार न बनाओ यह स्त्रियों का काम है पुरुषों का नहीं ॥

(९१) अपने को यदि दूसरों से उत्तमतर मानते रहोगे तो कभी उत्तम न बनोगे ॥

(९२) सब मनुष्य मात्र को बिना मत भेद के अपना भाई मानो ॥

(९३) सदा सर्वहित के कामों में उत्साह सहित लगो ॥

(९४) अपने सगे भाई और नातेदारों की सहायता को सदा तैयार रहो ॥

(९५) सन्तोष सुख को सदा साथ रक्खे रहता है वह उस को दृढ़ बेड़ी है और मन की घबराहट का शत्रु है ॥

(९६) यदि बिना सच्चाई को हानि पहुंचाये हुए किसीका

भला अपनी जिह्वा और हाथ से कर सको तो कभी नहीं मत करो ॥

(९७) भलों का पाप पतले बादल के समान है जो हवा से तुरन्त उड़ जाता है और फिर आकाश ज्यों का त्यों निर्मल हो जाता है ॥

(९८) गुरु वह योग्यता है और उत्तम शिक्षा की रीति के साथ नीति धर्म का कोष है ॥

(९९) मांगना सब से निकृष्ट उद्यम है उस में सदा ग्लानि करो ॥

(१००) उत्तम बोलना और प्रभावोत्पादिक वचन वही हीरे हैं जो थोड़े शब्दों में ही अभिप्राय निकाल दें ॥

(१०१) यात्रा से स्वभाविक कच्चापन दूर होता है और साथ ही बहुत से अनुभवों से बुद्धि तीव्र होती है ॥

(१०२) सदा अपनी सहायता आप करने के सिद्धांत पर चलो क्योंकि वह सब उन्नतियों का मूल है ॥

(१०३) कठोर खट्टे स्वभाव का आदमी यदि दाता भी हो तौभी वह सराहनीय नहीं होता ॥

(१०४) बात का पक्का गम्भीर जन यदि सूम भी हो तो भी निन्दनीय नहीं होता ॥

(१०५) गुरु का आदर विद्याभ्यास त्यागने पर भी सदा करते रहो।

(१०६) विद्या में योग्यता एक बात है और सभा का व्यवहार और बात है ॥

(१०७) अपने परिश्रम और शुभाचरण से माता पिता गुरू को कभी अप्रसन्न करने का अवसर नहीं होने दो ॥

(१०८) यदि दिहाती हो तो नगर निवासियों के संग से बच कर रहना क्योंकि तुम सीधे साधे और वह बहुधा बड़े चतुर होते हैं ॥

(१०९) बिना पूछे किसी की वस्तु को मत छूवो और काम में ले आना तो और भी महा अनुचित है ॥

(११०) जहां तक हो सके अपना ढंग ऐसा बनाओ कि तुम्हें सरकारी न्यायालय में न जाना पड़े ॥

(१११) यदि भलाई के साथ अपनी जाति और देश को महानुमत करोगे तो अपने जीवन को सुफल करोगे ॥

(११२) यदि स्वामी हो तो नौकरों पर कठोरता न करो किन्तु उन की ज़रूरतों को अपनी सी ही समझो और उनको पूरा करो ॥

(११३) हम इस का धन्यवाद नहीं करते कि तुम स्वामी हो तुम्हारे ऐसे सेवक हैं ॥

(११४) नौकर से प्यार करोगे तो वह मन से तुम्हारा हितेच्छु होगा इस में यह कितना लाभ है कि वह तुम्हारा काम भी ठीक करेगा और खुश भी रहेगा ॥

(११५) साहूकार हो तो अपने असामियों को कङ्गाल बनाने में प्रयत्न न करो किन्तु अपने धर्म के प्रचार से सूखे वृक्षों को हरा बनाने का यत्न करो ॥

(११६) व्योपारी हो तो जान अनजान सब के साथ अपना माल एक ही भाव बेचो ॥

(११७) जैसी नियत होती है वैसी ही बरकत होती है यदि तुम्हारी बुरी नियत हो जावेगी तो अन्त को बड़ी विपत्ति में पड़ कर मरोगे ॥

(११८) कारीगरी का काम करते हो तो खोटी चीज देकर किसी को धोखा मत दो नहीं तो देश की अपकीर्ति होगी ॥

(११९) छोटे हो तो बड़ों का आदर करो चाहे उन की बुद्धि आदर योग्य न हो। उनकी कठिनाई को दूर कर सकते हो तो दूर करो ॥

(१२०) बड़े हो तो छोटों से कृपा के साथ बर्ताव करो इसी में बड़ाई है ॥

(१२१) अन्धे को अन्धा कहोगे तो उस को क्रोध आवेगा इसी प्रकार मूर्ख को मूर्ख मत कहो, यह बड़ी मूर्खता है ॥

(१२२) भलाई करके उस का प्रति फल चाहना भलाई नहीं है।

(१२३) बुराई करने वाले से बदला लेने का कभी विचार न करो वीर पुरुषों का यह काम नहीं ॥

(१२४) नम्रता ऐसा दृढ़ शस्त्र है कि जिधर इस को ले कर चलोगे उधर जय प्राप्त होगी ॥

(१२५) नौकरी को बनाये रहने और वेतन बढ़ाने के लिये परमोचित है कि सदा अपने अफसर के आज्ञाकारी बने रहो ॥

(१२६) किसी अपंग अंग भंग को देख कर कभी हंसी मत करो किन्तु ईश्वर का धन्यवाद करो कि तुम ऐसे नहीं हुए ॥

(१२७) अपने को ऐसा ही प्रकाश करो जैसे यथार्थ में हो।

(१२८) जो काम समय पर किया जाता है सदा ठीक होता है बस सब कामों के लिये एक समय नियत रहना उचित है ॥

(१२९) भले काम में यदि कष्ट हो तो भी कोई चिन्ता नहीं क्योंकि कष्ट तो दूर हो जाता है परन्तु भलाई सदा बनी रहती है ॥

(१३०) संसार के सब विषय क्षण भंगुर हैं उन पर आसक्ति होना बुद्धिमानी नहीं है ॥

(१३१) जो जन लाचारी से ऋण लेते हैं उनकी दशा ऐसी पश्चाताप योग्य नहीं जैसी उस ऋणी की होती है जो औरों को ऋण देता है ॥

(१३२) सुख में दुःख, आरोग्यतामें रोग, अमीरीमें कंगलाई पेट भरे में भूखे होने और जीवन में मौत को कभी मत भूलो

(१३३) किसी की प्रतिष्टा सुयश और उन्नति देख कर जो

में मत कुढ़ो किन्तु प्रसन्न हो कि हमारे भाइयों में एक ऐसा योग्य हुआ ॥

(१३४) जीवन भर अपनी विज्ञता और अनुभव के कोष को बढ़ाते रहो जिस में अपना और दूसरों का भला होता रहे ॥

(१३५) कन्फ़ूश तत्त्व ज्ञानी का वचन है कि यदि लोग तुझ से जानकारी न रखते हों तो कोई चिन्ता नहीं परन्तु यदि तुम लोगों से जानकारी न रक्खो तो बड़े ही शोकका विषय है।

(१३६) खुशामद करने वाला पापी है और सुनने वाला मूर्ख क्योंकि वह तो धोखा देकर अपना काम निकालता है और यह धोखे में आ जाता है ॥

(१३७) डाक्टर वैद्य जिसको केवल रुपयेकी प्यास और जो ग़रीबों की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देता किराये के टट्टू के समान है ॥

(१३८) हाकिम जो अपने अधिकार को पक्षपात स्वार्थ वा क्रोध के अधीन कर देता है वह न्याय की लाइन से गिरा हुआ है ॥

(१३९) सावधान कहीं मादक वस्तुओं के खाने की बान न पीछे लगाना नहीं तो यावज्जीवन वैद्य का मुंह देखते रहोगे और सब झिड़कियां सहन करते रहोगे ॥

(१४०) देश की बुरी रीतें जो सभ्यता के विरुद्ध हों उनको केवल आपही न त्यागो किन्तु सब इष्ट मित्रोंसे भी त्याग कराने की चेष्टा करो ॥

(१४१) विद्यार्थियों की परीक्षा ऐसी है जैसी सिपाही की रण भूमि यहां पास और फेल होना हार जीत के समान है सिपाही को शत्रु का सामना करना पड़ता है इन को अज्ञान और मूर्खता का ॥

(१४२) बादशाह एक बड़े नद के समान है उस के कर्म-चारी और प्रबन्ध कर्ता लोग छोटी २ नालियों और नहरों के समान हैं। जो उस में से ही कट कर आई हैं।
बस जो स्वाद नदी के जल में है वही इन नालियों के जल में है।

(१४३) बे पूछे बोलना, और अभिप्राय से अधिक बोलना और बोलने के अवसर पर चुप रहना, और किसी और की बात में बोल उठना, वा कठोर शब्द बोलना यह सब मूर्खता के चिन्ह हैं ॥

(१४४) कहीं दङ्गा फसाद वा गाली गलोज होता हो तो उस को शान्ति करने की चेष्टा करो नहीं तो वहां न ठहरो कि कहीं गवाही में न धरे जावो ॥

(१४५) जहां बिना मार पीट अन्याय के बिना काम

चलता हो वहां यदि तुम प्यार और समझाने बुझाने से काम निकाल लो बड़े ही प्रशन्सा योग्य होगे ॥

(१४६) कुत्ते जो लड़ते हैं कैसे बुरे मालूम होते हैं जो मनुष्य होकर लड़ते झगड़ते हैं कुत्तों से भी निकृष्टतर हैं क्योंकि कुत्तों को बुद्धि नहीं होती ॥

(१४७) जितना रुपया व्यर्थ विवाह मृत्यु आदि कामों में खर्च करते हो यदि वही शिक्षा में लगावो तो देशको पूरा सभ्य बना दो और मूर्खता और दरिद्रता से बचालो ॥

(१४८) जब तक दोनों ओर बालकों को न सुन लो अपनी सम्मति प्रगट करके मूर्ख न बनो ॥

(१४९) अपने काम को अपने हाथ से करो, जो यह सम्भव न हो तो अपने सामने करावो, जो यह भी न हो सके तो किसी चतुर बुद्धिमान पर छोड़ दो और फिर उस को जांच आप स्वयं करो वा किसी पूरे विश्वास नयी सुजन से करावो ॥

(१५०) रोगी हो जावो तो अपना इलाज किसी पूरे अनुभव युक्त वैद्य से करावो चाहे वह देशी हो वा न हो परन्तु कभी किसी लोभी कच्चे से इलाज न करावो (ऐसे हकीमों की सेवा हमारे देश में बहुत अधिक हैं) नहीं तो शीघ्रही तुम अपने जीवन से हाथ धोवोगे ॥

प्रश्न जिन के उत्तर अपनी बुद्धि से सोच कर दो।

(१) यह सिद्ध करो कि जब तक हम पश्चमी विद्या न सीखेंगे असभ्य बने रहेंगे ॥

(१) पूर्वी साहित्य में ऐसे इतिहास भरे हुए हैं जिन का ठीक होना समझ और बुद्धि में नहीं आते ॥

(२) पश्चमी साहित्य में नई विद्यायें हैं जो अभी खोजकर निकाली गई हैं ॥

(२) केवल आरम्भ की थोड़ी शिक्षा प्राइमरी शिक्षा से हमारा पूरा काम न होगा ॥

(१) हमारी विद्वता न बढ़ेगी। (२) हम पूर्वजों के उद्यम से अनजान रह जावेंगे झूठे वहम विश्वास मिटाने के लिये प्राइमरी शिक्षा से कहां तक बढ़ कर हमें प्रयत्न करना चाहिये॥

(३) मिडल की परीक्षा में उत्तीर्ण होने से समाज का क्या अभिप्राय पूरा हो जाता है॥

(१) हमारी विद्वता प्राइमरी शिक्षा की अपेक्षा कुछ अधिक हो जावेगी। (२) तौ भी हम इतने पर भी कच्चे बने रहेंगे (३) उस शिक्षा के साथ यदि उस के अनुसार बर्ताव न सीखेंगे तो समाज का अभिप्राय पूरा न होगा ॥

(४) व्यतीत और वर्तमान की शिक्षा के भेद बताओ।

(१) देशी मकतबों और पाठशालाओं में कैसी शिक्षा होती है॥

(२) सरकारी मदरसों में कैसी शिक्षा होती है (३) जिस को दोनों में उत्तम समझते हो उस के लिये दृढ़ प्रमाण दो॥

(५) वर्तमान शिक्षा में तुम्हारी सम्मति में क्या दोष है।

(१) प्राइमरी शिक्षा में (२) मिडिल की शिक्षा में (३) इन दोषों को दूर करने के लिये तुम क्या उपाय सोचते हो॥

(६) हमारी विद्या सम्बन्धी शिक्षा किस भाषा में होनी उचित है॥

(१) सब से सरल द्वारा अपनी देशी भाषा है (२) संस्कृत अरबी, फारसी, उरदू, पंजाबी, हिन्दी में से तुम किस को देशी भाषा समझते हो, उस के प्रमाण भी साथ ही बतावो (३) क्या देशी पाठशालाओं में उन भाषाओं की शिक्षा लाभकारी हो सकती है जिस को सरकार अपनी भाषा समझ कर दफतरों में प्रचलित करे॥

(७) शिक्षा से निश्चिन्त होनेके उपरान्त तुम्हारा क्या विचार है, किस उद्यम को पसन्द करोगे और क्यों उन को दूसरों से उत्तमतर मानते हो॥

(८) उत्तम अक्षर लिखना सीखना भी बड़ा अच्छा गुण है।

(१) सब गुणों में पूर्ण लाभकारी है (२) उत्तम लेखक होने के लिये क्या यत्न करना चाहिये उत्तम लिखने के लाभ बतावो, वह गरीब के लिये जीवका का उत्तम उपाय और अमीर के लिये बहु मूल्य आभूषण हो जाता है ॥

(९) इतिहास और भूगोल विद्या ॥

(१) इन विद्याओं के पढ़ने की लाभ हानि बातावो (२) हम कहते हैं कि इन के पढ़ने से हमारी जानकारी बढ़ती है, तुम किस प्रकार इन को व्यर्थ सिद्ध कर सकते हो ॥

(१०) रेखा गणित और बीज गणित।

(१) दोनों के लाभ अलग २ बताओ साधारण व्यवहार में हम को इन से क्या सहायता मिल सती है ॥

(११) गणित और माप ॥

(१)हमारे सब व्यवहारों में इनकी आवश्यकता है (२) इन का अभ्यास हमें सचाई की ओर किस प्रकार खींच लेता है (३) बिना अभ्यास यह क्यों भूलता है ॥

(१२) सरकारी पाठशालाओं में धर्म और मत सम्बन्धी शिक्षा होना उचित है वा नहीं ॥

(१) हिन्दुस्तान में नाना मतों के लोग रहते हैं

(२) गवर्नमेंट से सब की इच्छा पूरी होना कठिन है (३) बुद्धि और विद्या की शिक्षा में धर्म की शिक्षा भी शामिल है (४) और यदि धर्मनीति की शिक्षा शामिल करना आवश्यक हो तो ऐसे धर्म सम्बधी सिद्धान्त सिखाना चाहिये जो सब मतोंमें शुद्ध और माननीय है ॥

(२३) कानून की शिक्षा साधारण रीति पर देना उचित है वा नहीं ॥

(१) हम कहते हैं कि न देनी चाहिये (२) तुम सिद्ध करो कि देनी चाहिये (३) हम कहते हैं कि इस का सीखना प्रजा का कर्तव्य है (४) तुम सिद्ध करो नहीं यह गवर्नमेंट का कर्तव्य है ॥

(१४) सिद्ध करो कि जो अपनी सहायता आप करता है ईश्वर भी उसको सहायता करता है ॥

(१) अपनी सहायता आप करने से मनुष्य विद्वान् होजाता है धनवान् होजाता है (२) सामर्थ और अधिकार को प्राप्त कर लेता है ॥

(१५) खेती, वणिज, शिल्पकारी, कारीगरी, नौकरी, भीख मांगना यह सब उद्यम हैं उनमें से तुम कौन सा पसन्द करते हो। एक को पसन्द करने और दूसरों को पसन्द न करने के प्रमाण बताओ ॥

(१६) इन्हीं लोगों के साथ कैसा सलूक करना चाहिये जमीदार, सर्व साधारण लोग, हाकिम और आधीन से कैसे बरताव करना चाहिये ॥

(१७) सैल्फ गवर्नमेन्ट अर्थात् आत्मशासन प्रणाली से हम को क्या २ लाभ होने की आशा है जो पहिले नहीं थे ॥

(१) अन्दर का प्रबन्ध (२) शिक्षा (३) सफाई और अरोग्यता की रक्षा (४) सबके आराम के काम ॥

(१८) अपनी उन्नति शारीरक और बुद्धि सम्बन्धी के लिये क्या उपाय है ॥

(१) सबसे बड़ा उपाय तो अपनी सहायता आप करना है, वह विद्या प्राप्त के हाथ में है (२) केवल पुस्तकें बिना उनको लिखी बातों के अनुसार व्यवहार करने के हमें कुछ लाभ नहीं पहुंचा सक्तीं इस का कारण बताओ ॥

(१९) सिद्ध करो कि उत्पत्ति से कोई बड़ा छोटा नहीं (१) कमोने इसको अपनीही करतूत बताते हैं और अपने उत्तम कर्मों का फल कहते हैं (२) यदि तुम नहीं मानते और भाग्य को मुख्य मानते हो तो प्रमाण दो ॥

(२०) भोजन के पदार्थ ॥

(१) शरीर की सामर्थ्य इससे होती है (२) अधिक भोजन आलसी और रोगी बना देता है (३) बराबर खाते रहना

पशुओंका काम है(४) भूखसे कम और समयपर भोजन करना आरोग्यता बढ़ाता है॥

(२१) वस्त्र॥

(१) कपड़ा देशी हो वा विलायती (२) तुम किस ढंग का कपड़ा पसन्द करते हो (३) किस हेतु करके तुम देशी कपड़े से ग्लानि करने लगे हो॥

(२२) सोना॥

(१) सिद्ध करो कि अधिक सोना आलस्यहै (२) न सोने से रोग उत्पन्न होते हैं (३) कितना सोना चाहियें॥

(२३) ऋतु॥

(१) कितनी ऋतु होती हैं (२) किस ऋतु को पसन्द करते हो (३) दूसरी ऋतुओं को क्यों न पसन्द करते हैं॥

(२४) समय का उलट फेर॥

(१) कभी रात, कभी दिन, कभी प्रातः, कभी संध्या (२) यदि वह एक प्रकार रहता, तो क्या हानि होती है॥

(३) तुम क्या उस को एक साथ रहना असम्भव मानते हो॥

(२५) व्यर्थ व्यय को कौन २ लोग पसन्द करते हैं

(१) जिन के हाथ में अधर्म से बहुत धन लग गया

हो (२) या पूर्व पुरुषों का धन पाया हो (३) वा जो पूरा मूर्ख और अदूरदर्शी हो ॥

(२६) दहेज में रुपये मांगने और विधवा विवाह के विषय तुम्हारी क्या सम्मति है ॥

(१) इस के लाभ (२) इसकी हानि (३) अन्तिम निर्णय।

(२७) बड़े बाप के बेटे को बड़ा समझते हो वा बड़ी योग्यता और सुशीलता रखने वाले को ?

(१) बाप अमीर था बेटा गरीब है (२) बाप गरीब था बेटा अमीर है (३) बाप मूर्ख निरक्षर था बेटा विद्वान् है। तुम किस को अच्छा जानते हो उस के प्रमाण दो ॥

(२८) अपनी जाति की कुरीतों को किस प्रकार सुधारोगे ?

(१) प्रथम आप उनको त्याग दोगे (२) वा जाति को बराबर उपदेश करते २ उस को सच्ची राह पर लाकर उनके साथ मिल जावोगे (३) दोनों में से किस को पसन्द करते हो ? इसका प्रमाण दो ॥

(२९) बैठे से बेगार भली ॥

(१) परिश्रम से मनुष्य तेज और चालाक बना रहता है। परिश्रम और तीव्रता से धनोपार्जन होता है जिस से संसार में प्रतिष्ठा और नाम प्राप्त होता है। (२) निकम्मा पन मनुष्य को दरिद्री बना देता है ॥

(३०) ईश्वर के सर्वव्यापी और सर्वज्ञ होने के प्रमाण दो ॥

(१) ईश्वर के विद्यमान होने के प्रमाण दो (२) ईश्वर हमारे पास विद्यमान है (३) ईश्वर हमारे सब काम देखता है ॥

(३१) क्रोध करना बुरी प्रकृति है ॥

(१) जो सुजन हैं वह क्रोध से ग्लानि करते हैं

(२) सिद्ध करो कि इस से प्रतिष्ठा जान माल सब को हानि पहुंचती है ॥

(३२) बुराई से बचना भी भलाई है ॥

सिद्ध करो झूठ, अधर्म, व्यभिचार, छल, कपट, ईर्षा, विश्वास घात, वैर घूस लेने से बचने वाला पूरा धार्मिक है ॥

(३३) मनुष्य किस प्रकार सब का प्यारा बन सक्ता है ? सब को एकदृष्टि देखने, उदारता, सच्चाई, नम्र शीलता, कोमलता, आदर करने को बान, सब पर दया वा सहानिभूति करने से ब्योरे वार सब बताओ ॥

(३४) वचन पूरा करना बड़ा उत्तम गुण है ॥

(१) वचन वह दो जो पूरा कर सको (२) जो प्रतिज्ञा कर चुके हो उस को पूरा करो (३) वचन पूरा न करने में निरादर और लज्जा होती है ॥

(३५) स्वभाव कैसा रखना उचित है ?

(१) बात २ में बदलना बुरा स्वभाव है (२) दृढ़ता रखना उत्तम गुण है। इन दोनों में से जिस को तुम पसन्द करते हो, प्रमाण सहित वर्णन करो ॥

(३६) सरकार अङ्गरेज़ के राज्य होने से देश को क्या २ लाभ हुए, और क्या २ प्रभाव उत्पन्न हुए ॥

(१) धर्म पर (२) नित्य की रहन पर (३) नीतिपर

(३७) अङ्गरेज़ी डाकखानों से प्रजा को क्या २ लाभहुए ॥

(१) प्रथम: यह प्रबंध हिन्दुस्तान में न था, सड़कें बे-ठीक थीं, हलकारा और समाचार ले जाने वाले नियत करने पड़ते थे जिस से अधिक व्यय होता और अधिक समय लगता था। अब बहुत कम सहज समय में और पैसे दो पैसे में वह काम हो जाता है, (२) मनी आडर, से विङ्गबैंक, चिट्ठी, रजिस्टरी, बीमा, पारसल, मूल्य चाहनेवाली पारसल का वर्णन करो ॥

(३८) बादल और बदली का वर्णन करो ॥

(१) बादल कैसे बनते हैं, (२) वर्षा कैसे होती है।

(३) ओले कैसे बन जाते हैं ॥

(३९) हवा और आंधी तोफान का वर्णन करो ॥

(१) हवा क्यों चलतीहै और उसकी दशा क्यों बदलती रहती है। (२) आंधी और बबूलों का कारण बताओ ॥

(४०) सूर्य और चंद्रमा से हमें क्या २ लाभ पहुंचते हैं ॥

(१) सूर्य्यके परिणाम और होनेकी आवश्यकता के लाभ बताओ (२) सूर्य्य और चंद्रमा के प्रकाश में क्या संबंध और भेद है। चंद्रमा की आवश्यकता को प्रमाण सहित बतलाओ ॥

(४१) छोटे भाई को एक चिठ्ठी लिखो जो मिडिल की परीक्षा देने को तैयार है ॥

(१) तैयार किस प्रकार करें (२) परीक्षा में जावें तो किन बातों की सावधानी करें॥

(४२) बेटे को एक पत्र लिखो जिस में अल्पव्यय करने का गुण और व्यर्थ व्यय करने के अवगुण वर्णन करो॥

(४३) पिता के नाम पत्र लिखो जिस में अपने पढ़ने में लगे रहने और बोर्डिंग हौस में रहने का वर्णन करो ॥

(४४) गुरु ने जो तुम्हारे विद्यार्थी होने के समय उपदेश किये थे वह कौन २ हैं, उनके अनुसार तुमने बर्ताव किस प्रकार किया सब का नाम लिया था थोड़ों का। एक पत्र लिखा कर अपने गुरुको विश्वास कराओ कि मैं आप के उपदेशोंके अनुसार व्यवहार करता हूं॥

(४५) तुम नौकरी चाहते हो तो एक निवेदन पत्र ऐसा काम पाने के लिये लिखो जिस के लिये तुम प्रार्थना करते हो। उस में सादर अपनी योग्यता और पाने के अधिकार होना वर्णन करो।

सूचीपत्र

सं०	विषय	पृष्ठसे पृष्ठतक